मातावनि।

मछायूर्ण मञ्जात्वद वर्गागत्वाम्च हिक अर्थ माजा**हत्व रच अर्थाछ** स्थि इत्याद काल करे शृथियोगा क्षित्र : भा किलान मा गडाई मंदा: পরাক্রান্ত ভূপতি ছিলেন 🦿 অন্তর ক্রমশং অদর্গ সধ্যে হেন্তক ক্রণাধী শ্ব সভাের শেষাবধি জ একলৈ পণ্ড অধ্য নিৰ বণ ও ধৰ্ম সংস্থা পান এবং কাচ্ মক্তানে পরিত্রাণ ও ব্যুস্ট গুরু পরিরক্ষণার্থ রাজত্ব পদে লাগ বিশেষে প্রক্ষাবিশেষকে নিয়োজন করিতেছেন, যে, পুনুক वरु सिनि विश्वान करहन लाग् छ६ वर्ष्ट् क नाम विकामि कार्योख উঁহেরেই খাকে। এ আন্টার নির্ম্বান নর্ত্তা পরনেশ্বর তিনি শ্বনির্মিত भूष्य वाश्यक प्रामनिक्य करवम नाई अडबद मिछा सद्याधिकात्रि জানীশেক্তামুখারে এখন খিনি আপেতির চেদ প্রচিত্তিক হয়েন তর্থন তাঁহার ইছা অগ্রাক্তপে অন্টান করিবা যে রাজধর্মানুসার্ব পূর্বক ছব্ট প্রমন, শিষ্টপালন, গুলাগণ হটতে নিয়মিত কর গ্রহণাশি ব্যাপারে মনোভিনিবেশ করেন বিশেষতঃ অজুনের প্রতিভগবারের উक्षि आह्य एए 'अहिजानाम माधुनार विकासाम म क्कृ खार। बंध रा कार्या । योष राष्ट्रवर्षि चूर्ता २ ॥ व्यर्थाय मापूनवराक्षत्र अतिक्रेक् °ও ছ্রুফ্রিলবের বিনাশ ও নিতা সত খ্যুক্তর সংস্থাপন্থে **আদিই** मुख्या अन्य अन्त कतिया विश्वताका परितरण वन काता **छर अनुबन्ध** ইদানী ভূপবৃদ্দ প্রতি দেব, ধল্মরাজ, গণ্য প্রভৃতি প্রয়োশ হইলা খাক। অপিচ ছুরবগাহ তপঃদাধন ব্যতিরেজক অপুরিত্ত বহু ।

14

क्षिण्य स्थान मा । श्राचन स्थान स्थान स्थान स्थान । विवाहिंगांबाद पुक्तांकातात नाम स्र्याञ्खालय वरनीय <u>কটু ৮ৰ্ডৱাম !'ভবিক্ত হটয়। তত প্ৰভৃতি অতি বিক্তীৰ্ণ</u> ক্রিক্রার্টির এটোর ও ম সকলেই সস্থার, নৃষ্ঠ্যার্ছিত, महीक्रिकणी, महानीन, मश्कर्यनाजी क्षक उरमर्बन कर्छः বিষয়ে বিষয়াস্থল হি ইয়া সদা শাস্ত্রাত ভিলাত হ'ল। সংপেন করিয়া विद्रालन । अस्म खत एयन अडे मिलिनी काल क्राय क्रमणः गराकन्य जुक 🚁 করাল কাল কবলে গ্রিডা সৌতে লাগিল তথন সভা দূরগত ও ু ক্লাকুরপণ ডপ্সা থিও,চাড ও জৈণ্ডাদি নানা লোষোধিত ও লোক সকল ুলু**র্মহত** বিগ্রস্ত তুভিতা হইলেন এবং পৃথীপালেরা পরকার দেয়তে ্লিলে প্ৰযুক্ত বুছা বিগ্ৰহাদি যায়। হীনণীয়াঁ ও চুনীভিবশল হইলে পুঞ্ধ অন্যানা দেশ হইতে ছড় হি খীনাচার ব্যনাদি জাতিক। খুনল ্ৰিপ্ৰয়েশৰে ৰীৱাভাগা বহুলবাগিগতি চইয়া হিন্দুধৰ্ম বিনাশেই তৎপৱ हें - **इंडेरजन । जानतरू** वृद्ध भवनात्म सूर्योग्सम् त्राम इहेज ७ हम्बराणव ্লি 🗷 ঔরুদপু,জর উপরতি হইলে চন্দুব শৌষ (১ লাছ সহা: ,দর প্রীজন্ত্র হুইল, ঐ ছালরযুগের পর্যাৎসানে হজিনাথিপতি সাত্তমূর পূল বিচিত্র ্**ৰীৰ্য্য লামক চন্দুৰংশী**য় হাবে তেওয়া অভ্যন্ত স্ত্ৰীৰছে।পাসভা হেন্তক স**ন্ম** ক্রাধান্তানন্তর কুতান্তালয়ে গমন করিলেন, ওঁহোর অপতারাহিত্য বিৰত সাম্ভত্ত বেকাস আপন মান কৰি অভুজাতুসারে ক্রিত্রধীর্ঘার ক্ষত্রে পুতরাশু পাঞ্জ বেলর নামে পুত্ররায়াংপাদন ्रितिस्मान, रूपारक्षा श्रीपुत त कार ्राह्मण श्रदेल। श्रुटताकु कारण्याः ক্ৰিমিডক রাজবুকর সমর্থ দিশাবে স্থীবপুত্র চুকোধনকে রাজ্যাতিষিক অবেশুলাপুরাজা একিক বলরামের পিতৃঃযুগ্ন অগচ বস্থদেবের ভণিনী ্ত্রিবাহি ক্রেন ইনে পুথানা রাজনহিনী ছিলেন। এবং সাজী নাৰী ক্লা এক স্ত্ৰীও ছিল। পাও শাপাভিভূত হটয়া স্ত্ৰানয়োগ শক্তি

भौत्रावनि ।

विशेन इंटरन कुछी नाजी हुई ब्रांनी बीच चापित अक्रियर सर्वार्क निगरक आञ्चान श्रम्भक शक्तभूक समाहेत्तन, वथा क्योत मर्ट वर्षी... বায়ু, ইজ্রের ঔরবে ক্রমশং বুধিছির, ভীম, অজুন নামে ভিম প্রঞা हरेन आह नाखीह शर्छ अधिनीक्मारहत खेवरन यमक मृष्टे पृक्ष नक्नाही সহদেব জন্মিল। এইরাপে পাওুরাজ নিরপত্য চইগা শ**ঞ্চ ক্ষেত্র পুত্র** প্রাত হইলেন. विश्व भुखर्शीय समाम हहेगाव वाहात आको मधी मांदी পতিব্ৰতা গান্ধারীর গর্ভে দুর্ব্যোধন দুংশাসন প্রাকৃতি একশত পুরোহ পাদন ক্ষ্মিরেন তাঁহারা দকলেই মহাবল পরাক্রান্ত হইলেন। অন্ নুর পাও নূপতি স্বর্গারত হইলে ধৃতরাই, মুখি চলকে অতান্ত ধার্সিক देशील बुडिं। नर्काश्चनवृद्ध ७ गर्स लाश्चान्त्रद्ध अवर मकन श्राप नक्षर्यः कांख मन्दर्भन भूर्यक श्रीप्र मंख चलला मरजुल के हारकरे रिखनी, পুরের রাজপদে নিযুক্ত কবিলেন। কুরুবংশীর <mark>শান্তহার পুত্র বিচিত্</mark>ত বীর্যা, কাশী রাজার অধিকা, অবালিকা নানী দুই কনাকে বিলাল করেল। তাঁহার পরলোক গমনের পরে বেদ্বা<mark>দের ঔরন</mark>ে অধিনার গর্ভে গৃতরাই ও অশ্বালিকার গর্ভে পাওুর জন্ম হয়। এবং ব্যাদের উরদে শূক্তার গভে বিদুরের ক্ষম হয় : যদ্যপিও ব্রাক্ষা দুর্ঘোধন নিজ হিংসক ও জুরভা অভাবে বিরক্ত ছইলেন বটে তথালি ভীনাৰ নের অত্যাপঃক্রম এ শোর্য্য বীর্য্য গান্তীর্যাতা ও রণদক্ষা এবং আনু শিক্ষার নৈপুণাতা সমরণকরিয়া তৎকালীন জ্ঞাতিছিংলায় অবর্ত্ত নাহইনী স্তর্কীভূত রহিলেন। ধর্মপুত্র যুখি ঠিঃ এডজ্রণে ভূপতি পদাভিবিত্ত হইয়া ভাষ প্রভৃতি ও দুর্য্বোধনাদির জাভূপণ সহ বৈদ্যতে৷ ৭৬ वर्ष यावर छेलमञ्जल ताका लालन कतिया किर्मन , अनम्भूर काछि বিরোধে পাণ্ডবর্গণ স্থরাক্ষা পরিত্যাগ পূর্বক সিল্পু ক্রীয় ভট্টুইনেশ জ जनाना चारन गतिजुर्ग करतम। वे नगरत वहनशासुन गेक्सेनास পতি क्रांशन कता त्वीभनीत चप्रवृत्त कात्व चनामा कृत्विका कीश्टक

িবিবাহারে কান্সীল নগরে গ্রন করিতেছিলেন তখন পাঞ্ সন্তানেরাও भेडिन विक्रा एरवेन अदर उन्हारना खर्ज्जून ककीव मार्च वीर्या ममञ्जूनकाला বিশাস করেন অর্থাৎ উর্দ্ধেতে সক্ষ্য, ও তদখোভাগে এক যন্ত্র তদ্ধ 🛤 ডিক ডি ছিছাৰার। আৰু নের স্পাণিত পর উর্দ্ধৃতিত লক্ষ্য তেদ ্বীরিরাছিল অভএব তিনি বিচিত্র শ্রাসনাকর্যণ প্রংসর লক্ষ্য বিদ্ধ ুঁও ভূতকে পত্তিও করিয়া সমধেত রাজগণ সমকে জৌপদীকে চরণ পূর্কক আমরন করাতেই তাঁহার বীরত্ব পূথিবী মধ্যে দেদীপামান হিইল পরে কুন্তীর বাক্যানুসারে যুখিছিলানি পঞ্পাঞ্বের ভার্যাত্তরেশ ৃ**র্জেণিদী গৃহীতা হউলেন। কি**য়ং কালাভাগে রাজা ধৃতর্ভি পাঞ্ খুঁজ গণের সহিত প্রীয় পুতাদির পরস্পর সিটোম সঞ্চনার্থে পুনরাজা [া]লি পুর্বাক রাজ্য বিভাগ করিয়া দিলেন : ভাষাতে জরোজন কজিনার , ब्रांका हरेरनम अवर हिन्सात किथिए एउन हेस अरु वाका गुरि केन ব্লাক্তানী করও দুীয়বাছবলে ঐপর্যাশালী ও সংশাভিত করিলেন : ্পাঞ্জেরা নিশ্বিল বেদও বিবিধ শাস্ত্রাধায়ন ও ধর্ম পর্যাবলয়ী ও সভা বাৰী কিতেজিয় ও সদুপদেশক খুইয়া শারীরিক স্থাসুজ্ল সদ্বোগ করত সম্বাচারে সম্বাবহারে চন্দ্রাকে ক জলা স্থানির্মলান দক্ষোতি দিন্ত ভীৰাব্দৰ চিভোপরি বিকীৰ্ণ চউতে লাগিল, সম্পন্ন লোক মুধিভিবেব সন্তাতার, ভীমের ধৈর্ঘ্য, অজ্নের মেলফুত্ত কিছির ত শ. বিক্রম, লকুণ্ **সহত্যের প্রকতিতি ক্যা বিনয় দর্শনে পর্ব সভেতি গাও চ্ইত্র**: ছিল। রাজা বৃথিতির কৃষ্ণের সমস্ত্রণায় এবং ভীনাজ নৈর বাচবলে দ্বনধাৰিপতি বল গর্জিত করাসজ রাজার ও শিশুপালের বঁধ সম্পন্ন কুরত আহলান দকিবা এবানাদি স্থাতি সম্প্র রাজসূত্র মহাযক্ত ক্রিক্তি করিলেন। পাওবের। র'লাভ প্রাত হইয়াইজ ক্ষু ক্ষাল্য করেন তল্পোরাজস্থ বজকরণই মুখ্য হিছাহে ভাষা সঞ্চালনে বিস্তাৱিত ব্যক্ত আছে এবং তদ্ম

į

चक्राधीन जीनामित प्रिविक्यस्य नांडी ७ ठात्रजनवीत नीना विभूतनम्ब र्वि इहेटल कर शहन अवर जारकाणिक लीहारमंत्र व्यवसा ताक्षवर्गात শাসন ইত্যাদি কলোর দার৷ মুধিতির সল, ধাল, প্রভাপে সকল রাজত্ত প্রেপান তইয়া মধারাজাধির। স রাজচক্রবর্ত্তি পদাভি**ষ্ক্ত হইকেন**। এ র'জসূয় শতানুঠানে পাওদদিনের জাতিবর্গ আন্তরিক ঈর্ঘা সত্তেও তহিংতে সক্ষত হটকেন ৷ পরে জিকুক এবিধ্যে মহাজামোদ একাল পুন্দিক অসমতি দিলে মধাবাজ ম্পিতির সহচেবাক মজালোকার ভাত্তা গুৰান ক্রিবেন সূত্র নতুল কাটি বান্ধবাদির **কাক্**যে निगल्धार्थ ध्यम द निष्यम आदश सम्मास्त्रक राजनाम्बं निम्नः भारती नुक अधिक विकेश मुधित बादिसर संविध्याना িশে। কার্যা ভার নিলেন। বুংশাসন ভক্ষা একের অধিকারী ও ভীমা জোণ পামালতে চল বিষণের গুড়াকুও প্রধানের নির্দিত্ত नियुक्त ठेडेटमन । अप्रश्नामा वृक्ति निर्मात प्राप्तानीय । मञ्जूप द्रारू ৰাপৰি সম্পাদন কলেও, এপাচাৰ্য্য ভিৱলালৈ তিনিপ চল্লের রক্ষণেও एक्किर (मा८०) किया राज (देवर या ५) ध्वादि कार्य। इस मोमी क्रिश्नाम**ीक** क्षारकत १८०० एकहात एस ५००० **हे**कमा विश्वलाह खाकां**वा**ज নিয়াক হই 🐃 াহলীকাসিগাত এক নৃগ্ৰিটিল র**থ আনিলেন** কাসেলে ভূপতি জেভকাতি ব 🖺 জীয় ও প্ৰোক্তন্য বহিন্দাৰ, স্থানীৰ 🕺 রথের মত্রহাঁ অর্থাৎ অধঃস্থিত কাস[†]াতুরণ করিলেন। **চেদি দেশাঁহি** প্তি প্রু নলিন্ দেশবিপ্তি উরম্ভুদ, মাণ্ডেশ্বর উষ্টা**য় ও মাল্য**ি আনিখন করিলেন। প্র্-∳ বাজহন্তি, মংন্যাধিপ**তি শক্ট** এঁ**ক্ষাব্য**্ঞি ष्ठिलांनर, खनश्चीयत चांछ:वैकन''न आनशन कक्षिणन। क्रिकेस्ट, छुनी - काणीतांक ध्रष्ट्र, महाधिशित जना ध्रुस आहरून केतिरेन्स क्षेत्र यष्ट्वरणीय त्राका मार्जाक स्य मान्य क सीमार्कत् वासन् मेर नक्त नदरभव छोगत छोलनो कतिएलन।

मात्राविता।

वृधिकित्वत ताकस्य यक्ता

🎮 🍇 শৃথান্থিতবারি সেচন পূর্বক বৃধিষ্ঠিরের অভিবেক কর্ম সম্পন্ন कृतिहुनन, अवर वाम महकात क्षीरमात अल्लाक किएनक कर्रानत **উল্লেখ আছে: এখজে** খেদবাসে বয়ং বুক্ষাও তদিয়া পৌলও बौक्यवन्दामि अधुपुरे ७ हार्डकर्मामि मन्त्रवार्थ नियुक्त हिल्लन। কাছোক ভূপতি বিভালের ও গুহাবালি লাচ্ড লোমকাত দর্শালকৃত व**ञ्च अर्थाः भाग, किःशांभ. এदः উ**लागाञ्चम एपं उल्पेशत निरमन। অন্যাপিও আফগানভানে ব্র'দ নামে অতি দীর্ঘলোয়ণ বিভাল দৃষ্টি হয়। এবং তিভিরভূগা বিচিত্র ও গুরুপকি নাসিকা সম'নাসিকা ' बुक बर्च ଓ हुकेपूके लेखे अवाभी वर्षाय द्यानेकी वा नर्माली प्रकल প্রদান করিলেন শা মরুক্ত নিবাসি লোকেরা গাড়ার দেশ ক্ষাড় वार्ताः वानित्वन । जिल्लामे अपरक अभूत जीवन देवताम श्रीतम, এবং আতীর বা (মাহির ৮ সার্বিটো ও কিছৰ জালীয় লোক विविध हज्जाबहर भूकंड अध्यक्त कारण । नहां लब्दार है है र ४४४ রাট্) দেশীয় লোকেরা ছাগ মেল গো, গর্মন্ত, উট্টু সূর্ব পর্যাধ্য ও বিৰিধ কলন ইপছার দিলেক। প্রাগ্রেলাতিস কামরুপের) জেক্ষরীকা ভ্রমতে বর্ণন নকে বেগৰান্ আকানেয় ; অস্ব কৌহভাও ও विकास भवार विवाद सक्ष्युक बाव्हा नियस कविरामन । इति स्रोटन व सुकी १८४५ ্**ওক্সস্নহী সমীপত্ শকে**রা ও ভোখাবি স্থানের লোক দেশরেগণ ও

[়] *** অন্ত**ন্মানতং ৰোধারার দক্ষিণাংশ পা**ং**রংগানৰ পঞ্চাল ও জন্মত ও ভূনিকে কা**ছোলের নিবাস ছিল এবং** উঞ্**পশ**্সিও জন্যাদিও ডলায় ু**স্থান**।

^{ু +} **জীংট কেলায় যে,৩ কন**লা সমু প্রভয়ায় ত লশ ভগায় কোন কু**লজ মুধু পতিয়া ঘাই**ও।

१ । अपने विश्वपत्ति अपन

माद्रीयणि ।

কয়াদি অপরাপর পর্যাতীয় লোকের। মনোহর লোমক, কটিজ, পর্যক, मुश्रामंत्रक वद वर्ष रक्षीयन स्मयानीक बद्ध अ मीर्च थएना, क्यि, मुक्ति, ज भक्तिम . मरणोस्ट्रेक भव सु अवश विविध द्रभ भक्त, तज्ज. मिग्राहिक : দেশাধিপতি 'নুপ'ভিগণ বৃহৎ ৃহন্ত্যিও **অম্ব ও অ**পন্যা**প্ত ভ্ৰণ্** ও ৰছ াৰ্জ প্ৰিন্তু, সূত্ৰ প্ৰাঞ্জনময় চিত্ৰিত ও গল্পদন্তময় হান ও শ্বা বিচিত্ৰ বৰা, বিশ্ব জন্ত, বিনীত জন্মধোজিত এবং ৰাজ্ৰচৰ্ম পৰিবাৰিত ७ मुंबर विश्व तामादिश्वेष के शिक्ति अधिश्वाम अर्था**र असल्छेड् किन्न** ক্ষণ ৮০ বৰ্ণ প্ৰয়ুত্ৰ প্ৰকৃতি আই অন্যান পুঞ্চক **সত্ত সমূলে প্ৰাৰেশ** किं कि । े के शूर्क भग जात उपयोख्य अर्थि हहे एक यू**र्थिक दाव प्राथ** र्वभी हे है शास वर्षा अवित अहिन किसार भून किनवर्षि कानी उ মগহ ে গ্রার বাধালার শিল্পি লোকেরাও রাহা প্রস্তুত করিছে পারিত্র সম্পৃতিত ত্রিপুরার রাজার রাজমন্দিরে হন্তি «ত্রারা **লালা একার** বিচিত্র অংশ্যর আসন সাক্ষি এগদি প্রাস্তুত হাইয়া পাকে ও অতি অদীয र्हो ७ ७ अ इम्र ६४९ डीशाता आत्र ७ गाउन करतम् स्व बा**ला युधिष्ठे** রের রাজস্থা মক্ষকাতে সন্ধাশহে ন্যাগত ইইয়াছিলেন **এপ্রযুক্ত নহা** রাজার আক্রান্থয়ারে যজ্ঞানীয় উদ্ভিট ভুক্তাবশেষ স্থান সন্মার্ক্তন করাতে যুধিভির সম্ভট হইয়া ভাঁছালিভেড পুর্বাপুরুষকে সিংহাস্ত ও ধবল ছত্র প্রদান করিয়াছিলেন তারা অদ্যা**পি ত্রিপুরাধিপঞ্জি**্র প্রীযক্ত মহারাজ ঈশানচন্দ্র মারেশ্য বাহাছরের পৃহ**ন্ধিত আছে এবং** রংজ্ঞান অভিবেক কালীন সেই বিংহাসনোপবি**উ ও ধবল ছত্র খারণ** কার্ডাছিলেল। ওদৰ্ধি ই<u>ই</u>ার রাজত্ব মধ্যে কেছু, খেত দ্বুল ধারণ্ করিতে পাজেন না। তাঁছারা <mark>চন্দ্রবংশীয় নূপতি ও যুক্তর্ভিচুরর জ্ঞাতিত্</mark> काश आहीतम् निर्माणार्थं वर्षमधिक आहर् आनकः विवस अहर করিয়া থাকেন :।

प्रक्र, मन्द्रत शर्काछन मधावर्**ड एएटम रेनरणामा नरीजीहरू** स्थान

नातावनि ।

्र <mark>क्लिक की</mark>हरू विश्व बदबांतम श्रीया गिवन करत योश्वितत नाम चन्द्र একাদন, অই, প্রদর,পারদ, কুলিন্দ ভাঁছারা গৈপীলিত সংবর্ণ আনিয়া ছিলেন, পিণীলিকার ছারা এই স্বর্ডিদ্ধ্ত হয় । এবং শুক্ল চামত ও ্রুষ্ঠপুত্ত যুক্ত চামর, কৌলেমগু উপ্রহার দিলেন। এই ানস্ত জব। হিমালয় ও তির্বতের মধ্যে জ্যো। চমর নামক গরুর পুচ্ছলোমে চামর হয়। একধা পিজলবর্গ দক্ষিকবে নাম করে: তন্দার। উৎপন্ন মধ্র ফাল ক্লী#় বিদ্যালনে পুল ভাগত কে হৈ না শানু প্রপ্রান্তানর তীরবার্ত্তি) स्वीत्यत थ विता शक्ति करा राज्यात क्यात्वा सामाधिक प्रकार ता. **বিচিত্র পশুপক্ষি চন্দাদি দিব**াই উল্লেখ আছে , কল, জুনুন, কালিক দেশাম লোকদিগের দীর্ঘন্ত ও চিত্র সঞ্চাব্ত হস্তী এবহু চোল ও প্ৰিটোদিংগার মলম ও দদ্ধ । পাইতেঘাত চন্দ্ৰ ও অংগত, সূৰ্ . सुम्बरुद्ध, मनिवास, १८८ - किरुपार शिलाग १००० । स्वास्तुरामा एव े দুর্মাদণি মুক্তাভার ও হক্তী কুণ আহবদের আখ্যান আছে। উপ साम् अधिक इर्दिश्यम् नाम १९९८ तमालाग्यः । १ किलान् रहेश्री केरस्य ं**गरेहचूर्या प्रशंका की हो**ई अञ्चलकहरून आहाक कियो। य स्वय केंग्रेस अ **ছটল: ডিনি ময় দ**ল্লৰ নিমিতি গ্লেম্প্ৰান্তৰ লাল্ডৰ সভা সকলেন পূর্বক নিউল্লিডাপিত হট্যাল দ্বানেষ্টা প্রভাবে এমবলতে স্থালিত ু**শতি ও ভৰকালে** জীন জীককা সমক্ষে তুঁছিত্বক প্ৰয়োগ লোকের নাগে **উপতাস করাতে ছবেণিধন অ**শেণ্রিধ ভোটাত্র নানগ্রত সম্প্রাহট সাঞ্জানের বিপ্রকৃষ্টভার দিনেত বিবর্ণ ও কৃশ ছউতে লাগিলেন. ু**পুর্ত্ত ক্রংসল প্**তরা**ই**নু পূচের দনঃপীড়ার বিষয় জ্ঞাতহ**ই**য়। *দূ*।১ফীড়রে

क्रिक्ट का का का स्थाप स्थाप

[্]রিক্রিছ মতে হিমালয় ওকিউন্দুল পীস চাত্তর্কার্তি স্থানে এই স্বর্গেড় সাদক দেশ এবং তাহা মহাভারতে জনসক ও মন্দ্রের দধ্যবর্তি স্থান তেওঁ বটে।

मानुवनि

अनकावित्यम साहारत कुथ क्रमे क अमन्त्री हहेगां विवाद अध्यात চেটা করিলেন না বরক্ষ পাঞ্চি ক্রতি তাত্তি স্বাধ্য ক্রীইভি মহা করিলেন, যেতেতু বিহর ভীষা, ডোপ ও কৃপাচার্বোর অনভিমতে আয়ুক্ত সেই ত্রুল পুরেই ক্রিয় কুলপুণ্দ ২০০ কিবার অভিপ্রেড ছিল ি শেলার বিশেষ করেও এই যে দুর্গালেনারি সর্বানা ক্রোধ পরতার ও अक, वृक्ष ब्लाटकर वाटकारियका कार्राटक। परशीपन कृतिय कृति শ্র প্রহণ্ করিয়া ও সুদ্ধে পাণ্যদিগকে ক্ষয় করিছে ক্ষণকু ও পাণ্ডয রাজগন্ধী আহাদাৎ করিবার বিষয়ে হতেখনাত হইয়া থাকাই রা ংক নহিভে পরামশ[্]ূর্য়ক কপট লাভ জীয়ার শন্ত্রন্থ করিছ। ছিতীয়া বরে পীশ কাঁচ্চ কেড ১৫ ৭ পুল প্রতিজ্ঞা বিশব শনিই না কটনা বরং পতরতে টুড় প্রথমতায় পুনরংগর,জ্বা প্রাক্তি পুর্বাদ পার্যাল विज्ञी व्यक्तप्रांनीपार १५ (शहर के देन १ ५) हद भूदर्<mark>याधिक शास्त्र भाष्</mark>य. लाका अमा विकास शिकाना कीव वृद्धि क्रमूलकरकर शूनका विकास তেতীয়ে প্রবাদ ক্রিকে ক্রিক প্রাতির ক্ষরার প্রাভিত হইয়াও পোরতর দুগাত এছে য করিয়াও সচেতন ও স্কুর্দ্ধি ছেইলেন নি एर अर्फ माम्भवमं रुर्रा ३ एकवमं सञ्चाख्याम अरू सस्तीय वारमत वर्षमरशासाम शाम ध्वकामा कड़ेर इ भूनेका क मानेन व व्यक्तरह থানিতে হইবেক এই প্রতিজ। স্বীকার পূর্বক শক্তন রচিত জাশকী ड़ार भूमः १ताबिक सरेगा पृथितित काकृ शव ७ भन्नीमई नहा पूर्विक ভোগ করিতে এর্গক্ষেন।

युधिकित मुनोरक खालाबरलंत रवन ।

অভ্যান দুটোর দুটা বিশিষ্ট পিছ লোক কুনুকু ক্ষ্ম নিট কুনুকু না ভাষা ব্যক্তির বাক আছে। বাকা দুয়ুটাবের দুই কোষ্ট্র কুন্ লোডা, নানী কলভাই, নির্মান্ত সূত্য পক্ত, বহাপাপুকারী, ভাষার কুন্তি হারা ও ওাহার আলমন্ত্রী অরিক দুক্ষী পাপিঞ্জাক

भारापंति ।

क्रिये ने ठेडा बाह्य क्यांवेड अनावड स्ट्रावड महाड भाकु महाद्रावत्र। विकासि किर्मिक एरेश पानम वर्ष शतिमाल चहरमा महत करेरनम ভাৰুত্তৰ অক্ষাবৃদ্দ চতুদ্দিকে রাজা তালানতর ছিল ভিন্ন ছইজেন 'ধৰ্ণ হৈছিল দল্জী পক্তি, রাজা প্রেয়াখন, তথায় সাধু সঞ্জন ক্লীপি,বাস ক্রিতে পারেন না বিশেষতঃ পাণিঠ রাজা হইতে প্রজার ্ছৰ ও আত্ম কুলধৰ্ম পুণাৰ্ক্মাদি সামুদাছিক নাই হয় স্থভরাং প্রকা বিশ পর্যাল ক্ষিটিরের অর্ণ্য গ্রনকালীন খেদপূর্বক কৃতাঞ্চলি ইইয়া স্থিনত্তে ক্রিডে লাগিলেন, হে রাজনু ' অব্যুল্টিকে পরিত্যার পূৰ্মক ৰে স্থানে ফাইবেল, আমরাও তথায় ছছিব, যেহেত্তক কৌরব इनता माना मर्समृक्ती इहेन, ७९ अयुक्त मृत्र मूप्त मूप्त इहेशा छव শিক্ষিত্র আগত হইলাম, যাহার দর্শনে, আসনে শরুরে, পাপক্ষার্শ প্রতীত ধর্ম সঞ্চার হয় না ও যাহার রাজত্বে প্রকা নিজ্যীতন ও পর দর্মনু ইয়ণ ও বাহার কিলিব সুরূপ তপনের আবর্ডর কর আবারণ 🏙 রেজ্যনা সমস্ত ব্যক্তিই উদালিত ৮ ইতে লাগিল তাহার রাজ্যাধি **উদ্ধান প্রধান পরি ক্রামান ক্রি ক্রিকানে কেইই সক্ত হট** दिक्क मा दक्कमा लालित मर्गर्स भारत्वर दृष्टि एव ७ भूगावात्वत भरवृत्ति स्राम अवसादि भुगारिभाकति २ छेड़ शास्त्र अवर त्राकात भान **ত্তিৰে একার কথনই অব্যাহ**তি চয় ন' অতএব সকল সদ্যুধাঞ্জয় যে আপৃষ্টি অঞ্চে আপুনারই শরণাগত হইলাফ কথাযোগ্য বিধানে এ ৰ্ভীন্তিগতে সন্ধাপৰ হইতে মৃক্ত কল্প। ইতালি কল্পার্গাভি कि विष्यांक्रिए द्रीया वृथिकित अकार्य महाबाद शीरूव महन ৯১ককৃত বিভরণ করিছত লাগিলেন, ছে প্রভাগণ ভোলাখিলের প্রিয় ক্ষা এবণতে নিভার সভত হইলাব। বেচেত্তক অপালাবির ভাব बिहु छ इरेश निविष्णः नहिलान भूक्ष ऋत्व सूची, हम्स्य हुन्थी, মিমেহিউ; বনশান কমিডা, ডৎনমুদার সরণ পুথক নত্যভি লিডান্ড

कोच ७ (कार्ठकांक वृज्यांके, गांका क्वीरमनी देवांडा अवांत किर्यंत জন্য সর্বলা শোক বোহে পরিডাপিড আহ্রেম অন্তর্নই স্থানীলৈ चान भूतः नतः जांदात्रिभारक भारत गरप्र भरतकत केन्ने । कुछी छ बाजी अत्रम अविकाताना कविमात्मत बाज्यमन्दिक देवेश ब्यालयमिनाक । লালন পালন করিয়াভিলেন, কিছুকাল পরে খবিগণ সেই বুল্লাড়ারি বেলধারি শান্ত্রক্ত গুণ সম্পন্ন রাজকুমারদিগকে রাজধ ।ীতে ধৃতর্ত্তী ট্রা দির নিক^{্ষাত্র} অনিয়ন করিলেন এবং ইহাঁরা পাণ্ডুপু**ল্র ভোষারদিনে**র भूख, द्वाका, रेरण), छङ्ग् देश शामभा लढितम् कित्रा क्षाम क्रिक्स जरमरवान अन्य महामात्र कोत्रव अ स्नीन धर्म शतासन शूरवानित्रक ্টি ও মহাকোলাহল করিতে লাগিল। কেই ২ পাও পুরু নহে ুখ। বলিয়া কৃতক করিতে লাগিল কিন্তু সর্বত্তই পাঞ্চরেরদের কুশল বার্ডা জিক্ষানিত হইন পরে ধৃতরাস্ট্রাদির সেহে তাঁহায়াছিন ২ বঙ্কি रुदेख मानित्मन । अन्द भृजताकोषित अन्यताम **पार्य** तामन आक्ष ÷सत्र मिन, कंश्वेन, त्रजू, त्री, रखी, जाब, त्रवावि, विविध केंच्योविक ৰ্ইয়াও পৌর**জন সাহিত্য নিভ্য নিভ্যানক্ষোৎসৰে কাল্যাপন করিছে**ু नाभित्तन । किन्न पूर्वाधिन धर्म विकाशक धर्माखिक अमर्थवन्त्रक्षेत्र হইয়া পাশকীড়া রূপ প্রতারণা উপস্থিত করিয়া পাশুবলিবের নক্ষে করিল স্বতরাং যুধিছিরের অভিভংগই ফোষ্ঠ ভক্তি পরতক্ত্রতা আর আশেষ ক্লেশ সহিষ্ণুধৰ্মশীল ভীথানিরও বন প্রস্থান করিছে এই **५७७व। स्थानाम्बद्धर मृत्यर मृत्यमानस्वर स्थर। स्था**रक मञ्चावार ककवर शतिवर्खकः। व्यांदर मृश्यमांश्वक मृतवाशरमहरू क्षर। न निषार महारक्ष्मियर न निषार सफरक क्षर । हेक्कि শান্তিপর্বাবি। এইসংগাপুরিভিয়ালির বনবাস ছইলে কেবল ভুর্নোন ১७ करप्राप्तन वर्ष ब्राका रकाम करतन देखि।

देखि मात्रायकार अथमः शतिरंक्षणः।

Anna.

অধ কিউনে পরিক্ষেত্র।

্ বুথিতির ধর্মনক লহাবৃক্ষ, অর্জুন ভাহার**ু কল্প,** ভীমসেন লাখা ৰাজীপ্তত নকুও সহমেৰ শ্লং ও কল, ভুষা বেদ ও ব্ৰাক্ষণগৰ ভাষার জিক্ত শর্ম পরায়ণ বুধিন্তির দুই মক্সি শক্ত্নির প্রবঞ্চনতে अभिके दिक्षांत्र भन्नाष्टिक स्टेश भूक श्रीकका भागनार्थः वामगवर्ध वन बान स अकवर्य बाब्धांठ वांग क्या बाश्यत जाउनन अतर द्वांभक्रीनर সমূহ চুম্প সৰ্ক্তেশি ও মনস্তাপ ও অংশ: মন্ত্ৰণা ভোগাৰসানে পঞ্জাভা ক্লেণিত্তী সম্ভিব।হিছে অজ্ঞাভ বাসকল বিষম্পাশ মুক্ত হইয়। अयुंबिश विश्वतान् मरणादि गाँउ विश्वे बाखनगरन नवा छ इहेरलन छक्रालेक त्राक प्रस्त किया श्रीक्रक थे किए एवं निर्शामाना गर्यां नामस्त्र স্ত্ৰাক্ষানি দহ দক্ষেলনে অভ্যানণ পাংধাধি নিমজ্যিত বিমলোচায় শিক্তোভাল তবল, বিকাশমান হটতে লাগিল। সভাল সমস্য ব্যক্তিই **७६ळाराज्येकिनंतः किनामिक निर्माध महाग श**िपृक्ति शुक्ति सुक्तिरार्जुः **্লাবণান্তে স্থারাজে**র চিত্তলত স্কৃতায় রমনা বিস্তার করিলেন, ভালতে সকল মহান্তার সময় লগতে সীয় রাজ্যাংশ আপনার্লে প্রিয়য়ন বৌদ্ধাতিপাধনকে দে, তাত্র্যে ছান্তনানগরে ছুর্য্যোপন সরিধানে সম্পূ িৰ্দ্ধক্ষিলেন। খেনা অপাধন কুক্তাজ সভায় প্ৰবিট ছইয়া ভাষিক। দ্ভুল ধৃওয়াইকে কহিলেন" ছে স্থানন্তৰ অস্ক্ৰান্ত্তী প্ৰপাণ্ডৰ ्यानुन दिस्त यह दाका धार्षिक इहेडा चयर मेनिकर्य बाबारक ं देखेंबुन के दिसाईकेन, श्रवाद्धा विधारिन विभागिवादन द्वावगाचाद जालित बाल्पूर्व वामना कुरव्रम स्वारहकुक कुँबेपीक निक्रमा विश्वाप बाधाओ चीकात कत्रक ताब्याः अन, अन, ममटेखनार्थः विमाद्धन विमा सावै।विकास निविधान 🎉 ব্রুক্তিক ভগ্নবিদ্ধ বেশে ক্ষন্তাভবাবে অরণ্য বিশেষে অশেষ ক্লেক্ষ কৃষ্টিকু भारतका मन्त्रिक भागमात्र व्यवप्रवराष रेभङ्कारम व्याख इडेरनडे श्वीक राजन धवर श्रमनत खोल्यानत विःतार्थन धाराधनाक वांचान

প্রকাশ করিলেন 1 খৌষোর বছতর বাক্য খেবগোতর ধৃতরাই জীক্ষা দি মহাত্মাগণ সাক্ষাৎকারে ছর্যোধনকে কহিলেন হে পুত্র সম্ভান্ত সমূত্র সাক্ষর স্বাহ্ম জন যাখাও ইব্রাপ্তার্থ রাজপানী পাওবগ্রুকে সম্পুট্রিত সমর্পন করিয়া ভাই২ প্রীতি পূর্বক রাজ্য প্রখাস্থাক্ত ও জাতি সুস্ কলত ভঞ্জন এবং কুমাৰা পৰীন্তি খোষণায়ৰজি ত ১ইছা নন্তু কৃছি যাপন করিলে প্রকাবর্গ ও স্বস্ত্রন সক্ষান সকলেই পর্য তথ্য হছের 🕽 এই কথা শুনিয়া রাজা ছুর্যোধন খীয় বাপেত বুদ্ধিত উপেত হইয়া কভিংলন "হে পিড়ং পরন বৈরি পাঞ্পুতা দিগকে যুদ্ধবাতীত ক্থন 'রাজ্যভাগ দিব না। ইহা বলিয়া, ক**র্ব হংশা**ক্ষ ক্রন সম্ভিন্<u>যাহু</u>ভ সভা হুইতে প্রস্থান করিখেন। অনন্তর ধৌনা পুরোহিত **ওঁদারাল** भूठतांखु तक कश्तिम" इके गर्र, शांतिष्ठे, कृतमाणक, महामञ्ज, द्वाची খনের পুর্বাপর বি.খাং গোর বিজ্ঞাত হইটেছি ভিনি অহঙারে প্রমন্ত ছইয়া কথন সম্পুটিতে রাজ্যালম দিবেন না কিন্তু তাঁহারও বলি होस्रोह नाग्न प्रहतका थाएँ । ३ ऋतरमध नरमद रहा । ३ वस मध्याल । ি ভাৰ্টাপক 🐪 বৃদ্ধি বাজ্যাল আখিল লংগার প্রাজয় কর্তে শিশাপুদ্ মনে আনও স্ট্রা হাংপার ২শভঃ ভাতিব**ভূ**ণ্ণকৈ **পানাকরিয়**। া ব্যালর্থি ১০**ও** গরন্ধের বর্ডিল, ডক্ষেতুক জীলারি স্থা**লু স্ভাবে** পরহিত্যবর্গ বলির স্বভুলেলপণতি ভালেজাস্পতির ই**স্তত্ত্ব সমর্পন করত** उद्दिश्य वस्तर श्रुवीक १८ १९८॥ ५ बिटनम । अन्यु **डिउ राष्ट्रे श्रीर**हि গাওৰ পক্ষে সহ্য়ে হইয়ানেন ভমঞ্চালার মানু মানিট্র সভিবদন্ 🔍 🐃 े हाम्बा क्षांच वहातम् किन्न पवादाः व बादकरणत विषद करे 🚑 क्तक्न निर्माटनत भाषान एवेटल्पा एनएत प्रवासकिक्षक्रिकीवनते प्रतःभद्रकः वर्र्यदिषः व्यावाषकः कार्वभूकाषः । कुक्षवृक्तिः केवेटक मिवृक्ति করিতে পারিলের না ফুডরা^০ ডিনি কাহার নাক্য গ্রাহা হা **স্থীকায়** क्षा का कार कि अ**न ना सक्कार उन्हा**पिक **कार्यक कुलबर्गायि शुःखेते**

मोत्रावित ।

পালে স্বাছকুৰ বিধাতাও প্ৰতিভূল হইয়াছেন ইহা বিবেচনা করত স**ঞ** बाद कविरामम शत्रभन्नवृद्धि इहेरमा अभिष्याभग रेमवकाई क एक एराम ্র<mark>এবং এই সংসার দৈবগতি</mark>লে হাংছিয়ঙা । বওলে কেছ শব্দ হয়েন না **শাহেটা কি দুলৈ**ক শাক্ষা নকাপ বিচো**ই**ড কাল ধ্ররাব**ী যে শুলাশুভ** अकि मुक्ते लक्ष्मराउँ वित्यवाद्यकात इंडेटल्ट्स, च ग इक इट्याधन ছুটের কুম্প্রণার কাপট্য ব্যবহারে পাঞ্ সন্তানদিল 💎 সমূহণ দিয়া **ध्यम खाशाल्य मठलाय स्टेग्नांक एक महाय यथम ए.मजाम प्रायोधित** ও কর্ম শঙ্কি এই প্রতিজা করিয়াছে যে" জয় হউক অথবা মড়া হউক **भाश्यव क्रिक्टक वाक्रमेक्ष्र ध्यमान कतित मा. ७ वन उक्रक**न वक्रविध क्रिया क्षेत्रार्ट फानमान इंहेलाम। आमि विवास करण गर्ड बदर মুগক্ত দর্শনেও জীত নহি আমার স্বপুজে গালুপুজে বিশেষ নাই : বুলের। সর্বাধ কোর গর প্রতা প্রায়ক্ত প্রামানে বৃদ্ধকানে অবজা অবেল, আংমি অঞ্জংক : বৃচিত নিমিত অংশকা সেত্ৰশতঃ সমস্তই সভ্যকরি। **অচেত**ন দুফোধন শেচোলিসূত কইলেও আনি যেতিও **ইই ইহাও দ্বার্থ** বটে কিন্ত ভাঁহার জয়ের আশা পুরণতা ইইয়া**ছে ৰারণ এই যে যখন ভ**নিলাম ঋত্দুন স্বারকাতে ভাভত্রকে বল প্রাক ,**বঁরবাছ করিয়াছে, অথচ** বৃষ্ণি বংশ,বভংস বাস্ফানর বলরাম সিত্রভাবে **हेलाओल्ड जानिशाहन ७ मिदराज वृध्धि बावइ काराल अर्क्ड्न** ক্ষিটা শব্বজ্ঞাল স্বারা তাহা বারণ করিয়া আওন সাহে অগ্নিকে ভৃত্ত ্ৰান্ত্ৰীছে ও পঞ্চপাণ্ডৰ কুটা সহিত অতুপূত্ হইতে পরিত্রাণ পাইছাছে विवर संशीकाक विमूध डांशायत है के मार्थन महत्त्राम् हरेगान्छ छ। ক্ষাক্ত পরায়ণ অভ্যেষ দুংশ সহিষ্ট্ ধর্মণীল পাওবদিপের বনগ্রহান ৰালে দালা কেটা ও সহজং ভিংকাপজীবি মহ।আ সাত্ৰ ব্ৰহ্মচৰ্য্যা अव-वसाथा क्यूक्षंकृरकविण द्वाक्यन वनवागि पुनिर्वेशतत चन्नकाण क्रदेशक वह स्वरामित्व क्रियाकिण वहारमगढि गुरक क्षेत्रम क्रिया ুপাওপত সহাত্র লাভ করিয়াছে।√ সভাসশ্ব অং ২ নূচ প্রভিক্ত ধনঞ্জয়

भारति ।

অর্নেলিয়া অয়ং দেবরাজের নিকট বধা বিধানে অঞ্জলিকা করিতেছে ও অজুন বরদান পর্বিত দেবভাদিলের অক্সের পুলোমা পুতা কালকের সংক্রম অভিশয় দুর্দান্ত মহাপরাক্ষান্ত ববিট সহত্র আকুর দিগকে পরা জয় করিয়াছে ও অহার বধার্বে ইন্সলোকে পিয়া কৃতকার্যা ব্ট্রা প্রত্যাপদন করিয়াছে। কর্ণ দতাপ্র্যায়ী যোক্ষাত্র । **প্রতিত্, মং পুত্রদি** গকে भक्षर्सता वस्र करियाहिन वर्कन जादानित्तन केसात क्रियाहि আমার পুজেরা বিরাট রাজো ছেপিদী সহ জকাত বাসকালে পাঙ বাসুসন্ধান করিতে প্রায়ন নাই ও উত্তর গো গ্রহে মং পঞ্চীর **অভি** অধান বার দিগকে মাজুন একাকা পরাজয় করিয়াছে ও বিরাটরাজা व्यक्तिमा উভরাধে बद्धानसाद्ध जूषिका क्रिया व्यक्तिस मन्त्रमान করিয়াছেন অবর্তুন ডাহাকে আপন পুজের নিবিত্ত প্রতিগ্রহ করিয়াছে এবং বুখিচির নিজিত নিজুন নির্বাদিত ও অঞ্চন বিয়োজিত হইয়াও সপ্ত অক্টোইণী সৈন্য সংগ্রহ করিসাছে ওদব্ধি আলারও করের ন্দাশা একেবারে শরিতাপ হই হাছে অভএব হে সময় তুরি দাস্ত্রক মেধাৰী বুদ্ধিমান্। পণ্ডিত ও মান্য দক্তি বিৰেচনা করিছে পারং সঞ্জয় পুৰ্বিষ্ঠির সনিক্ষেউলাক্ত্যনন্তর ধৃত্রাক্টের বিষ্ঠিতবাক্য বিজ্ঞান্তি করিলেন তিনি কৌরবের প্রবোধার্থে আর্দুতব্দরাপ সঞ্চল্লুকেই প্রেরণ করিলেন যেহেতুক চুর্লেখন । বৃত্যুঞ্জোজানে, আছাভিমানে অন র্থক বিপ্রতিপত্তি সভূতিতি করত পুনঃ পুনর্যক্ষেছাই করিতেছেন, আনি ক্ষাচ জাতি সহ আহবে আবসিত নহি কেননা **অল্লকাংগ** कांकि राभ विल्हासंस्थ। यह मझरा देवचुंबावि सूच छाडिकाविछ मुर्क्णाधनरक देखानु अस्मन निरमय क्रान विमयुखात क्रांन क्रांत्रवा বে আত্মসন্ধান রক্ষা করত শাস্ত্রবিহিত রাজ্যতাগু দিয়া অসাদাদিকে: বাধা রাখেন। সঞ্চয় ভখা ছইতে প্রত্যাগ্যমন পুরুলের অক্সরাজারিতা গত হইয়া কুরুষভান্ন সন্নিবিষ্ট সভাগণ সংস্থাপনে সকল গুলা জি উঞ

ৰাষ্ট্ৰিক ব্যাস্ত সমস্ত মহামাহে নিজেজর হইলেন অঞ্জ নৃপতি ভয়াকা এব गाँछ (भाकाषाकारत समी) जुछ हरेहा। वद्यात्मभ युक्त निक्रक कतिस्वत। বেমন ক্রোখেতে তাঁৰ সমূহ ও দছেতে সভাবাক্য ও প্রছেমী হইলে ধন ও কুচেকা বিশিষ্ট জনের পৌরুবত্বশীতা নাই হয় ৩ জাণ গৈলুনাতা শোষে কুল বিনাশ পায় অভগ্রৰ মুমপুঞা ছুর্জ্বয় ছুর্ফ্টেখন অবিবেচনীয় সংকল্প ও বিবদনীয় প্রসঞ্চ পরিত্যাগ না করিছা বিজিপীয়া **মদে মত** খইয়াবিষণ যিপাদে পতিত হওচনর নিমিত্তেই শকুনি কর্ণ দুংশাসন্তের শক্তৰায় যুদ্ধসঞ্চায় সঞ্জীভূত হইতে উদেয়।গী আছে ন এটা বি গ্ৰহ বাসন। রূপ নিএছ বীজ, প্রশাত ভূদয় গল্পরে উপ্ত ছইল ইল্ডেই যে ক্লিয় কুল বৈৰস্বত কর গৃহীত হুইয়া দারুলা যন্ত্রণা আওপ্ত হুইবেন তাহাতে কোন সন্দেহ রহিল নাঃ । ধৃতরাক্টের গুলুখাৎ সঞ্জয় এই নকল বাক্য শুনিলা সবিস্থতে সভুৱে বিরাট নগবে গমন প্রঃসর স্থিতিরাদির স্মি খানে পানচুত্তাকে কহিলেন অনন্তর কৌরবের দিলের সহিত বৈরামু বঞ্জের ১২.ল করেণ ২০ দশংইয়া সর্প্রধীলা যুগিছির ভ**ংকালেও লো**ক ধর্মভয়ে ভক্স রাজসভায় সমূপশ্বিত টেবকীনন্দন ঞ্জিফ সমীপে আকৃত্তের কুরু সভাগ গমন। পূর্বাং অপুরং বার্ত্তা সমূদায় করপুটে निर्दमन श्रृक्तक कुक मजात्र ध्येत्रत्ना प्रयुक्त भाज छ। हारक है निर्द्राशन कतिस्त्रम । छळवरमल मीन मदान् जनवीन छङाधीन इरेप्रा कूक সম্ভাবের প্রবোধার্থে ছন্তিনা নগরে গমনে স্থীকৃত হইলেন। তৎকাঞ্চে 'ক্লৌপদী অভি দুঃখিতাভাবে ঝটিভি সমিহিত হইয়া দ্বিনয়ে দ্যাবেদন ক্রিলেন হে পরাৎপর জগ জ্ঞাগরত জনার্দ্দন অস্মদূরখের তথা কি কৃষিৰ নিভাত্তই নিচুৰ পাপী দুৰ্ঘোধন যত কট নিয়াহে ভাহার ুইরভানাই ভথাশি ভালার অফাকরণে সমর সমন্ত বাসনার নিরাস इंहेरज्ञाह् ना किन्द्र निष्ठतत अविकास निष्य प्रमार्थक ুৰিন্তিত চেক্টার বৈমৰ্থাতা প্রযুক্তই স্থানির্মাল কৌরণ কলে কলকাছিত

क्रिडिएइंग उंशीनि छोरात भाग निभागात कृणी नी इर्रेश नक्ष्यः चंदबर निवर्वार नम चात्र भोतर प्रशासिक विदयक क्रिकार করত পাওবদিগের অহিত চিকীর্থ ইইয়াছেন। হে কমল লোচন বিষ্ণো নির্দান শান্তনিতা স্থায়বৃদ্ধি ছার৷ সরুলের অন্তর্যানিত্বরূপে खांग्यक्रम कींनमारकार कायाकारण प्रिटिश्य केंद्र्याधन मक लात बाका विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व किया भारत है या भारत छ । त्रिक्ताकारण क्षेत्रांत्य अनम् ि क्षकाण कतिराउद्याः, विरम्य छः क्षे পাপিষ্ঠ ছটের মন্ত্রণায় সভাষধ্যে অমুপযুক্তাভিমর্যনে আসক্তমনা হইয়া এখুধীনির কেশাকর্যণ পূর্মক আক্ষিক উপস্থিত করাইয়া আজ্মনায় অপর ছুরাচারিকে বিবস্তা কারতে অসুমতি দিয়াছিল ও যথন পরিধেয় বস্ত্র আক্রোশ পূর্বক ধারণ করিল তথন প্রতিক্ষণ অসু ভাপিনী হইয়া লজ্জানিবারণাথে ভোষারই প্রভীক্ষণ করত অমুন্ত্রে গ্রাহকের অহ্তাহ যাতৃঞা করিয়াছিলাম.ও বিপুল বিজাত বিপকা বলী বেটিত হইয়া অপার সমুডে প্তিতানম্ভর আজ্বক্ষার্কার चारमाभाग्नास्थेव मर्भारम मिग्रमार्ग जवहरून धकांख मात्रन कहेलाय अवर অন্তব্যেদনাভিভৃতত্ব নিমিত্ত কতই বা আমেড়িত বিনতি,স্তুতি ও নক রুণ বাক্যোক্তি করত মুক্তি প্রার্থন। করিলান মহাস্মা সভাগণ হুষ্টের ভরে নিরুত্তর হইল. কেহাই আমা ঐতি করুণা বিতরণ করিলানা, সূত্রাং ক্রমণোবসমা হইয়া কেবল তব করুণা বলবভীজানে ব্যাকুলি ভাত্তংকরণে ভোনার সভাল জলদ শ্যামল শ্বেরবজ্ব কমল লোচন ও গীতবাসঃ পরিধায়ি পরেশ রূপ শারণ পুরুক তুকীছুতা হইলে ডং কালে ছোরতর বিপদ তিমিরাপনমনার্থে করুণালিঞ্চিত বিষলভুমুন কির্ণ বিস্তারিত করিয়া আপদ ভঞ্জন নামগুণে অন্দৰ্ভুগদর্শনে অন্ধির হইয়া গগন মার্গ হইতে অনবরত বিবিধা বিভিন্ন চিক্র ক্লান্ট্রী

ভূত ব্স্ত্র ৰোগাইয়াছিলা তাহাতে নানামত বর্ণযুক্ত নীলপীত লোচিত नीड १४० दिक्रींघेड वनन शर्बाड क्षांग प्रमर्टन क्रांतित छ हमरकृड कारन जामांबरे श्राप्तारकीर्जात मुहाविक श्रेमाम वारम्बक झामामन ভাষার পিঞ্কন বগন সম্প্রে যন্তবার আকর্ষণ করিল তভই বৃদ্ধি ইইতে লাণিল সভাগৰ ডোমায় এই বিচিত্রির কার্যো আশ্চর্যা, অনীক্ষিত ব্যাপারে পরতার কহি য়াছিলেন বে এডদ্রাপ কখন অঞ্জ বিবিপ শাড়ী স্থানেং পুঞ্চং দ্বি ৬ দ্বী করেন নাই,, এবুঞ্ অনপত্রপিঞ্ ছুর্নুন্ধ বন ও নমজ ১ভাগণ কর্তিক দৃষিত আংবিজ্ব হইলেন হে ব্ৰু তব প্রসাদাৎ ভংকালীন কেছ বিবস্তা করিতে পারে নাই অপর যথন শুনি লাম ফুরুরাজান্তঃপুরে দাসী হইয়া অবস্থিতি করিতে হটবেক তথন ধরছরে কণ্ডিত কলেবরে সভয়ান্তরে নিষম শোক পাঁথারে পতিত इरेश्रा श्वामित्रव मृत्रे श्रुवन्त्रात छरेक्टश्वरत कालत व्यापन करण व्यापन यम्या स्पीत्रावत्रम्या वृद्धिताम वृद्धिम्या मन्द्रम् प्रश्नामन नाना প্রকার কটাজিকরত কর্ণের জাজায় অবংপুরী মথে বাইতে কহিলে শিরে বজাখাত প্রায় জ্ঞান করিয়া সমূহ পবিতাশিতা হইলাম যে হেত্তক পূর্ব্ব ক্রমান্তরীয় অমূত্রন কর্মাকরণ প্রত্যবারে সম্পুতি বিধাতা वृक्ति बहे करनोकिक मास्ति पिरनन, हात्रर लाक मानास विवध रहेगा ৰত বিনতি স্তুতি করিয়াছিলাম ওত্তাবং বাণী কাছার কর্ণ ফুছরে স্থান পাইল না একি নামান্য বিভ্যনা অহোকৃষ্ণ পূর্বে মম সম্মাইকালে পিতৃগুহে সমাগত রাজবর্গ আমাকে একবার যাত দেখিয়াছিল ভদববি इलाभूका शरीमानि कि चानााना कर्न कथन मृक्षे करद्रन नारे कनां छन ৰশত বিষাম্পত্তীক সক্ষিত ছইলে ডংক্লাৎ পাওবেরা সমূহ কোঠী इटेट्डिन अञ्जलांवद्याय अविव्छानस्त अ अञातिनीत द्वःगमग्र मह ক্ষুব্রে বেই পাওবগণের দৃশ্বোচরে আপানর সাধারণ মহযাই আমার ছুপতি দেখিয়াভিল। পরত কৃঞ্নিরিতা হইয়া গুরুজন সংখাধন

चामीत रामिता याचा। विठात थे भूमध्य कहित्व मजास् महस्त वर्गकिहै নিক্তর হইপেন কেবণ অলক্ঃধাসহাতায় কুরকুল ভ্রেঠ পুণারান - ভীম্মদেৰ স্তৰ্কপ্ৰায় থাকিয়া ও কক্ষা ভিনিৱান্বিত উপদেশক বাকা কহিয়াভিলেন যে বারহার ফেন জিল্ঞাসা কর সভাত্তিত প্রাচীন জোণাদি বছালা নিবৃহের জীবনে কি জীবন আছে সকলেই হত প্রায় হইয়াছেন অভ্ৰব নৃত্লোককে কোন কথা জিজাসিত হইলে কি প্ৰতি বাকা প্রদানে শক্ত হয়েন, হে কল্যাণি জ্ঞাপদস্তুতে ধর্মবাতীত ইহ সম্পুরে অন্যাভীষিত মথানাই তর্দাপ্রায় করাই প্রেয়ন্ধর কেননা ধার্মিক ব্যক্তি ধর্মবলে বছক্ষ যুক্ত নঃ হইয়া বরং রক্তি হয়েন ভূমি সেই, ধর্ম সহায়িনী হইয়া অচিরেই ভরিগণ নিখন করিবা ভাছার কোন সংক্তে নাই অপর ভোষার দাবাসৃদ্ভিতা বিষয়ে যুখিচিএকে জিজ্ঞানা করাবিধেয় ও বিচারণা অস্মদাদির নিতাম পাধ্যাতীত ইয়: শ্রবণ করিয়া মনোদৃংখে অংধামুখী হইছ। ক্রন্দন করিতেছিলান তৎ সম্ভ্রে দুংশাসন বার্মার কেশাকর্ষণ করিতে লাগিল এবং দুংগাধন মঙ্ক্ষে বদনে উক্ত করিল অরে কৃষ্ণা অকারণে কেন রোরদ্যমান। ইট্ তেছিস তোর স্বাদী মুখিষ্ঠির পাশকীড়ার প্রতিজ্ঞায় :১১রে বিশর্জন। দিল ইদ্পনীং পরাজিতা খ্টমা দাধীবৃত্তির অতপত্তি করিতেছিল দেখ ভোর পঞ্পতি বন্দ ভূষণ পরিত্যাগ করিয়া ভূমিতলে ভূডাভাবে দণ্ডঃ রহিয়াছে: আসনে।পরেশনের যোগাড়া নাই তুই কি অহয়ারে কথাকছিতেছিল ইত্যাদি দারুণা বাণী কর্ণ বিষয়ে অশনি পতনবং সম্পুৰেশিত হইলেসভাস্থাজৰৰ্গ সন্ধ্যিষ্ঠ জন সমবায় ৰাঙ্ निष्मित्र नो कदिया निश्मास्य वैकमा भक्षभाक्षत्वतः यूथे नित्रीकन कति লেন তথন ধারাগর বর্ষ বিপ্রায়া বিগলিতাঞ্ মুখী ও দীনা মলিনা ভাবা বিভা আমাকে দর্শন করিয়া ভীম নিভাস্ত দুংখ ও জ্বপমান সহ্যকর্ণা সমর্থ হইয়া ভীষণ সূর্ত্তিধারণ পর্বাক করেং করাকর্ষণ করিয়া ভয়ত্বর

1

श्चीन छात्रांग लागकत्क महादलाध्य दक्षण्डि रूप्यतन नाग्रसान बेंग्से हर्केन नाजात महाबद्धा चुन्तर हालम श्र्वक विकछ वर्गन দুযোগনের অভি দৃষ্টিপাড সংসর কহিছে লাগিলেন পাওবের পতি এই এডা গুলি केल विद्याल অন্মদাদির অনাগতি নাই স্থতরাং ইউ-বই ধর্ম বলে আমরা বাধা হই গাছি যদি এমত ধর্মাফা পাওবে ইর না ছইটেন ভবে কি এডকণ কৌরব পামর গণ জীবন রক্ষণে **সমর্থ হইত ভারে দুট্ট গরিষ্ঠ পর্ণলিন্ধ নিচয় তে**রেভিনের দৌগুলেরে। महाठी ও मगड कितान, कमक क बात्मात बाहर । पुरि छेटाबुंदर পরাভূতত্ব ধীকার পরক প্রক হইলেন অভত্রব দাসী 📲 । কি বলিধ তেওে লগের পঞ্চীয় নিখিলানর্থকারি শঠ শক্তি •মছ্ পাঞ্চি ফীড়ায় ছলনা হারা পালিত হইয়া অন্মদাদ লাভু ুটায়কেও ছালিলেৰ ডক্ষেত্ৰক সকল দৃহথ সহাক্ষিডেছি এবং ধৰ্মনক্ষন ধৰ্মবাজ धर्माशास्य जाराष्ट्र इडेबोरहर ७९७ युप्ते जीहात अजिनात सकत ভা লে প্ৰক্ষাবলম্বন পূৰ্বক শতীপতি প্রাক্ষিত মম ভূতের পূৰ্ব থক্ষ তে, অন্য কৌলেগবের লর্মখ্যক্ত চা কন্ধিতি ইউলোড় কিন্তু বে পামর আমি রস্তমান পালির ও একান্দ্র সলকে ত্রোরটের সমূল সমার্থ নিধন করিয়া যমদণ্ড সম অথও 😽 ৯ ব ৰাছ দণ্ডছারা রাজা লণ্ডভণ্ড ও খণ্ডং করিয়া পারিতাপ দূর করিতে পারি। বৃকোদর নিংশ*ক স্*ইলে কণ **ब्हिल्ड्लाकास २३३। विध्यांकात कहिल**" त मामकार्या मानि ধৃতরাপাণ্ডে শীল্প ঞাবেশ করিয়া অথোচিত দাদীর কার্যা নির্দাই কর এক্ষণে ভার উপর পাওবলিলের জ্যান কর্ত্ত নাই। পার্করাষ্ট্রশন ভোরপ্র ফু ফুটল সম্পুতি দাহাকে ইক্ষাহয় ভাহাকেই ২০না করিতে পারিস ইত্যাদি বছতব কট্নিক আবনে তীম কলেবর প্রভাত বাভাছত কল্পিতাকৃতি কুমুগতী সদৃশ হইয়া রজিষ'বে চকুর **মূর্ণন** ভার। সজোপ্তে কর্ণকে দৃষ্টি করিয়া কাদিষ্বিনী গাউনের ন্যায় ছোরশব্দে

कहिशाहित्सन ए बाद गृह माळाधादस्य मुका निममुभूषी स्त्रीमधी প্রতি যে অখুক উক্ত শবিদ্যি সংসমূচিত শ স্থি মর্মানতে নাস্ত আছে এখনই দিতেপারি কিন্তু ধর্মাধিকারী ধর্মপাচন বন্ধবিধায়ে অবাধ্য প্রথা কোনকার্য্য করণের সাধানাই যাহাছ্উক পর্নাল্লিবং **অন্ত**রীতি ্হাত প্রস্থাতি হইর। প্রথর দাহদহে অন্তর্গতি হটতেছে। অনস্তর युधिष्ठि । व्या छ व्योदन व्यथान व्याश्ववाहि प्रदर्शापन कर्स्तु न खेल इड्डन ष क्षा किं। कि अजिज। पूर्विर देशत विधान कत्र वर्षा नसून जव्हन অবন পুরুষনর অংথবেদন হইয়া সংব্যান বসন দারা লোচনাননা ছালন -ক্রিলেন ছ্বেট্ছন ভদ্দনি মধ্যমে হর্ষাণ হইয়া কর্পজীক্ষ व्यकुल नगरन जीवन व्यक्ति लागाक्षमर्गन उक्रीदांता शकर छोमन्ग त्रहाउत्रापम मकल जामनाकास बह्यदर छामबाहमा आमा पूर्वक আমাকে দেখাইবাছিল ভক্ষেত্ৰ মহাৰীর বৃক্তেৰ মহাজোগে এতদাপ কুকম স্থানক প্রভাক্ষ ক্রিয়া সভাবিদ্যবাদে প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলেন া উজ ভারত কুলের গশু, মিলজ্বপায়র ে উফ দেখাইল সময় मध्या मंद्री भव्योज्ञास्य **स्था**ष्ट मध्या भव्यम् भवा मस्युद्धाः ভছাকে সংসাধ করিব জোলনৰ প্রান্ত অনমীক্ষার বিক্লে প্রাধান क्षामानार्थं या हे त्रेर क्लाहा का वाक्षा अवसाय छत् वाकार र स्कूर्ण (४८५ मा बद : अध्यक्ष अधिक काल्या १४ त्व तम **উপकात मार्थे** एवश **चालकात** গালী জলোপালী **অস্মদাদির জুওপ্সাতেই সভত র**াভ তাহা<mark>র সাধুভা</mark> শিশিমানিও নাট বেচেত্র ছার্কবুবাক্তি লোকভঃ ধর্মান্তঃ বাবহাস্ত ৰজিত হইয়া সৰ্বাধাপথগামী হয় স্তৱাং কলিছে নথচ মছ্যালি আত্মনিদা ভয়ে তদখনত হইতে অভিনাষ করেননা সেই হেডুক কুরু সভার গমন কথিয়া প্রীত হওয়। কটিন' প্রাত্যুত অস্মর্ক্টানে ভালায় स्क्रेंड लाज आलिनिय रक्ष करेता एक मान् श्रीवन मन् गान्यंत्र हि প্ৰিডপ্ৰত। তথা প্রিব্লন্যান্ হইটা ভ্ৰতি ছুফ্নং'' সেমন প্রের

मिल्ह्यं कविष्ठा शिक्षे वर्शक पूर्वाब उक्त अवस्थित पूर्वाब शिक्ष भरतत নিন্দাকরিয়া আহ্বাহিত হংখন। চে কৃষ্ণ ইত্ত কণ্ঠা যথে। কি चाक्या वानकात वृक्षे इकेटिडाइ, स्टब्ड्स क्रक्नुवासम वृत्तासम অষ্ট্রাপিও হিংসাবলে। হিংসারূপ বৃক্ষরোপণ করিয়া ভদশল্লয় জীবন ব্রকাও পুণক্ষনিত স্থাসরপ রাজ্যাদি স্থাস্থানন করিতেছে আর শ্বহিংসা পথাৰলগ্নী ভৰতৰ নত যে শতেৰপণ ভাগোৱা আশেষ দুংধানি एलान क्रिडाइटस्न उपाणि श्रमायमान स्त्रन। अञ्जब श्रुवावटस्त्रहरू कान সহ্ভাবে পাপলক্ষ্ণ দুই ক্লাক্ত নে ধাহাহ্উক ক্রকুল খুনেব্যতীত र्गा उनक्षिः एक निष्ठारक्षक्ष लक्षास्त्रक सृत्य स्वतः। खदः लास्टरवर्। मृष्ठ ८००४व कतिया अशासनित पूर्याधनस्य भूनश्यां छित्रज्ञ बुकारेवाबक्रमा यामन बञ्ज कतियशहर उवाणि ध्वतृष्क श्रवन नाष्ट्र स्वमन ৪ विकास मृष्ट्राकारण ঔষধ ভক্ষণ করেন। ও ১২মন ২০তি নশ্চিত দেশবুল্ল। বিনাশদালে ফলো द्वात करत रमञ्चल प्रयोशियत याममकाल उलासक करेगांक उक्ता है প্রক্রমাকা প্রহণ করেনা কিন্তু ভোগার বাক্যা সন্দ্রাকৃতহউলে ডার্ড পাপ कुरहरक डिका व्यवनाई हहेरक है जानि क्रामकनाति (यन कि ষ্যনে কৃষ্ণ কৃষ্ণাকে করুণারসাভিষিত পাক্যোভি করিয়া শাস্ত্রনা করি **टबंब क्रिका** इंडियान पूर्व खुराय अ राजन छ मार्गापनामि व्यक्ति गमन প্রাদে পতিত হইবে। হত্তিনায় ওভ যাত্রাকালীন জ্রাহরি সলিগানে পাওব সকলে खेक्सडा इंदेश। कमानील एकारत देशां कहि ए। कि नाम বে হে বিপ্রিরাকরিফ কৃষ্ণ অঞ্জালকে কহিবেন রাল্যদেশ বৃত্তি অর্থ পঞ্জ ধন, জন, সদস্ট ভাঁহার বশতাপল হেতুক বিসর্জন দিয়া উদা দীম ধ্যাত্রাছেন একণে যদিচ দুর্য্যোধন সমুচিত রাজ্যাংশ না দেন তবে ক্ষেত্র ইক্সপ্তর্জ বারণানগর স্থিনার উত্তরাংশে স্কান্তি ষা সিদ্ধি আম ও ভাহার দকিবাংলে পাধ্যৰ নগৰ এই পঞ্জাম মাত আদান পূৰ্ব্যক অবশিষ্ট সাগরাবধি হিমাচল পর্যান্ত নমন্ত রাজ্যসভোগ

करुन् भूनविंद्रार्थ आद्राक्षम माहे यमिना। क्रूज़ेनेहारमहा देशांख অ স্বীক্ত হরেন ভবে এই মধাপাপে চিরস্থায়িনী রাজনান্ধী অবিলংঘই मधीयनी भडा कहेरबक बादर ब्रांका क्षांखार्थ डीहामिश्राक नश्हांत्र काँब्रे নেও পাপ ও কলম্ব নাই। অনন্তর ভগবান্ উপস্থিত হ**ইঃই ব্ধা** বোপা সম্মান পুরংসর সভাস্থ সভানিকায় সম্ভিবাদন করিতে লগকিলেন ভগৰান্ তক্তৰ মহাজ্ঞাগণকে বচন মাধুৰ্যতায় ভৃপ্ত কবিয়া ভঞ্চি विषुव गृष्ट जिनिकानखत अधिवान कवितान, के प्रोमशीन विषुद्ध मेरे সক্তমনা হইয়া মণাৰ্গ ভত্তিভাৰ প্ৰকাশ পূৰ্বক অখণ্ড সাধা সেঁধী শুক্রমা সন্ত্রণথ করত কৃষ্ণ নাহাত্মা বর্ণন করিলে স্তুভি বশভং সা**র্থ** সময়িত ছইয়া নারায়ণ সকৌভূকে কছিলেন হে বিদ্র **ভো**ষার **সধ্য** ৰধার কি উদর জালা দূরহয়, আপাততঃ ক্ষুৎপিপাসাভিত্তত্ব নিমিট জঠর জ্লিডেড়ে এবং সানানন্তৰ বিনা জলপানে চিভাইত্র্যায়া কাতর হউ তছি বিধুর ই ্যক্তিতে উদার বিধুর ঋষাব দানোলরের শুর্মী, দূর করণার্থে সমাদরে স্বীয় গুচেদার সদাবিই হইয়া অবশিব কেবল কঞ্চিৎ কুম ভিন্ন দ্রবান্তর প্রাপ্ত দুর্জ দেখিয়া দুর্গুকী মনামানে দু**র্মি** তাম্ব্যকরণে ছাসাহাস তাহাই পালপতির গছা করে প্রদান করিলে ঞ্জিপতি দৃংস্থাবস্থাবন্দিত বিদুৰ দস্ত ওঞ্গকণামাত্র প্রা**প্ত পূর্বাক করে**ছ করান্তরে বন্ধন করিয়া সভ্জাই মুখব্যাদান করত যথোপিন্ডাদন ভ্রি रमन विमुत्र उरकारम लक्षाय नग्रताम्बोलन ना कतिया कृषः आखोकरव नियोगन कतित्व प्रस्तरंभी नातान्त स्वाह्म स्वाह्म अवस्त्र कार्या ভক্তমানে উদীরিত হইল যে অন্যবাদরে যাহা ভিক্তার লক্ষ্ হইপ্লছে ভাৰাই রক্ষন করিয়া দেহ। অদা তব গৃহে অবস্থান পূৰ্বক মাখাল্লিক ' काकन अ आरमान अरमात देखानान क्यू कोत्रावत विवद्ध क्षाव भूतः नत तकनी वाशतन ७ कर्जशाष्ट्रकान धानक कतिवातर नन्मून चाकू क्त करिट्डिश विषुत्र स्वाक्रवारक्षण विकिक्त क्षीरक करिएक छिनि

माश्रेकि।

अन्तरका में मण्यामन 'अ चारमनारख दती उकी रुसन शहा विकक्त ক্রিভূমি পরিভূমি প্রকাশ করিকেন অনত্তর বিদুর কর্ত্ত ব্যাহ্ড हें के विश्वासाय मक्ति मजी भवामर्थ भूति मूर्तादिमाक छेन ক্ষেত্ৰ কিন্তু চৰ বে পাওবলাক কৃষ্ণ নিভান্তই সহকারী হইয়াছেন 🏥 ভাহাকে বন্ধন করিয়া রাখিলে উহারাবিনা কৃষ্ণে অবশাই मोबी बहे व रामन विनदक वस्तान कतिहा है स्व प्रवित्रा छे प ক্রীছিলেন ভদ্রণ তুমিও রাজ্যাভাগ করিবা বিশেষতঃ পূর্মাপর ब्रीस्त्रमञ्ज्ञादे नीष्ठित आहि य मक्तक छत्ववत्व करन कर्रमात्व प्रमन করিলে পাপক্ষার্থ হয়না। দুর্যোধনাধমধানে রধানক্ষন প্রভৃতি নিভৃত ক্ষান উক্তযুক্তি সম্পাদিতা অপ্রিয়া বাণী কর্ণবিবরে প্রবিবেশ হেতুক ক্ষাবিশ্য হবি কম্পান রক্তাক বিশাভাতিরিজ সৰজ্যনতাথ কনীনিক। অকার ফল সদৃশী বিষ্ঠিতা করিলা কোখ সহকাবে কহিলেল পাণা ক্লিপুর্যোধনের ইয়ং অহতার ভাষারাছে অত্তব নৃচূর্ত্ত নথো ্ৰিছিভ শান্তি দিয়া কৃষ্ণকুলান্ত করিতে পারি। ইত্যাদি বিধুর রোষ क्रिकिंछ बद्दान विमुद्र जीवि बनावः कराबार्ड शुनकृति कवितानन र कृषः ছুমি ত্রিভূবনে অঠাপাতা সংহর্তা জগতপতি অসে। স্বর ভাবিত অহংবুদুর্যোধন তোমানে বজন করিবেক এমত প্রশক্তি তাহার কি ক্ষাড়ে হে বেজাবর বিকো তুবি ইছে। করিলে নিমেবার্ক কালে সৃষ্টি ্বিশ্লাস্থ কৰিছে পার। হে ভন্তাধীন কোবান ভক্ত জনৈক ভোষণার্থে কেবল অভিনিত্তিক বন্ধান প্ৰক্ত হইতে পার নড়েখ ভোলাকে বন্ধ করণের সাধ্য कार्ष कार्छ। जार्षत मृचे छ धकमिन त्याकृत्य बालानीना कर्नकात्त ্লাল অংশাদার কোশ ভাড়াইলে ভোমার বৃহতা সালায় সৌহিত চইয়া क्रिक्श प्रकृत तिव्यवस्य वर्क जानवर्तन वस्तत निर्मासने कविरणमें क्षिक्र एका मान महिला वृद्धिक का शिक्ष वाकृष्णि आसीत स्वास अ का ने न

मानुष्य वि

व्हेंत्र दे उत्तर् व मान्ना क्षा का का क्षा का मान्य का म प्रशाका कि अभावन बाहा निक याचा निहिष्णान करक रविद्या विद्या याजन अर्व क्षित्राहिन। एर चानि विकास अर्थक्कर असमिति हर्गा। थम मिनिसे कि कारने क्यांथ कडिएछाईम गर्समें कियान न शास्त्री में की তিফান্ত পরাক্রান্ত কে আছে অভএব মারিক স্বভাবে মনাপরাধ কর্মী कन्नम्। कक विद्युद्धत्र अविधिनाका कालात्रिक्षम मानम वाहित्क वातन कृतिया क्लीतरगत मान चलन भूर्तक खेळ कृतिसम रा अधित দু উদয়ন ছইবেক জত্র সন্দেহো নাস্তি। অনন্তর বিদুর পরম পুলকামিত হইরা কৃষ্ণ সাভাকিসহ নানাপ্রকার কারা কৌতুক কথালালে তিন জনে ৰহুনিশীখিনী স্তুৰে জাগর-পূৰ্যক অবশেধে কথালেবে শেসভয়স শরন করিলেন। পরেদুঃ জীকৃষ্ণ প্রভাতে আত্তক্ষতা সমাপন করত कूक्रवाक नम्राम ध्यशांव श्रृक्षक विका बाक्रमिश्हारमारवनम स्वितिनः নানা দিগ্দেশীয় ব্লাজ সমূহ এবং নারত, পৌলন্তা তেবলাতি ছুনির্মণ অন্তের ভবনে উপস্থিত হইয়া বগাবোগ্যাদনে ৰসিলেন ভাহাতে স্জার পরমাশোভার পরিসীমায় ইন্দ্রের দেবসভার ক্রচিও সামান্যা জান হইতে লাগিল। ভত্তত রাজসভাগ শৌরি প্রনন্ধাধীন কহিলেন গে ধঙ क्षांके कि को ब्रवशन के बंधा मृत्याक्ति बका ग्रद्ध व्यवन कर धर्मानेक्त व्यक्ति विदर्भ प उक्षमार्थ विनिष्ठ अकांन पूर्वक जामादक मरत्थिय के विद्यादक्त ভাষীরা तमुष्टि রাজ্ঞাংশ প্রাপ্ত হইলেই তৃত্ত হয়েন এবং পরস্পার खाकृंगन मिर्किताटम झेकाफ़ि छांभै ऋत्य नि वृष्डे थात्कन देशहे मन्नून বাসনা করেন ও ডাটি বলিষ্ঠ পরিশুদ্ধ চিত্ত সাধু পাওবেরা আয়াইর দুউ সনামানে ছর্ন্যোধনাদি কুডাপরাধ বৃদ্ধ মার্ক্তনা কুরিয়াছেন,, ইত্যা' नि बाका क्षाँड रनाठब्रोकुंडा स्ट्रेरने वृद्धवीयुद्धविद्यागिक क्षाँड कहिरलेक হে পুত্র ভভংগু কৃষ্ণ প্রমুখাৎ পাওবদিশের বিনয় বচন প্রবণ করিলা ककरन डीशामत कुर्वाधिक्छ झाका धन तेल्लाम नवर्गामि अवैधिक

শ্বেজন সম্প্রান্ত মশ্রীতি বছনিও ইংলোক প্রাণ্য পূর্বনেন্দ ভোগ কর #.#^২ পদ্মাং ব**ত্**রুষ পাইবে। এবং পাণ্ডবেরা পাশকীভাব বে निवन कविशाहिक छाटार इ मुख्य बहेगाएक छटन सकांत्रक कार्यन ক্ষ কর এই পর্টিত অপক্ষে ধর্মে সহাতালা চুইয়া বরক সক্ষতে। इ.इ.व. हेर् मण्मादि अभवन अल्काक खासन इहेरा, हुर्स्यादन छेउर কারকেন ভাত জীবি তবালু বাকিলে কি পরিবিক্ত পাছৰ সহিত প্রীত সংঘটন। হইবেক ভাষাদের শক্তি থাকে গুদ্ধ করিয়া বাল্য লউক। ইভিষাকো ধ্ৰুৱাই নিভাত বিরক্ত ইইসেন। অনন্তৰ ভীক ছোৰ স্প অপ্রান, ও নাবদমূনি প্রভৃতি সভাসদ াকেনে গ্রহণ প্রত্যক্ত প্রবোগ দিতে লাগিলেন ছে মলিনাশ্য বান্ধন চোমার মুক্ষ ম্যাপ कर्यन ७ माध्यवीकि स्मास विनिध् क कि इकेट के वा याहाइ छैक अध শাস্ত্রসন্মত জ্ঞাতি বস্তাপহরণ রূপ শ্রুপাই অতি অধর্ম দ্যান কবিতে হয় জডএৰ তুমি স্বৰৰ্গে স্থিতিক্যত উপস্থিতিৰৰে সম্বভিতে সম্বভ ছইয়া শাৰ্ষ কৰ্মাছতি ধ্ৰাতি প্ৰকৃতি প্ৰকৃতক্ৰণে পৰিতাপ পূৰ্বত সম্পূতি প্রকৃত বাজ্যাংশু প্রধান করতক পাওবগানের এ আত কব ভার্যাছি ধকে বিরক্ত করা কলাচ লেপ্তস্কর নহে যে হেণ্ডুক প গুনহানেবা ভব আঞ্জ মধ্যে সজের ছইয়াছে । ই জাদি দেবগণ ভোম। বপ্রক চইলে ও গ্রাহিপের সহিত সমরে লয়[া] শেরা ক^{কে}ন ইটারক। অভগ্র एक्त वाकिय क ल्लीख स्वाधिक क वृक्तित न करा क ल भाव सुबर সর গণ্ডশ্বলে কুঠানি নথন ও দৈখে ভূণজেনন করত বিনয় পূর্বক পুদ पूर्वालद्वाच क्या धार्वना उ कहा ब्राकारक अभाग छ ब्राकारक स्था अर्फ वामित्रा त्राकाचिकिक क्षित्रक कृत्रक स्ट्रांक । नर्करमध्य পরত্বাম ব্যাস পৌষতা গ্রেম্বুরি প্রাম্পতন প্রমান কর্মে পূর্বোক্ত বিৰিধ বিধি বিধানে আহে।চক বাদ্য প্ৰোক হইলেও প্ৰবেধিত হওয়া मुरत शाक्त याकाणे मकत यांका, काश्चल कुक्र-एनमान्तर कांक्रस्क and property to the

কটকেরন্যায় প্রবেশ করিল-তত্ত্বেতৃক কাহার কথাই ডাইনর শাটো भरूष दिख **साम भारेम माँ ऋखद्वार उरकारम अस**न्नाख अर्द्धार्यम्हा ডিভা করিলেন যে শেষকালে মম দৌর্ভাগ্য বশতঃ কুপুল্লের চুমতি वृत्कत वर्ता कार्ताराज काल कार्तात श्रीक्षात स्थिएजिए। उपन ও क्ष कहिलान व्य क्रवाजन यहानि जहाँ तांचा अलाम ना कर उत्प ইম্রেগ্রন্থ কুশন্ত্রল বারণাবত দি দ্বিগ্রাচ পাণ্ডবনগর এই পঞ্জামমাত্র अमान् कतिया निम्ह देवान् । देवान्य (साध कहाः मार्थि देन माहिद्धात উভয় কুলেবই সর্লাদ! থিডটিআ করিতেছি অতএব সমবাকো পাও বসহ প্রীতি ক্রটি আরক্তর, কেননা প্রাধীন পাও পুলেরট छोमार्क् वह वर्षे शहेया अवगापि जर्मन हिपूक है: तीन्द्रम একান্ড্রেলিড চুটলোছে কদাচ উবসহ রণেজ্ঞ নহে এনত সময়ে জ্ঞাতি হনন করা অতি অস্থচিতা হে ছর্ফোধা ভুনিও অনেক শাস্ত্রাধায়ন করিয়াল, পূথিবীতে জাতিম্ব ডুলা আর মহাপাতক নাই অতথ্য পুনাং বারণ করিলেও আমার বাজা উপ্পাল কর! জগৎগতির আহার প্রবণে ছর্যোধন মহারোচে উপান পূৰ্বক দুক্তকৰ্তে বাক্ত কৰিলেন বে পাশুহকে তীক্ষু প্ৰচান্ত পৰিবিক্তঃ <mark>चृमिछ निमायुक्त मिन को कोई अवश्य छाटिका करिकाम। क्राविध</mark> কঠোর লপিত প্রতীত হটলে নিশেকে রছিলেন কিট্ইখ্লে গভে কৃষ্ণ अलगामितक कविरक्षक, आणि के वि शतकह दिलादि एक स्कृतकार्त्वा বিয়া বিহুর মুখে অত্যভূত বাকা ওনিদাম যে ভোগার সুঞ্জ আমা**া**-वक्षम कतिएवं देखा कतियादिक व्यक्षिक कि करिय "उट्टेगेरएन कून्रिक्टे मन्त्रिक शक्तान हर्ने व हर्रावरमञ्जू क्ये रमस्विकान विक् क्वृक्तिक आमर्गन कत्राहित्याह त् त्रीक्षम् त्वामा आहि भृति गाँक केद्रे उ नम्ख दर्शय मार्क्यमा कलिएकि "मजूदा निर्विद्यक्षिक मा व्यक्त वस जूबि खनन ७ वक्षविध क्षांबर्रकार्व कांबर का प्राप्ति वा दक्त के दि शामारित

व्यक्तिमा भूतामा द्वार्यमध्य नर्ष् । प्रक्रीकृष्ठ रहेत। यसम व्यक्तीय खाठक कमती कृष मृश्यक व शक्तकाम मांगशभाक विमात्रात वंशर करत फक्का कूकांगरक वक मुकृरखंडे स्कान्मी क्रामानारत ध्यकर्यक्ररण প্রেরণ করিতে পারি। ইডাাদি ৰঞে কাসতেং উল্লেখনে হাসিতেং আরক্ত লোচনে অভিরোধে ভয়ানক সৃত্তি খারণ পূর্বক দয়ামর দেব মুক্ষাহারা স্থীরাদে অপান্ধরনীতে ত্রিলোকলোক দেখাইলেন। ভাষা টিভ সৰ্গত সভানিকার দিবাচকু প্রাপ্ত হউরা একডান ছিল্লুই ভগ বানের বিধ্যুর্তি দর্শন করত বিশিত ও মৃচ্ছিত হইলেন। আনত্তর 🕮 কৃষ্ণ মহাত্মা মূনি নিচয় ও ভীত্মাদি মহাব্দনগণের স্তুতি তৎপরভার ্লান্ত্র হইয়া বিশ্বরূপ মায়ার বিভূতি সম্বনপুর্বাঞ্জনরপি চর্যোধনকে কৈজারণ বাহিতো নানামত সদুপদেশ^কসম্পুদান করিলেন ভাছাতেও সুবোধিত না হওয়াতে পরম ভাজন সভাজন বৈষ্ঠ করত তথা ছইতে প্রস্থান পূর্বাক কৃষী ও কর্ণ সহ সাক্ষাৎ ও কুকনভার সমস্ভ বৃস্তান্ত স্থবিধিত কর, ইরা দৈন্যপ্র সাহিতে৷ নানা বাহ্যোদ্যন কোলাছজে থিব।ট রাজ্যভার উপনীও ছইলেন। পঞ্পাণ্ডর সমস্থান বিশ্ব-क्ट्राम में किला भनामन मनर्भव कहा कार्यामधन विवद्ग वि**स्तादिक** ক্লপে আৰুণ করণ কাৰণ কৰাল্পন কৰোখন পূৰ্বক বিজ্ঞাসিত হইতে শিহ্রি কহিলেন নরাধন দুর্বোধনের অবাধাতার কথাকি বাক্ত করিব, ভে'নাছের প্রাণ্য রাজ্যা°শ প্রদানার্থে বিধিমতে মুরাটগাম কোন ক্রাইছীরত ১ইলনা অন্তর পঞ্জীন নাত্র দিতে কছি: তৎকর্ত্ जिल्लीकृष हरेन य पूक्रवाठीक क्राधाकांत्रिक जृषिक निव ना अदर नगराका-मञ्जूष्टानसङ गण वहे छ चूर्नभरमाकारम छेटिहा स्थल অনুভাএংই দুৰ্যোধন সহ নিশ্চয় বুদ্ধ করিতে হইবেক সম্পুতি ইহার প্রবিধান করছ। রাজা বুখিতির এবত্ত আস্মাত উল্লাচ্য প্রবণ कतिका कूर्याभावत मारमार्या ७ हाजूरबाह का बार्या मूक्कार्या क्षत्र



ৰইয়া কোপ পরতত্র প্রাযুক্ত অবশান্ধ ছইলেন, পঞ্জানন मानित्क करित्मम पृत्यीधम मृज्यव मृत्रम कर्व भूमः नवर्वभ्वित क्रेडिट चेक्कवर त्रामद्दस्य धार्यक् एछ। निकाध्य কহিলেল রণযাত্রার ওউদিন নির্ণর ও কুরুক্তেত্র যুদ্ধার্থে সপ্তা क्लोरिनी मनाभन्दक समझी एउ १ हेटड जातम कर। डिनि जीवश्चा चित्र था।। शुरुल रेग्वा क्रेडिक नरवान विराजन। বংশিয়াৰ সেমানিচয় নান'ল শল্পে স্তন্তলীন'ও চইয়া মচা সমারেছে গগণশ্যমী হছকার রবে পথী কম্পান্তি কাতে লাগিশ বাঞা স্থিতির উলক দৃত মুখাৎ ক্রিবগংখন বিপ্রভালিত বাকা শনিয়। जोबमाय के श्रीत के कहिएलम विमान्त्राव मार्च कराव र अवस्थे अक्तान ज्मिति काण विधानहें कर्द्धन पहेंचा। कर देश काक्याय क्रीक्क ৬২কণাৎ সুদ্ধান্তা প্রদান কবিধেন খনগুর মুখিছিরের অরুগ এফন ব্রে एक्नी, । अर महत्व ब्रांक्वन क्रिया महाव्याह उ बहेश, विवाद समाव उन्हिन कहे अब बारा शक काणि वसी ए जि.स.र काणि हनी छ याकितारि भागे ७ वव॰ इक्षायाक जन्मा धरावीत नमाहित्रव छ श्राचक मरा चाकोहिनी स्मा भर आगढ गहारकः १नाकास निभक्त কৃতান্ত সম দুন্দন্তি দৈন্যাবলী স**ৰ্যাহেত হ**ইয়া বিপুল বিক্ৰমে সিংহলাধ ' শত্যদানি জয়ুট্ডাদি বিবিধ বাদেগদাম করিতে ব।পিল এবং নহাঞ্জভা वाश्विक श्राप्तिक वीत्र किश्वति श्राप्ति नमस श्राप्तिक कुक श्री शर्वत युक् বার্ত্তা কাংগানস্তর দুই কোটি ব্রাক্ষণনিবার সহ উপত্তিত হইকেন। পুত্র গছ বিরাট মুপতি ও পঞ্চাল ব।ট্ ধন্দমু ধেরাক্ষরনার জনসেল मुत्रामम मृश काणीताक निर्वाची का र्राड मगाजूर नम १६६ न् मा स्पूर्व চতুলক সৈনা দলৰল সাহিত্যে উপনীত ছইলে ক্ৰোদর বীর একদ। শত্ত বৃংক্তিসম মহাযোগ শতেক ত্রিজুবন কঞ্নলে কবিয়া প্রমামোদে लात्याधि मणित्न निम्कामान इतेत्र। शंक्यक प्रमार्थादन कवित्तान अव

n মহদেৰ ক জৌলহীয় পঞ্চলুত অভিনয়া **এভৃ**ডি वेष्ट्रक, बह्नास्थ्य असीट्या आकृता मानामाध्याक्त कतिरंगम छवन् ार्थः करम आहा। पूर्विषेत्र मार्क्षाकः महारवारम **७ जा**कृवर्व अवश শুন্মানা ভূপবন্ন ও অসংখ্য সেনাল হৈছিলেকৈ সমভিব্যাহারে ওত क्रिया प्रवयात्री कडिरामन। केंक्ट शाखनताहिनी निवारि नगर स्टेटक ब्रिनकार बन्नक राजम भागानी प्रेमा समार भाग कुनाम सह क्षेत्रशास्त्र विगम्बद्ध इतिहा। व्याना शरक वृदर्वाधाना व्याकान वृद मानव देवहनिर्वाछनादर्थ कृत्रदेशका क्रिक छात्रना दावा क्रेनेबल আফোরিণী নৈরাধানকে সময় সঞ্জায় স্থানস্ভীভূত ছইতে আছেশ করি ফুল। অনস্তম গহানীর ভীমা ছোল কর্ণ কুপাচার্য। স্কুরিপ্রবা শক্লি স্কৃতবন্দা অখন্যাম ^{ক্}ৰোমণ্ড বাস্কীক ভগদত শলাৱাজানি ও অপরা পর রাজ্যুক্ত শ্রেণীবন্ধ শ্বেডাতপত পডকাপরিশোভিত দুলোখন क्षाकृष्टि गढ मरकामन्न मह क्लीन्न वाहिनी मरकाम मन्द्रा कृतिन एक - নক্ষে কণ্টুক সৰাশন শিরোক্স সংযুক্ত ও বর্ণ্মিত শক্তাজীবপতি সংহতি क्षिन्त्र प्रत्न विश्वक वक्षेत्रा प्रशासकाम व्यक्त अर्थ कांकि प्रत देशांकि ्रिक्य माञ्चीक गर्ना १६ टिक जांडक्य वाशिमी अर विवा मोसीयूड কোষওবাণ ও নরাচ অভ্যাচর্ণ মুদার ভিন্মিপাল পরিষ কুঠাব পর্য ্শজ্য ভোগর প্রভৃতি নানাবিধাক্স শক্ষ ধারণ পূর্বক রণ্ বিশাবদ বীর বন সংখ্যাৰ বাদভায় শৌৰ্যা বীৰ্যা প্ৰকাশপুৰ্বক দিংছনাৰ বীচনাকা काम अनुष्कृतिकारम ७ व्यवहानभीकारकांड्र वांख्यम बाह्रा भागारण कड वीकाक्सांकित कर्मा मार्कि कार्य महिल मार्थ मार्थिक मार्थ मार्थिक मार्थ मार्थिक मार्थ मार्थिक मार्थ मार्थिक मार्थ -কারবাস্থাত যতি সহস্র মন্তলেশ্ব ভূপড়ি উপ্লেছ পরি

रे क्षेत्रिक गाउरम्भूष्य, बास्तीक ग्रांका छै। गात्र जुर्गेछा वानवरमण हे है। म ग्रांका किन । ये बाल्तीक ग्रांकात भूख मानवका भडावृष्टित भूख कृत केरीब किनी ।

অলাদি পরিধান পূর্বাক বুছে প্রবর্ত্ত ইলেন তাইাদের এইকে রাজীর गर् बक्ना बरुख बङ्गादारी ও এত্যেক एडित वह गउंद व्यक्तिक দেনা ও ভদযুগত একশভ ধাত্ৰত্বী ও একৈছ ধৰি সহিত দেশহ কলক পানি দেনা ইত্যাদিক্ষে উৎঃ হিশাল অৰ্চ জ্ৰীন্তি বিজন্তভাকন হয়নি বজু ধীনহিব সক্তন কুটুৰ ও সঞ্চাপ ভূপনিচয়ন্ত্ৰকলা হোহত পূৰ্বক नमरव र दहे ज नक्षवां क वर्षक क्षापुत श्राह्म निवासी किङ **स्**तिर चन्न विनायम विशेष या असाम मरायण नहीं का**छ सँगरवा स्ट्र** সৈনা বাহেৰ শাম ভেষাদি ও ঢাক ঢোল বাদেট্যমে মহোদ্ধি क्स्त्रांभ ,जुला यह (कालांश्य केंत्र) १ व धक्या जिल्ला क्ष्म्यांन इंटिल क्षित्। अवद्यात्र प्रक्रिया विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिय নির্ঘোষ রুধির নদল, দেবা 😘 প্রাচীর পত্তম, নিক্রণাংক অব্ধান কল্প মান, দ্বিমুখ পেচকেব সে'বভর বর ও শিশুগর প্রশাসৰ দণ্ডহন্তে বুদ্ধ কুরণ সুক্ষের নিপবীত ক্লাধশন ইত্যাধি ক্ষমধল সংক্রক আবুত ব্যাপায় ছইতে লাগিল। বিভূব ১ক্টে অবস্তুটে বিশ্বয়জ্ঞানে শতরাই সাম धान मामुनाविक विनद्रव विन्द्रमन कृताद्व चक्क्क्काका गानन महिन भाकाकूरण राक्ष अन्य निक्रश्मादश छेशतमान भूर्यरक िन्हा क**वि**रङ माशित्मन त्य पूर्वेत सञ्जनाय पू क्या भारत दिलूक **भारताता**सम अ कामना मर्भन इ हेटल्फ् । जमानीयन बल्काम माना**ं अका** का ট্যনাম বাদদের কুক্সমাজ সনিকর্ষণে বৃটিভি উপস্থিত ছইছা বৃদ্ধার থাজাকে ক'ই-পন' কৃতকু প্রিশাল কর হইবেক বে হেলুক ৰূপাফলায়ত বশতঃ জীব সক্ত দুপ্সাচৰ এমণ করিয়। দৈরক্ত্র ফলাক্ষ আভি ২৬ মতএব টাবস্থাত কলের প্রায় কেইট্র शास्त्रत ना कि कहा गांव श्वीत मावदक्तियं बेक्स रहेय। उदर्भ দাংস হেতৃক এই সহায়ুংদাপত্তিও হইল। হে রাজন্ বিক্লী বিচঃ কৰ ছইয়াকি কারণ শোক কাৰ্যভেছেন ভোষার পুঞ্জপণ এই সমরেই निभाजन इडेरबन बाँग भुका च का कुष्ट्रवादि तथ ७ तथ पर्यन करन श्रीसार्गंध

হয় তবে ভোনায় দিয়া চকুচ প্রদান করিতে পারি, তাহাতে অজুরাজী क्रेंमी विश्व बीम जन्मधिमक किहिला, उपनंत मृद्धे बीक्क सूची মধ্যে এমষ্ট কোন হাজি ভাছে বে আত্মকুল কর প্রাধে সহাতা করিতে পাঁচর িক্লভত্তর আত্মনঃ প্রদাদাৎ প্রবেশ্ট প্রবর্ণ করিব ইত্যুক্তানন্তর ভীছার চরণ হারণ করিলেন। সংযি ব্যাসটোব লোক।মী কবৈক চিত্ত। काक मध्यांक जिल्लामक्त वाना मेर्ननार्भन करा पृत्ताकुरक कहिरमान ने अप मिना एका धाठारक छे जब शरका मा बा नक कृतिया ভোমার সমক্ষে অহোরাতের বিষয়ণ দ্বিতারিত ক্লপে ফহিবে। তুমি গ্ৰহে বাকিয়া দৰ্মবাৰ্দ্ধ। প্ৰাপ্ত হইবা পৰ্যন্ত দিবলে ধূৰ্যকৈতু ও নক্ষত্ৰো ময় এবং আকাশ অগ্নিবৰ্ণবস্কাতি ও পৃথিবীতে নিৰ্ঘাত উম্কাপাত ও धन पश्चनी छम्दा एनर लागिड वर्षन देखानि खनकन्छ क्वन ভোমার বংশ নাশের কারণ হইতেছে ইহা কহিয়া ব্যাস স্বস্থানে প্রস্থান করিলেন : अञ्चलका अन्तर्वि अञ्चल अन्तरवाहुत्म अनीत শোকার্ব্যে নিমাঞ্জত ও ও বি অফল অংকর্কে গতিত ও বিষামিত রাই লৈন। পাৰিগ্ৰাহ ও পুৰোগ।ম' 🐖 শশু:ম'ড়ি কংল কাবচিক। ভূপতি প্ৰাস্তিকে সইয়। হতে নী পৃথক বলবিনাস করত রাজা ছর্ফো। धन धनः दा रिम्ता मनाथि । गर मानत्मे समित्र उ रहेग्रा कालाउक কালতুলা প্রবল্ভর জোণাদি মহাযোদ্ধাগণকে সম্বাধন ক্র্যনিভাবত জীপন त्मव अरम आविशांख शूद्रामद हार्डेन्ड मुक् क्रिनाशक श्रम व्यमान कतिरंगम । विकीतंकरन शांकु अन्तर पर बुद्ध सुरी परेव विकास महा विक्तं हरेहरूमा । एरकानीन जीवानव अर्थका मरबाधान चासाछि आह अवन्त्र अमित्र के व्यानिक के नुसंस्कृति करोठ चनामि नगर

ক্ষিত্র চন্দ্রবংশীয় কৃষ্ণাকা বহুরপাকন্য। প্রাপ্তার্থে স্থরভিবচনে ইন্ডিনার উভরাংশে সর্বভী তীর্থ উপবনের উভরে ইন্সার্থন। ক্ষাট্ড বছরপা প্রাপ্ত তন এবং ইন্সার্থর ঐ হান পুণাডীর্থ করুপে ক্ষুক্ষেত্র সংজ্ঞা প্রাপ্ত হয় স্বধ্যাপি বর্ত্তশান আছে।

在在1000 ml day amagit a statement share " d aman. विकास के भरकारकारे सकारिक्ष ने एक विकास के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स कथन श्राह्म करिय ना अवर निवय श्रूष्ट्र बहुत्यत त्रवी ,शर्मा हिंदु वृक्ष चन्ना, भ्रमभाग वाकि गर, युद्ध, ब्रह्मेयक। क्रुक्त मी शुक्रमाह्य नेते प्रय निकालन वरेन्द्र। त्य पूर्व्यस नर्कान्द्रः चृत्र्विववर्षात्रकानं, स्हेर्तनं, ५०क्काः बरनारशको कतिय। " व्यन्त्वत व्यवशंत्रन वारहेन कृष्णे १०वर्गी व्यवशं मक्ताव वृक्ष्याव, कविया क्रकांचन पहन्त्राहिनी रामांशन छ प्रकृति क्रीय ब्बेद स्थापिक अवद माञ्चा छ वहेदन मामारा नहात कथा कि विश्वित প্ৰয়ন্ত্ৰৰ ও সম্ভয়াৰতে কাতৰে কম্পিক হঠল। চৰ্লোধন বিভাগ হালি नमजियाशास कपर मक कप्रक कुम्दकता छैननीछ दरेश कुसंशत्य শান্তবাক্ষম বিস্তাপি ভূবিতে প্লবুদ্ধিতি কবিংও প্লপণিত পৃঞ্জি সংখ্যা द्रथ विश् गम वामी अञ्चित्र आगत निक् गम गर्कान कगत्रवित स्कृत क्षरीर बाहाक क्षरन मकि इहिन सा । देविशूर्स विस्वहासन श्राप्तह বাহিনীঃ বৃষ্ণকোত্তের গ উল্বরাংশে ব্যাপিত। ক্তি করিয়াজিলেয়া, ক্তি कुक्रवेनमा वेश्ववाकः क्रेटण शास्त्रका व्यक्ताव युक्तावर्ष क्ष्युवासूद्धि व्यक्तार्थ्य प्रश्राविद्वात मुक्षावतात वर्षेत्व कृत्रवात्त्रात श्रीविद्वातिहास् बहेदलान। ब्रांका पृथिषित निशक शरकत हैनदावन वन ब्र्ंटके हिन्दू ब्रोदा भ्राप्ता पृथ्य तक्ष्य जातन कतित्वम् । , ब्राप्ता, किमानास्त्रम् প্রং " রিনি শাস্ত শুদ্ধ স্থান্তাবে অধ্যক্ষে রন্ধ্রানে শর্মক্র রন্ধুদ্ধানে দ্যাদির প্রতি বতংশরতঃ সর্বামজে নেত্র, প্রাক্তাল করিতেল নেত্রী

^{*} কুরুক্তে (স্থানেশ্র) প্রবেশ দিল্লী (স্থানিশা) ছাইডে ক্রিক্তি ক্রিক্তি কর্মান ক্রিক্তি কর্মান ক্রিক্তি কর্মান ক্রিক্তি কর্মান ক্রিক্তি ক্রিক

ভিনি বহাৰত পৰানাত ভীৱ বহালর প্রবার্গেইণ পূর্বক নিজকলে विकृत्यम क्षेत्रिं केंद्रक नमें देखींगार्थ जिनानिक देदेशे भागूनकीन निर्देशकरिय निर्मात नेतुलिएक इंदेरजेन दा क्रीदात चलके विलक नर्क नैर्देक अंकशांक दिवंती जेन्तु कि "नक्षनेटक क्षेत्रक प्रदेश कथा। दिश विभक्त रेडरेंजने बडे अक्नाकि वावसीत अवुक्त नवूस व्यक्ति क नीतिकोर्निक करेता वंजवाक कृष्यंत्वे कविश्वाम त्य बतावत वार्टात পুঁজে পুন্তরাশ পরাজিও হেতুক লক্ষিত্ত হউরাছিলেল এবড বলবাল कींश्रमें बर्मार्सित माना द्वि कार्रस्तु भीषा किशास माहे कार्यक कीरीत गरिक वर्षा मना चूट्यामाचं त्व देशक वर्षा का दावामामा ও কৰিতীৰ সহাধীর ইতি চিত্তাক্ষত পৰপ্রজে কুরুইনমারেছে ভাবেদ ইটিয়া ডীত্ম যোগ স্থাগর শহাবিষদ্ধম পূর্বক ভৃতাঞ্চলি পুটে কাছ জিতে তাৰ করিতে লাগিলেল' ডাইারা থর্লের প্রতিদেশ্বত হইকা ডিল संक्ष्ये बानीर्वष्टम भूक्षमत्र यंत्र क्षेत्राम अतिरागतम खराजीर्थिमक इदेरवक बदर फाहित्र कार्रियन मिरहार पूर्वक ना आवकती हरेगा। কর্মনার উক্ত করিকের যে ইছ সংগারে আপরার দিবের অবজ্ঞাখাক্য कोर्स क्रांत इरेटक्यमा चल्या चामीसीम क्रमामार चममारे संबी ছইব এডজ্রণ ভাগা জন্মিল, কিন্তু অরিদ্যবার্থে অব্যালয় কোন ক্ষমতা নাই বেখেতু চলচিত হুৰ্বোধন নহাবল পরাকার বোভাগুর भरत्वछ इत्रेश कृष्य आवर्ष प्रेशास्त्र-विध्यवक पुर्वत्य प्राणनाता महात्र इतेत्रारक्त करे मकल कमकाया गालात मर्नाम गर्वामे विदे। अस वहार्क्ष महाद्व क्लीवन शाधन उपवर्णकारे नन तुपामानित पूर्वा महेश मार्च क त्र देशांबीर त्यवन उद्दीत्रय अत्य ममुक्त हरेशांवन देश त्वर महत्वत्र विकास कांग्राम कहिएक एवं अवेर मुखा मनर्थ एकेश क्षेत्र व माखदा अदबर्ग कृत्रक ब्रांकाशिक नाजवाका लेतिकान कहिएक एक तका जीवापि नशाबाबत पूर्विकेता विकासमा लाउन वैर्वाचिक

वदेशा कविरागत गांपूर धर्मकृत्या,व्यागांत्र क्रियर गुक्त प्रश्नेवृत्या गुक्ती-मूला जार नहुन्त सहरू ,त्वांव ७ मा ষ্টান ভোষার দৰিভ রবে জেছই দুবর্ব চুইবেল না কার্ন ক্লোচন্ত্রত नुष्ठ हिन्द करो धर्म नुष्ठाव ब्याह्यमं बाढ्यव गरायम् खळा सुरक् बाह्य इक सरक्रकाः, वर्षाः रायास्य धर्म स्वृहे यासहे हुक क्ष्यः स्वृत्रास कुक का बारमहे क्या दरीहरू। हेंगाबि करवान क्वाबुद अधीनवाम उप। स्टेटल नि वर्ल स्टेश: चोप्र निविद्ध क्रांकानवन कानीन खेरेकानूटक ঝালকেন কুরুবৈদন্য মধ্যে বার্তারো জীবনেক্ষা করেন ভাঁছারা জীক্ষণ দারনিকে আঞায় দউন যে হেতুক তাঁহার আঞাত বাজিয়ু কোন পুলে কথাপি শক্তা ল'ই ৷ বুখি ঠানে বাকো পুৰুৎস্কুত্ৰাল্প স্থীৰ সম खिशाश्राद नक रेजना नहेना कुडाश्रांन वसून शूर्वक श्वीद्ध विदयमन করিলের হে ধর্মাধিকারিন তব শর্বাগত হইলাব সম্পাত জেবল চট্টা বুরারি বর্ণন করাইতে কুত কর্মে হুই। রাজা বৃধিচির বিপক্ষণ সংখ্য প্ৰস্তুক্তে প্ৰথন কৰিলে স্বপকীর রাজবর্ত প্রস্তাস্য আন্ধানবর্থ সক रम्द्रे प्रवर्षक इटेरनद अद्दर क्षीयाक्त्र्य बरात्कार्य निकास बनस्के ब्देश इकअबि कव्यानन ए एत निश्च ननावासः। याज्यत দূপবর কোনু বৃত্তিকে, ধবন, করিলেন ড়াছা কিছুই বোধবৃদ্ধ ছুবু ৰে হেছুক ভাষারই বিপরীতা বৃদ্ধিতে সাক্ষাধন ভাগে ও বনুবানা দহায়ংখ সরেণি কৰিবাৰ অহাসূত্র হর,বেই স্কীরাই আন্ত্রে बहेद: वहे अवृष्ट्रि समित्राह देखाहकान वाकात काहि हुनी पूछ २२:न श्रीकृष महागा यमान विश्वत सर्विद्यान हुनु , मामका करि उसा धर्मी होता गलम वर्षक नाम , नंदाना मक्कशासक्ती प्राप्ति अस्ति निवानीकृष्ट । क्षमात्रन द्वापूर प्रशास वर्गा नवर्गान महत्त्व मृश्य

State

क्षेत्र दिवासिक क्षिकिशि मधिनेत्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र । विश्विक । विश्विक क्षेत्र महिन्दिक पूर्व स्वामित पूर्व स्व क्षरीनित नीहिंद पूर्व के वे केवर क्षेत्र क्षेत्र क्षीरिक भौत्रकरेर्व केंग्रेकील क्षेत्रक क्षित्रक क्षेत्रक्रिक देव विश्वपारि मैशकरेनेद्र आर्ड घानुनी कहना अर्कीन कीट उन्हें क्या कार्य किली किलीधन युवूर केंद्र शर्यन केंद्रिक छेशियक नगरित केंद्रिनेगे छत्र मिनिक कार्रहाई देव विकासिकारम के शाम गरिकारम जेना (विकास के तिरिकास पर दे निजामहर्वत सर्वताज तमकाल अमार्शन अमार्शन असके कि बर्जन केरेड निक टैनेना महेबा देखें के कलाने हैं है है है विदायन मिक्री के कवसन कराने : र्छर्द केंद्रा केंद्रित केरिशनन वृधि केत्र किंद्रफमेगार्थ बार्गिया कालामिन मैंबर्स मंबुबीवकार्ण क्यादानी क्राजांच भूकेक मर्स मिकानम मेडिबर्स क्रींबरक अन्दीन हिमक्त कर्तर इंगीडण बँठेर क्रिन क्रिके बानक नहांबंदि देखिद में विदेश निवास देश कि कि अपने पूर्व विकित्व के नर्देशाविक में देशांन पृष्ट देव में मितिक कारने रहिलूक द्भारती कि के के किया के अहिनी है गरवर्त महबालत एकेटेक के कि है कि द्वाबीत केंग्रेट कुछ काम कता छेटिक ग्रेट कंग्रेस काम र निकास कुणि विस्थित करिये के कार्क कार्क में दिया चेता छह हुन गरेत कि ति की मि क्षिक शिक्षिक निवास देशियक मा विवर छेल्लिक शहर ए ए ए है। अध्यक सिविये स्थितिक विकेतिक विकेत क्षेत्र क्षेत्र क्षणाला करण हिरा किर्माहित निर्देशियदेश वासिंग निर्देशिय करेगा करिना मानमान किनी अर्थ में में के के किया करें के अर्थ के में कि में कि में कि में कि के में कि के बर्मत वर्षीमनारिकी हिनी देनगानी केनी देवेरे शास जान किन के विरामित के बारिय पीन मनी महायोग मुनाक के किन कि किन क्रिके के का जिना विकास करिएक साहि विवर द्वानीकारी शह किन

নিবলৈও কৰিবির ক্লিক্টি বিন্ধু ও জ্বোধনুত্ত ভিন্নত ক্লিক্টি নিবলৈ কলিবির নিবলি কলিবির ক্লিক্টি কলিবির ক্লিক্টি কলিবির ক্লিক্টি কলিবির কলিবির

শ কৌরব নহ বন্ধার্থে কর্নের গ্রামন ছইবে ইতিবার্ডা প্রবাদ কুন্তা দানুলাভারে কর্নের বুল কা ল ভংগাকাতে কিছিলেন। ছুর্বালার দক্ষ পর প্রভাবে প্রত্যা, প্রান করাতে উল্লাপ্ত সভ্যান ভৌনার কিছিলে কুটি কলি লাভ প্রাক্তি প্রতি হালাছ অভাবন হৈ প্রতা আলার ক্ষারীকালে কুটি কলি লাভ প্রাক্তি লগে ব্যালা কি বিলেনি প্রতি সাজন করিকারে কেলের ভালাকি বিলেনি বিলাপ করাতে নিজ ও বাধান্তাতি কর্মণ প্রকাশ করাত নিজ ও বাধান্তাতি কর্মণ প্রকাশ করাত নিজ ও বাধান্তাতি কর্মণ প্রকাশ করে প্রতি হালাকি ক্ষান্ত করি ক্ষান্ত করাতে নিজ করি বাধান্তাতি কর্মণ করাত করে অপর চতুত ভোকোন উল্লেখ্য করিবলা না ভালন ধর্ম ক্ষান্ত ক্ষান্তাত করিবলা পাজঃ আলার ক্ষান্তানিক না ভালন ধর্ম ক্ষান্তানিক করিবলন প্রতাশ আলার ক্ষান্তানিক করিবলন প্রতাশ আলার ক্ষান্তানিক ক্ষান্তানিক করিবলন প্রতাশ আলার ক্ষান্তানিক ক্ষান্তানিক করিবলন করিবল

क्षातिक वर्ष कांग्रव कसर्। क्यांविष कुक स्वेदन कार्य कींग्र स्वीदित ्रीतिमार नाम्नी मञ्जून साम्भूत त्रनीय कन्त्रवद्भाष् समाध्यत्रक्ष मुहार्कीय विभाग (पाक्रोपन मृष्णानका क्रियानक प्रक्रिय अस्टर क्षं काम अभीत क्षानामुद्राम्बद्धाः स्ट्रीकास्ट्रीहाना व्यक्तिक अस्ट्रीका कुष्टित कृत्रवाकात स्कारक अस्टिताय हा विश्व अस्तिमानाकिक बनन कतियां कार्या क्रियां उरे या प्रश्नित स्था क्षांत करित । अहे सामान ज्ञानांक ब्राह्माह्रमाण अंतुक्त क्षत्रमञ्जू परबाद राथ परानान अवसार्य मिन्द रक्ष्मकृतका महक श्वयंत्रा बार्ड क्रांस कहारे व्यावस्त्र, वर বিধ পেট্ৰৰাৎক্লিকান্তিত বাকো ও ক্লৈক্ডাৰে ভানিত ছইয়া প্ৰবাদ मुक्तान सुक्रमण्ड्रीय क्रेगीडिंड स्टेन, सहस्रक्ष शृज्य स्पूर्ण क्रिक नवाबवार क्षत्रिम् मक्कुव प्रत्य कक्क्ष्रत्यात्रिक प्रवत्न क्षतिक अरह । शतिकार माचित्रम भाषामान कहिन्ना कशिन्न भक्ति जिनकीत शुक्ति पूर्व विवर्ष हात कार हुर्द्धापम समयकारन केन्द्रम भूत्य प्राप्त कवित्य - प समझक माजवर्धविक्रमणनाम मृजिश्वसम्ब नामक वनासन वासन व्हेन । हर आर्थ (क्या अन्यास वर्षे पहिल्य शास्त्र वा क्षर, (क्ष काम आरम् शास क्राप्त, ताम देव तथनात कर्षा क्रमात मासववर्ग शूनार क्या तथ করত আশেষ ক্লেল ভারী, হয়, বেছন বেহিপ্প কেহবায়ন করিয়া क्षोबार क्षोबर महावया क्षायावयह क्रमायह नहिवस एक फाँगरक युरी विषय कथान त्याविक एरमन सा ब्रह्मण चनिको स्वय- विवास चीर Men mein von at menne ble wert neuer beid fewen winnen क्षाह, त्रवन त्याहरू कीर्य कार्य नविकाल, कुर्वाक, खुक्त, यक्ष नविकान BER. CHE NO WHENE MURRE BRICK MENN WARPERINGER PRINT ब्राइय कंक्य कि कात्र कृष्टीकृष्ट हरिया क्रायानपूर्व गरवणतरे या करि con fore no nature affet fem differation, ferenceste र्बन लाटक बायक्य दिशामान जाटक कामा मक्टलरे जायात मुर्कि एव

नुरक्तर नरशा क्रमंभ से नवीप्र नरशा संबोधनी ७ क्रमं ७ सूनि नरशी न क कलिका क रमयमदेशी रमयद्रीक क्यर रहीत्राव्रविरमत मरशा श्रीमि भूमि সহাদতি ইজানি ক্ষমন্ত কৰণ্ড ব্ৰহ্মনিক আবাতেই ব্যাপ্ত আৰ্ট্ৰি। जुर्क मानाक्ष्मात त्यांग क्यत्मक क्षम्यांन अन्यमद्द्याय मा क्योरि अकि क्रिएमम सम धमक्षत और स्मानिम्बद मृत्यं र सामाकर् अव्यक्त দইনীয়ে ভাষা সভা বোধ কর ভূমি কেবল নিমিত্ত মাজ হও। স্বার্থ ক্ষিলেন প্ৰান্তে বলাপি দেই দক্ষ বাহিনী প্ৰভাকে দুক্তৰ ভংগ সঞ্জ आर्टन खेंबाह एवं छाराह स्वांज बाह्य मार्ड पानदा जिल्ल मधानाहि কে দিবাচক্ষু প্ৰদান পূৰ্বক আত্মদারীরে বিশ্বরূপ দলন করাইলৈন জন্দিং त्मवर्षमञ्जन चाकारण कार्णहरून । त्रवि मनी हर्षे हकू । मुख देवसी নর ও ভারাগণ মন্ত, ইন্তা বেববাক বাছ। ব্রাক্ষণ খুদর মাজি' পিছু गृत्के बद्धमय । मणनिक अञ्चां, शांकाम इत्रः, टेमलवन **व्यक्ति, व्यक्ति** লোদ মাংসরূপ ধবনী। ইভাত্তুত সমস্ত বিশ্বসাপক বিবাউভূর্জি ধার্ম করি.সম গ্রাহাতে সকলেই বিশ্বিত হউলেন,। অজুনি ভগবানের কাঁই অভাশ্যবা ভীৰনাকৃতি সন্দৰ্শন কয়ত লোমহৰ্যণ ও ভীতি যুক্ত চইলো नात्रीयन विखात वाम वामान भूर्यक उपछात्रात व्यक्ति क्रकालक मेर्स নীৰিনী হও পণ্ডিত কেথাইকেন ভাহাতে অভিলয় লক্ষিত ও চন্দ্ৰভ আনে বিন্দুতাৰৈ বছতর তাৰ করত পার্ব উত্ত করিলেল তে সন্ধানংগীয় ব্যাপক জিবলেশ্বর রিকো প্রজাধি দেবপর্ণ ভোষার অরম্ভ বীহার্ডা বর্ষ নাক্ষ হয়েন তাহাতে আদি অভিমৃত নরফাতি কি আকারে স্থালঞ্চ পাক্তি দীমাৰ মন্ত করিতে শক্ত হ'ইৰ এবং অগরিছিল নিয়ন্তনেই অপার মহিষা সধাক স্থাবিত হওনের ইবা দাখা কাহার আছে স্কম ম্ব্র আসমুক্ত অর্জ্ঞাকে সান্ত্রা করিলে তাঁহার প্রভাঙেশিত থাঞা ক্ষতীতি পূৰ্বক পরধ কোঁতুকে ধছৰ্বাণ এছণ কয়ত পঞ্চৰ বিষদ দাবৈ व्योत्राज्य नमेत्र कतिरमेन छाकारण विशरकत्र नर्थानिक देशका क्याहिक

হাপুৰ্ত প্ৰণৰ ভূবি পঞ্জিকানিকা। জীকা এতিকানিকানে কেব-कृष्य अकार मेल हारख है जा निभन कविश्व निर्मित्त अवगानर्श्वन करवन। को विश्वान्त्र पुरक्ष क्रीयारीत.वंदा तकारश विश्वक क्षत्रक्क पूर्वक व्यवकार कर्तिक जिक्कामान प्रकृति । तक्कान पायक वर्गरको पर्कानानि গেলের প্রিয়াগে করত দিয়খী এইকেন বিশ্ব জীন কনিব যায় विक्रक विश्वकारमध्य पीकृत स्वैत्री बहायरक मेररम मिर्वतकत्वात्रकात मानद्रकाकारक कृत्र विनिधमान्य अञ्चलक प्रकलाक श्रक्तक चौरानशिक्राचा प्रम कतिया मुरेक्सरकः विक्युद्धान्त्रकः अन्त्रः कविस्तानः। अवान्त्रकात्रः केन्द्रः न्यम्बर्धं कावशास्त्रः जीवा निर्देश हरेशा वरानमार्गतः निमग्रहरेशा उत व्हा<mark>मङ् श्रुद माहक्ष्यभूभूश्रकः भावतं धमावास्मरे वि</mark>गाः वन इसना याणन क्रिकान् शास दानानवानकारमः मुक्ककियाः व्याक्ष्यानन क्रकः त्यापन वृद्धकुन्ननवरुष्ट्र दक्षि निभाउकद्रल व्यक्तिम्ब क्रिकाम । सम्य শ্বিষ্ঠ তীম বিষ্ণতি গ্রহণ পুরাক তথানক লে করত পদাঘাতে কোটিং कुर्द्धरेत्रता 🙉 गाउ भारामध्यम् क्विक हाकारक निशांत कहिएका केलाकात् क्रोध प्रवाद्य क्रिन श्रवानवाम् अस्तन रहकूक भनात पूर्वस्य कृतिक अवस्थादश्रीक हरेन। अमाश्रि महे वृदन दारांग अकस्याकन केर्र भर्तात्वाकात्म वस्त रहेत्छ। इ. कीच्र वर्ष्क् माम विक्र करत प्रमा क्रिक्रा बुचि विशास कडिएलन । तन नित्रख बुदेशन नरमात्र मात शाहि नुक्रमबुश्राद्य महरवृक्ष विक्रमानः क्विलाम् १५ कना कि अल्लाहि अन् স্পায় ছাইবেক সহলের কার্ক উলীরিত ইইল ছর্রোধনাদেশিত बुक्क इरेबा लिखामहासर शहबानि जन्मनीम श्रमकाछाहरू विना भार्य अञ्जलकार मीयज्ञ सहेत्व महाकान मरखक शकवान नहेगा चित्रिक विद्यारत अद्यादिक कित्रा हत देखिनात्म ताका पूर्विकेत চিন্তাৰ্থন আগত্তখন। ২ইয়া বছবিধ বিলাপ করিতে লাগিলেন অন द्विप्रश अकाम भूक्षक लाइकमुक लाधवकून तकारण मास् हि

करन भवागांत्रिक नमजियांहाती स्वतंत्र हनती बादा जैक नक्याम व्यान प्रन निविद्ध प्रदर्शाधन निटनान भेगन कहिनी पृत्रवैद्धि उपनेनीदेश সংবাদ দিলেন ৷ মাজা ওৎক্ষণাৎ অক্সুলকে আজান কয়ত লিবিয়ান্তঃ পুরে দিব্যাসনে ক্ষাইয়া জিজাসিকান ছি কুছতু পণ্রাত্ত আগত হইরাছ ভবাভিদ্বিত রিষয় বাক্ত করিল সমূবি তারঃকরণ কবি नवत्व मत्नाइथ मेन्नाप्तमं कितियाः अञ्चल करितानः शूर्त्व यथन আমরা পঞ্জনে কামা বনে অবস্থিতি করিয়াছিলাম তংকালীন অস্ম माब्रित महत्ताम आश्र हरेया इति महिश्रातम अज्ञानाम व्याभनात अपू रेमचर्या अपूर्णन कताहेवात निधिख उ जीख जान वाजीउ नर्कायाका ও ভূরিং দৈনা সাহিত্য সুসক্ষীভূত হইয়া সৰাক্ষ্য পৌরক্ষনে প্রভাস তীর্থ সান বাতার সজ্বোষণায় ছলতাক্রমে গমন করিয়া ছিলা। গৰ্মৰ বীরববের চিত্ররথ ও বিবিধ বিচিত্র পুস্পাদিঘারা বিভ্ৰিত হারন্য প্रতেশাদ্যান ভঙ্গ করাতে তদান্তা আবন পুরুষ্ণর গল্পরিরীয়ন প্রতিলিক হইয়া ভোষার সহ ঘোরতর সংগ্রাম করিল ভাহাতে কর্ণানি মহাযোদ্ধা গণ ভাছাদের অমহাত্রে ব্যথিত ও পরিত্রাপিত হইয়া রর ভক্ষ ও জাতত্বে পলায়ন করিকো গড়ার্ফা নিকর কর্তৃত স্ত্রীগণ সহ বন্ধন এস্ত हरेबाडिना मही महात्र नशक्ति वृक्षां ख्रिया अमुधार खंदन कर् রাজা যুধিতির দেবের আদেশান্ত্সারে যুগাদাদির বন্ধন মোচন ক্রিলে সমূহ পরিতৃট হইয়া বর প্রদানে স্বীকৃত হইয়াছিলা কিন্তু তদানীবন नमग्राञ्चनारतः मम नैरनाजिनाचित्र वह आर्थना हिन अउधव महाबुक्ति খদা সেই ৰাঙ্নিষ্ঠাছায়৷ সভা পালন করত ভোমার মস্ত হ মুকুট প্রস্থান कता इर्त्याधन व्याभीत्व किती है व्यानवन भूतंक नमर्भन कतित्व অব্যাদ সহযে শিরোপ্রি ধারণ করিয়া তথা দুইতে, ভীগা সমিছিত रहेरन उक्षे इर्स्याधन काम जिनि कहिरनन वहनिमानजा रहेगारह

मात्रीयनि ।

এখন কি হেতুক জানিয়াছ পার্ব ধ্যারামনে উক্ত করিলেন হে পিতাবস্থ শ্বহতে পাণ্ডবর্গণ সংখ্যার ক্রিয়া রণকায়ী ভূইব পাতএব সেই পাণ্ড সহা কালবাৰ আখানেই দিউন। ভীক্ষণ দ্বদান্যলো তৎকণাৎ দহাকাল चाला काम चत्र नवर्णन लतिरंग धमक्रय विश्वम शुक्रकांवित हरेगा अहन করিলেন। এই সন্তে পাওবলিগের মহাভাল দশিক বিশিধ প্রান্তি ৰম্পান জনা হংবুট হইয়া জীকুফ কপ্ৰকাশিত হইলেন ভীতা ভাঁছাকে নম্পেশণ করত অনিবার্য প্রতিজ্ঞা ভাগ হেউুক মনোছুখখে সাতিশয়া সহাতায় ও ভাঁহাৰ আশ্চর্যা চাতুর্যা কার্যা ধার্যা করত সমাক্ প্রকর্বে ভাষিত হটল ভালা কৰা ভোনার প্ৰভল্প না করিয়া কলা রুণ ভল্প দিব नो देशीये भूनक्रकीकांच करिलागा, भ्रमखंद कीशी एक्सकार १३ धरेगा সক্ষিত বান্দে তীহাকে সায়েলা কয়িয়া তদ্ৰতে ই অবৰ্চুন বহ ঐ মহা কাল পূৰ্ব কে এইটা পাশুৰ পিৰিৱে প্ৰয়াক্তিৰে ভীছাবদ্ধ মৃত শ্ৰীৱে व्याव रुक्षात व्वेत । अकेम प्रियम अलूल काटन त्रीय जुरीहरात्वाहेस পুৰ্মক দিবাৰ বাণ আচৰ কবিষা আনৱৰ পৰে মহাৱৰে প্ৰবৰ্ত্ত হইয়া সন্ধাপর্যন্ত অনিত্রীয় তুমুল সংগ্রাম করিলেন ভারাতে विशासक काहिर देशना विनाम इटेट सांशिस बेबर छोट्टी দ্বিওণ কোপাত্মি প্রাঞ্জিত হইয়া সংকালে লিভকানি বিনিধ বাব বিক্লেপিত হইক তথম পাণ্ডৰ পক্ষের কোন যোদ্ধাই ডিকিডে পারিল বা তৎখিনে মহার্থী সকলেই ভীত ও অসমাবিত বংগাঞ্জ সাহসে সহনঃ সন্দর্শিত হইয়া সর্লুধ রণে বল বিজয় প্রকাশ পূর্বক বৃষ্ট পরিভাষেও বৃদ্ধ কুশল হাইতে পারিকেন না এতজেপ সংগ্রাহ मैंबरह १ महर यक्ष्यीत छीटबंद श्रुडीकुर्यावाराङ आफ्रंडन इहेटलन खदर কৃষ্ণ শ্বীর কত বিক্ত ধইর। অনিবার্যা প্রহারে অন্মরাত্যকরণে भूतर भूत विभिन्न विषुत्रहिक् क्षेत्री किन्बाक नावाबित नाव महा জোধ বিশিষ্ট কল্পিড কলেবর সঞ্জিনংকারক পুর্বিধারণ করত কর্ম

বোদ্ধা সাক্ষাকে রখন ইতে লালাঞ্জানা পুর্বক ভূমিপতিও হইটার अक्ष अहत मुझ्डमत्र कीया विमाणादर्य श्रावमात स्वेद्रमें । जीया उद्यक्त নাৎ পর্যাসন শর ভ্যাগ করির। মৃহস্থরে কহিলেন কৃষ্ণ পূর্বে প্রাক্তিজ্ঞা করিয়াছিলা বে ভারত যুদ্ধে অন্ত ধারণ করিবা দা অদ্য কেন পাঞ্জে লাহাৰো ৰাগ্ৰ হইয়া মহাপ্ৰকোপ ৰশতা অনিত্যচিত্ত জনা কুক্ককুল निः म्बार्स् अवर्छ रहेगा यनि हर स्मनाक निहरलक रहत गम् वाका প্রাহণ্কর ভবে এইক্ষণেট্ আমাকে সংখার করিয়া নশ্র সংগার সম্ভাগ হইতে বিমৃক্ত করত কৃতকার্যা হও। কিয়ংক্ষণ গতে আর্জ্রন চেতন পাইয়া এবস্তুত অন্তুত কোধ দৰ্শনে বিশ্বয়াবিষ্ট ও সংগাৰে কৃষ্ণ কর গ্রহণ পুরংসর অসীম রোবোপশমন এবং রখোপর্যারোহণ করাইয়া পুনষ্জাইন করিলেন ভীমত ধনঞ্যকে বাণে বাণিত করিয়া পুর্য় বন্ধশ সহজ্ঞ সেনা হত ও জয়ধানি, করিলেন। নবম বাসরে অব্জুন जीत्यात छथा अन्तर्गना तथि शत्रत छत्रकत भरपछि अरधास्य शत्रम्भन বিপক্ষ পক্ষের লক্ষ্টিসন্য কটাকে সংহত হইতে লাগিল ও অনিবার্কা नमत्त्र नमल त्याक्षांहे क्रमणः दीनवीयां ও अदेशयां इकेन धवर व्या পদাতিকেনা নিচয় সমস্ত দিনবাতি অকান্ত যুদ্ধে গুতুত্বত ও কত বিক্ষত জ্লিতাক হইয়া কেহন পৰ্য্যবসন্ন কেহবা অত্যন্ত কুতৃ কা প্ৰাযুক্ত অধিকতর স্থাতিল স্থাপান করণানন্তর বাক্ শক্তি ীন হইল কাছাক জনকরত অনিবারিড কলেখন ইইয়া ধরাপতিত মাত্রেই শুমন সুঞ্জ বাইতে হইল। রলোক্ষতিত বিকলাজ সেনা শ্বায়ের অঞ্চ ক্রিক্ট শোণিত নদীর ভয়ন্তর শ্রোভঃ প্রবাহে পতিত হইলে চামুগুলি দেবী বোণিনীশ্ৰ সঙ্গেলইয়া সেই বেংগ প্ৰবাহিতা বক্তাকা ভটিনী সুনুষ্ঠি খর্ত্তিনী হইয়া কুরুক্তেরের ক্তিম বৃদ্ধেত্তে ক্ষয় প্রত্তু প্তিত মুদ্ধয় খালা এছন প্রক পরিধান করিলেন কেছ বা কৌতুহলাবিই ছইছা क्षेप बंधर एउनई नक मूछ अहन कर्ने वर्ने क्रक स्वत्र । स्रोहेन

मात्रावश्चितः

করিলেন ৷ কেংবা ধর্ণায় ফাইয়া মহাকুর্যুহ্নে শোণিত পান করিতে काशितका हे छानि, अनुकृष कालादा बालिनोबन निष् कृष्टेल त्युव नम्पूर्शत्त्र जीव वर्ग मध्य प्रश्नि क्षित्रम्य अ कृत् भयाधृति क्षित्रमत्। অনুভ্র ভ্রম্পান্ত শন্ত প্র্যিতির সহোবিপ্রচিত্তে রণসক্ত। পরিহার पूर्वे के छक कहिटकेंग रह लाविना हो कि अध्ये, मन कुरूकि वमरा कृत कूनरर्वत मर्च मा बूबिया विकास अवर्ख स्ट्रेगाम, स कि निकार, सन्दर्भ পতঙ্গপতিভবৎ পিডামচের মারুণ প্রহারে আতারকার প্রয়াসাভাব অযুক্ত আওকে নৈন্ডর গী,ড়িত ও মৃত হইল অভএব আর সমর্ সিদ্ধ माध्या थायाक्रम नारे चाका श्रदेश चन्नर नक्ष्माछ। भू-वेमालद भवन केंद्रिया उलमापत्र निविधे हहे क्रिक्य वाकात व्यव वहन व्यव পূৰ্বক অশেষ প্ৰকাৰে শান্তিপ্ৰবোধ প্ৰদান করিয়া সংপ্রামন দিলেন / যে সভাবাদি জিভেন্তির ভীবের ইন্ডা বাতীত মৃত্যু হইবেক না ইহা জগৰিখ্যান্ত আছে অভএৰ ভাহাঁকে প্ৰাণ ুৰিয়োগোপায় জিলাশিকে खबनाई महा कहिरवन। अनस्त नथखिं। त्यावित्कः विश्व जीवा किरिक्त विलाम । प्रदेश विज्ञासम्बद्धाः अविवास वृक्षेत्रं करिएलमः (य व्यालनात अञ्चल मिल्टिंड अव्यवस्थित रहत देश्या अव्यक्तीमनम हते ভেছে অভএৰ ভৰ সহ আ্চৰে বিক্ৰম প্ৰকাশ করত জয়ী হওৰের याभार के हाइए एके भक्ति कहतूरहे अहे निरंबमन **कहिरलहि य** অক্ষাদির প্রতি সুহাত্ত্বলিভা বাবসায়ে তব বৃত্যুশ্যু এটিকো নিশিষ্ট নিশ্চিষ্ ছই। ভীগা পরাৎপর নারাব্রণ গঙ্গে প্রবৃতি পূর্বাক স্তুতি বাণী প্রয়োগ করত মুদি ঠিরাদিকে ক্লিউ নেধিয়া উক্ত করিলেন. পূৰ্বে নদ প্ৰতিজ্ঞা আছে যে দ্ৰীজাতি দেখিলে কখন যুদ্ধ করিতে প্ৰবৰ্ত্ত ফটব না তত্ত্বেক তোমার্মিংগর বিজয় কারণ কহিতেছি মছাবল भाषात क्रमन छनत्र निथ्छी शृंखं नाहीहिन रेमन निसंख्य श्रद्धन জাভি ইইয়াছৈ অভএব গেই অমঙ্গল ধৰা শিখবিদ্ধে অএবৰ্ত্তা করিয়া

धनक्षत्र जीकेवारन कामात मनीत विक कतित्वन कामि जाराद्व मिन्नीत কদাচ অন্তর্গ্রহণ করিব না পার্যও গৌরব উপেকা করিবা অথিকে নিপাত ক রিলে ে বে অনায়াদে চর্ব্যোধনকে পরাক্ষয় করিতে পার্নিধা। ७९कारन चंड्यू न कृष्य नित्रीकन कत्रड कृष्टिमेन कोनि क्षावसन। शूर्वक সমর করিয়া শুরু বৃদ্ধ পিতামহকে কদাচ নক পরিছে, গারেব লা অব শেষে কৃষ্ণের বছতর অবৈাধে ও উপযোগে পিতামহ বাধ স্বীকৃত হুইলেন। দশমদিৰম পাৰ্থ সংগ্ৰামে উপস্থিত হুইব। মাতেই ভীল্মের স্তীকুশরে জর্জিরিত কলেবরে কণেং অধৈধ্য ও কণেং মৃমুর্ছইয়া করণ্ড ধ্রু:শর স্থলিত দ্ইতে লাগিল। কিঞ্ছিৎ কালানস্থর রণান্ত পার্ব পুনক্ষেত্র প্রাপ্ত হইয়া উভয়ে বছক্র যাবং পুষুল সংগ্রান করিলেন। কিন্তু ভীল্মের স্থানিত শোনিত প্রদর্শক শরে অসংখ্য পাওব সেনা সংহার হইলে যোজ সমুদয় আমুদোয় রক্ষার্থে বাজঃ হইয়া ভাৰতেই বুণ্ডলে শ্ৰেণীভন্ধ ও বুণোপেকা করও পলায়ন করিল जन्द्रकेक आणकार्याव निमन्न २७७ हेके तुमापमार्थ णिर्माधाक आन যন পূর্বাক রণন্থিত করাইকেন অজ্ঞুন নহাচক্রি চক্রপাণির, আংগণে চক্রান্তে সমরে প্রবর্ত্ত হইয়া শিখাতির পশ্চামতী দলায়মান প্রবংসন व्याव भरत विवा विवासूध भक्षाम कत्रक भिष्ठामस्त्र मर्कीक अविक করিলে রক্ত আতে রথাভিধিকান্তর সৃষ্ঠিত হইয়া ভূমিতলে পতিত ' इंदेरलमें। महाजा कोचा आक्रमाद्रादि निष्धिदक मन्दर्भन शूक्यक निज्ञा হইয়া একেবারে পাঞ্চ ভৌতিক মারা পরিত্যাগ পুরংসর বিনীতি ভাবা भन्न ७ सञ्चल्ल मर्स्सविटचंबत नांताशः। शाग कत्ना धतामान गतिविके इहेब्रा काशावमान आक्रिकिक छावमञ्ज काहात गहा कतितम केपून् ব্যাপার দর্শন পূর্বক দেবপণ প্রভৃতি ধন্যহ প্রশংসাধার। পুর্বাইত হইলেন। ভীম সমরশ্বায়ী হইয়া উত্তরাস্থানর অংগঞ্চার শহুলাবার্ক রহিলেন। তাঁহার পতন হেতুক তৎকালে কুরুপাগুসম্ভানের উক্স

मात्रावनि ।

র্কিনের বৈশ্বিপার সাহিত্যে সর্ব্য জনেই ভীলোর স্মীপে আগিমন পুরং
নির আভিন্যা ক্রাপে শোকে অভিন হইলেন। এবং ছর্মোখন বহু
বিলাপ কর্মান রব ক্রিডে অপ্র বস্ত্রমন্ত পৃহ নির্মাণ পূর্বক তথাগে
পিতার্মাকে রাখিয়া তাহার রক্ষাথে কভিপন্ন দল গৈনা স্থাপন করি
ইতি।।

मानावना। विजीवः श्रतिष्ट्रमः म्यासः।

भवनिम खोडाकारण बाजा पूर्याधम कर्छ्क महासीव द्वांगाहाका দেনাপতিত্বে নিযুক্ত হইয়া ঞজিকা করিবেন যে অসাবা দ্বাক্তালে নস্থাধ कर्वीत भ्रम्भावन क्रिटन दन निवर्त स्टेव अवर भ्रम्बर्ड्ड अध्यक्षिक ताका यूथिकिराक मृत्र कतित। अनस्त महोनाः संर्थाश्चन शिल्होबह সলিধানে যুদ্ধান্তমতি গ্রহণার্থে প্রতন করিলে ভীত্ম কহিলেন্<u>। ভূ</u>নি কৰ্ম কৃষ্ণ সহায়ি পাণ্ডবগণকে পৰাজয় কৰিতে শক্ত হইৰা না অভ এব ভাঁহার দিপের শমুচিত বাজালাল প্রদান পুর্বাক একণেও প্রেটি कत, वर्ण तकादक भूक विकित दिख दहन कहिलाम। यक्ति सम्बाका অনিষ্ট কর বোপ হয় দৰে তেনেকে ছিজান করিলে বিশেষ বিজাত क्ट्रेट्ड भर्दियो । १०१ तथा व गटलत देवलकरना कुद्र बहेजा ह्यांग प 🔏 शिक्षा करिएकमा आमि लागाधादः। निमर्गन क्षाप्तर्भने कदा है है। विक्रक्षन व्यव्याप प्रियापि उपारेप हेर्राय किल्ल पिरा खान क्षप्रान कविएल शक्ति নাট ফলিতার্থ হতাদারে কিছুই প্রবণ করিবে না। যেখন চোরা না মানে প্রমাকাহিনী ও অভটা তেলী বিবিধ চেউ।ছারা ক্যন সভীত্বাপকা হ্য না এবং কোণী মৃতু কালে ওছধ ভণ্ন করে ন। লক্ষণ অনপ্রহ কুৰত্ব বিজিও ছুৰ্যোধন অজ্ঞানায়কাৰে পতিও হইয়া কোৰল কুৰুদ্ধ কেই অনকুদাপ্রায় ক্রিডে:ছন অভরাং কার্কিক্রিটে এইবেল্পবেলি হয় ন। অধিকন্ত অবজ্ঞাকৃত চইয়াং। কে ইবা ক্লিয়া রাজা জোণের কটুজি অসহিষ্তায় বৈমুখহটয়া কহিলেন-ভাষার সহিত সমরে অমরে কাতরে পরাভূত হয় ইুদানীং কি নিমিত্ত শত্রুভন্ন করিব এবং আক্রো ভে দমন্তব্দিতি পালন করিয়া মৃত্যুভয়াভিরিক্ত পাণ্ডৰ ৰাখ্য ইওনাপে ক্ষা মূর্ণ্ট প্রেয়স্কর জ্ঞান কবিয়া অ'তচ্যাখ কর্ণ চ্রাশাসনাদিকে সঙ্গে कहेगा तरन क्षेत्रक इंडरनम व्यवस्त जूरन विक्रमी क्यानां गर्था किक्र পায় হইরা ভীতি সাহচর্য্য রথোপর্যারেছেব পূর্বাক রবন্তনে উপনীত ও कितिकाल हक्तवाह बहन! क्रियान। शाधवलाक खिक्रक्य

आक्षां श्रीकृत्वेषेत्रभक्ति रहेशा प्रशस्त्य वस्त्रगृत प्रत्ना श्रूर्वक वशाप्त ब्राम हरेहताह्। (याद्वाना बक्तुनम बक्किकात छ मूसर्थ पृक्षात नक ক্রজ যুদ্ধে উপস্তি হইলে উভয় দলের পরকার বস্থান রাজগণ क्षित्रकाक अन्त्र मध्या क्षेत्रका व्यवस्थात्व स्थानार्व्य वर्गानार्व्य वर्गान्या वर्ग स्थिति वहरेनना हजाहरू हहेन। विजीव निर्म अहमू व मनःव अक्षुन मध्याम प्रत्याधनारिक कारणाथाम जीवाका महेकाई व आपूर देनेना कप्र হটুলে মুখ্য বিপন্ন হইয়া ফোণ্ডে খরিলেন হে গুরো আপলাকে নহা রখা দেখিয়া সেনাপতি করিলান কিছ ভুক্তি পাভিবোপরোধে যুদ্ধে মনঃ স্ংবোগ হইভেচে না বেহেতুক আপদ্ধার শিক্ষিত অন্ধ শিকায় मी लिक्क चर्क नवीत छदात्य समन्द्रा तमा मानद्रक मध्यात करिएल्टक একি আক্রম আপনি তাহা দণাম্বান হইয়া প্রত্যক্তঃ দেখিতেছেন জ্রেণ সহারোবে প্ররোধনকে কহিলেন আমি বৃদ্ধ ডিক্টুক ব্রাহ্মণ আমার যুদ্ধবার কি প্রয়োজন। যদিচ ভবাসুরোধে প্রবর্ত্ত হইক্স প্রাণপাবে: রণ সম্পন্ন করিতেছি ভথাপি যশোভাকন হইলামনা অভএব এ স্থলে **ভिঠत है উচিত নহে है। क**हिता की प्र क्रिप्**षण अवश्वास क**हेगा ब्रुट्शार्थको कर्छ छपार्हेर्छ ध्यक्षात्र क्रियान । प्रत्यायन सहहराच ৰাশিত ভূমনে অভিবাত্তে লোণপদাত্ত্যে একাঞা চিত্তে পভিত চইয়া ह्यांवन करेक केंक्र कर्त्रित्वन एटडा धारायांत्र व वर्गात कीरत कीरनार স্থান করিতেহে অতথ্য কোধী হইলে আর নিস্তারের পথ নাই ইডাা क्रांकि जावरन जिमि स्त्राच नितिशत भूसंक कहिएलन, रच नवर्य धनश्चन मुन्दे मा बारक राहे करत आमारक मरवाम मिरम अवनाहे यूथि রকে পূত পুরঃসর বজন করিব তুমি কোন চিন্তা করিও না বিশেষভঃ ভোষার কাত্রেক্তিতে নিডাত বৃদ্ধ ছইল্লে। ভুতীয় দিবস নারায়ণী নেনাবুলির নেনাপড়ি ছইয়া ত্রিগর্ভরাজকীয় স্থার্জা ভূপতি ক্ষর্ভুন সম্ সমর স্থিন করিতে লাগিলেন ৷ এ দিকে জোণাদি মহামোদ্ধাপণ

ভূমুল সংগ্রাম করত বিধা ও বিপন করিলা লক্ষ্য পাথবর্ণটিনী নিভাত क्लात्युत कत्राम वसमाखात आक्लम कतिस्मा । उनामीर बना मेर्छाड রাভাবে যুখিছির মহোৎ কঠিত ও অপরাপর পাওব সহ অন্থির হইরা অভিনত্নাকে केट्रिकन भूज बहै अनिवार्य हरन लामाछित्र अमेनिन। छ প্রদর্শন হয়না অভএন চফ্রনুহ প্রাবেশ পূর্বক অদ্য খুক্ক করিয়া অস্মদানির কুক নিবৃত্তি করহ। জোগতাত বাকো অভিমন্য প্রতি বাকা প্রদান করিলেন যে আমি বৃাহ প্রবেশ করণের সন্ধান জনবন্ধত নহি কিন্ত নিৰ্গবেশপায় উদ্দেশাশক অৰ্জ ভবিষতে কিঞ্জাৱে আনার উদ্ধরণ হইবেক। ব্লাফা মুখিঠির কহিলেন স্থাপাওজঃ বৃহহ आदिन भूत्रामत भाष्यकृत तका कत भतिगार्थ छीमाप्ति गरा याका ীনীরপণ ভোষাকে অবশাই রক্ষা করিবেন ওঞ্জন্য ভীতি যুক্ত হওয়: कर्जना नरह, অভিষয়া बीतनत जनाखा जिरहाधार्या शूर्वक महा निक्रम প্রকাশ করত মহা রণস্লে পদার্পণ মাতেই ব্যুছ বারস্থ জয়ত্রথকে পরাস্ত ও বল হানি করিয়া সপ্তর্থি মধ্যে প্রবেশ পুরংসর যুদ্ধোদাত হইয়া একেশর ভাবৎ নহারখিকেই অস্থির করিতে লাগিলেন। ভীগাদি মহাবীরপণ বাহ বহিদারে জয়দ্রথ সহ আহাব অসাতা এক ও তাসিত স্ইয়া স্বীচীন অ্যন্ত সাধন করিলেন তথাপি ঐ নিদারুণ ছর্জের রিপু দখন করিতে পারিলেন না প্রাক্তাত সকলেই পরংভূত হইকেন এবং বৃহ প্ৰবেশক পৰা আখি বিধায়ে অপায় নিজুপতি ভানতার উপাথের শিক্ষু বিধি বস্তুকে সার্ণ পূর্বক মহন্দ্রে ব্রেখ্যাস্থ রণে ক্রন্দন করিতে লাগিলেন। এ দিকে অতি মনোহর রুম্ণী মোহন নৰকলেৰর পীতাধর পরিধায়ী ক্ষতিমন্ত্রা অবস্তু সংক্রক সার্থির রুৱা রোহনে একেশর ধর্ণক্ষী বাহণ পুরংগর স্থানীক্র শরাখাতে কুরুনন্যা त्रवाती मध्या त्रवान्यक यहाद्वव कत्रवक त्रक्रमणी व्यक्तिक कताहरणा এবং তিনি সমর হলে পিগ্নর মধ্যে বিহক্ষ**ং আবৃদ্ধ হ**ইয়া ও কটাকে লক্ষিত প্রথর ভর শর বিকেপে বিপক্ষ পক্ষের দক্ষ্য সেমার্কার বক্ষয় कक जिल्लामान कतिहा महातथी वीत जक्तरकर शद्रावत कहिएनन अवर

া কডণত বোদ্ধাকে অন্ত্ৰ প্ৰান্ধানে হত জাৱিলেন। যথন তিনি নীমবন্ধ ্হাযে।ভা আৰে বন্ধ হইছা সাবন্ধতে শক্তি নাথে। ভুৱিং বিপক্ সধ্যে ক্ষরিউটিকে অভয় ধন্ত্রহিত পূর্বক এক রথে পরিজ্ঞানান্ হইয়া ভাবৰ দৈলা হভাহত কয়ত সংখ্যান স্থত উলুক কুমায়কে নিগাত করিকেন তথন কৌরবেরা হাত্যকার শব্দে বিলাপ করিতে लाजित्वत । इश्लोगन शुक्रामात्क नर्स मुना मिलिया अत्राह्म मध्याच **ब्लाइः कारम वक्ष्यि दिनाण कदिएकम उक्ष्यान हर्षाः एम सुक्** লক্ষ্মৰ ও পদ্ধবীর দ্বা নজোধে বসুসারণ পূর্বক অতি বেশে তুলালকে প্রক্রেপ্টত হইবা সারেই অভিবন্ধ ভার্তাদের সকুওল মঞ্জ ভেবন শারিকের: বাক্ষা প্রাক্ষের শোকে অবৈর্ঘা ও জুমি পতিত হইয়া বেদেন করত স্বতি থাকে প্রাহকে সংজ্ঞাক আর্জুনর প্রতি ধারমারু ইবাৰ কিন্তু অভিনত্যৰ সূত্ৰীশ্ব দশ ভৰাজ্ঞাখাতে অভৰাখিত এইয়া শুলাংগত সমাজ গলায়ৰ কাহিনেৰ প্ৰক্ষাণ চূড় বিজ্ঞানী জিলান্ত্ৰ কাভি 🤉 बद्धा सक्ष्राचार प्राणीवन अवृति अक्षण भाराप्तावत जावर महास विनाम कवित्यम अवद उँहित वेदि हो से गुरु हु। यद प कुनमें धर्म हहेटड কার্মিল ও ভার্ছার অর্থীন সাহতে শৌর্যাধীর্যা প্রকাশে মুধ্রু দে ভার তেই নিরাশ হইতে লাগিত এবং উচ্চার খনঃ সংযোগে শন্ন প্রয়োজ ন্দ্ৰৰ অনেক বোদ্ধার প্রাণ বিয়োশ হইল যখন তিলি বিবিধ অস্ত চর্যা বায়া বিখুৰিভ যেগে বিচরণ করিতে লাখিলেন ও ভাঁছার রৰ্ণেপণ প্রভাব প্রদীপ্ত হইতে জানিক তথ্য শক্তবণ বিশুর ও নিদারণ পাহারে उत्तर्भ हरेल. **উक्त लाख्य वर्ष वसक्य वामाकत मुटक** क्यांबर शास्क जिन किरोरितथी ७ इ**ह रूक्ष भवर्षे वृक्ष** अवद म**श्रम** नाकी नर अवादाही देवना । अमरना अमानि निमान स्टेटन अमनिए आनी <u>রংগর পরীর বিগলিত শৌশিত শাপর তরক্ষে আভক্ষেকবঞ্চগণ</u> সম্ভর্গে ভाসদান बहें छ। उथम भक्ति भूख माहरत तर् अवर्ड हरेरण जिल्हमणा वीववव अवरहरण जिहित्त अवन मीनिका मुख देखर पूर्वक (हेमन कड़िया अपने मामिश कुष्मते नीर्वेश कतिराम। वार्क मिन्न ঈদশ বৃদ্ধে মুর্যোধনের আন্তরিক আশক্ষা ও মহাসকটে পভিতানতর

নিরাশিত আর সর্হ ভয় ও খেদ সহকারে কোকাবিল নিরাদ প্রাদি स्टेड स्नानि देवतन त्यांश्यक करिएमन चांडावी अकाली चिक्त करीतिही महात्वी अन्तक अवत्त अवाक्ष कवित्राध्यक्ष देवना मेक्के कविटाटक कार्यीः च्यात्क প्रकाक क्षिणां ও विधाक्केन्नतम क्रिनेश निन्नष्ठ एड्रिक्ट ए অমুমান করি বালকের প্রভিন্তেহ প্রকাশে অন্য আশার সর্বনশি করি द्यम बाह्यहर्षेक अकटन निम्हय अवूष्ट महेन खालात नम्दन करा माहि ল্লোৰ জ্বোধে উপ্ত ক'্ৰাম ছে বাজন ভব কৰ্ম অভুক্ৰ ক্ৰিকেও क्तान र पुष्टा मुझ है असक (भाषार्शन कतिएक विशेष्मन सक्का एक बर সৃস্ভার ,শভং শীলাস । এই ২৩ ইহার প্রাত্তাক প্রমাণ ভোষাতেই িলর হাইডেছে হাট্চ পূর্ণে তোমার সহবাসে প্রার বিনাশাশভা হাইভ উবৈ কেন জিলাংনক হত্তে পভিত ছইয়া দুর্নাণ এছে বইব এবং তুলি রাজা হইথা শিশুর সহ যুদ্ধে কেন পলায়ন পুরংগর জীবন রক্ষা করি शक्तिका चाठवर मूर्याप्रम मंजावधात्व पूर्वत्यः 💘 । बनामान 🚓 💐कृ रामत छ जिरनम् अखिमञ्चारक नामा यूरक् निधम करश्य कामडा कामात নাই, তথ্য দুর্য্যোধন নহাপাপ ভূঞাক গ্রামিত হইয়া কহিলেন খেমগ শম্ম সৃদ্ধপ সর্কাশক শিশুর বধ সাধ্যাথে একদ। সপ্তর্থী ঐকলতে পরিবেটা পূর্বক যুদ্ধ ক্রার্ডি হইলে অবশাই অভিমন্তা নিপাত হই বেক। ভাহ: ড জোণানি মহাত্মানিচর রাজার ছনীত বুক্ত বচন আবণে চমৎকৃত জ্ঞান করত ভদভুত্মণ অন্যায় কর্মকরণে অস্থাকৃত হইলেন তথাপি রাজা আঅকুল কয়াথে অলকণীয় লকণে নির্ভর করত অক্সমা জাদান করিলেন স্তরাং রাজভারে অগত্যা জ্বোণ তুপ অখবামা কর্ম ছুঃশাসন শকুনি এবং স্বয়ং রাজা প্রব্যোধন ঐক্য ছইরা শিশুসমু রুঞ্ দাত হইকেন। আৰ্জুনি অতুল্য পরাক্ষমে ছাত্িমানু ভয়ানক বিশিশ্প आक्मारव जातम् रियाकाचनस्य अभित कतिराज काविरवृत् । ... अधर युगांस काम अगम भवत अवास्त्र दिविधाय असाह बाहा कट्ना মহাবীরণণ সপ্তবার মূন্তি ও পরাজিত হইয়াও আনুষ্ঠিক ব্রুণ शरिया भूक मजना नाकनगर्व वष्टानद नीत क्यांत्रक हर्जुक्किक হইতে বেউন করিয়া বিশ্বাস্তাখাতে সহাক্ প্রাকারে আকী ব করিলেক

ंडचंत्र ७ किनि हान निष्मुच . श्रेरणन ना त्यदरफू कार्यन स्पन्न एक वर्षन क्षिण दा नगदर भारतका एकता कि विश्व वर्ष अटर १ - त्यदर दक्ष वर्ष दक्ष ্তিশ্ব কিন্তু নাম্নমী ওংকেছ ধন্তুৰ্বাদ কাটিয়া অভিবস্থাকে নিরন্ত্র করিল প্ৰাং জাঁহার সমুদ্ধ বৈদাক হত হইল তথাপি তিনি ভীকনা হইরা প্রীয়ে থার ব্যরণ পূর্বক কলি চর্দ্ধ ধারণ করিয়া রখ হইতে স্বাহ্যদে কলা আমান:পুরাণর ভূমি গত হইলেন। মহারথী সমবায় বিশাংসাংস্কৃত্র দেজ হইয়া ভাঁহার প্রতি বাধন্দর্শ করিতে লাগিল ভাঁহার শরীর ষাবেং শলকী তুলা হইল, তখন ও ডিনি নির্ভন্নে মহা নাহদে বজা ও त्रश्रक ७ भनपुष्टि आहारत विभाकत रहा रेमना निरुष्ठ कतिरमन जिन আষরগণনে প্রাণ সমর্পণ কর্ত্ত ও পরাধীনভাকে তুল্ছ জান করতঃ শ্লুকোক্সক ক্ষমা জ্বান্ত বজু, সম মহাপদা ধারণ পুরংসর অভি শক্তিকা श्रकारण कुक्रटेनना नवीक भरधा- जामामाव इहेरलन । बदण्युकातु गृङ्ग প্রামে পতিত হওনকাল গর্যান্ত সমুখ বুদ্ধে মহানীর্যা প্রকাশ করিতে ক্রাট করেন নাই কিন্তুখ্য নির্গণদের সন্ধান অনবগত হেতুক প্রায়ন। সদর্থ হইয়া দুঃশাসম পুত্র কর্তৃক গদাঘাতে অভান্ত মোহ প্রাঞ্জানন্তর অভিযানে নয়ন দিঃসৃত অনবরত রক্তধারা বর্ষণে স্কার্জাভিষিক হইলে কৃষ্ণশারণ পূর্মক প্রাণভ্যাগ করতঃ তৎক্ষণাৎ চক্রলোকে গমন করিজেন । উক্ত অভিনন্ত্র সমর সুধ্যাতি পতাকা অনুরাগ প্রভঞ্চন ছিলোলে উত্তীয়ধান হইয়া সাধারণ বোদ্ধাগণের হ্লয়ে 'বিলক্ষণ রূপে নির্ম্পা হইতে লাগিল। কুরুকেতের উত্তরাংশে অজুনি নারা য়ণী সেনাসহ রণ করত নানাবিধ অমজল দর্শন ও অঘটঘটন হেতুক উछाটन ও **उद**करकार्थ हरेगा करनर नाकून रहेरछ नाभित्यन बर्वाचिक्कारण मृत्र इडेर्ड कूत्रदेनना भरवत क्रम्मवनि खारन ७ श्रीय देनना মধ্যে নিংস্তক্ষে ছাছাকার স্বর-প্রবশেষর সম্বর শিবিরে প্রভাগেরন পুরুষ্গর অভিনম্মর শোকে সমূহ বিষয় হাইয়া আক্ষেপযুক্ত বিভার বাক্য कि कतिएक जाणिएकन, उर अंबरन किक्स ७ वहात्र छ जामण वाता সাঁজুৰা ক্রিয়া কহিলেন যে "একবৃকে সম্ভিচা নাৰাপক বিহঙ্গল।। छोटां प्रमानिकः वास्त्रिकारुगः अत्रिद्यम्मा ,, ॥ अर्थाः प्राजकारम

বেষন নানাছাড়ি পশ্চি গৰু একজে বাসক্ষত প্ৰতিতে সকলেই স্বাভি जितिक प्रमानित्य को ज्ञाम करत्र केंद्रोल हैं है निर्माद की वर्ष अली क्रेड़े **ेকরণ হেতৃক স্বৰ্শ ভোশাৰলাকে আ**প্তকাকে নিশ্ন ^{প্}হয় ভাইাটে কাহার কি বেদনা আছে। ডৎকালে নুতাবন্ধী পুজ ব্যাসদেব উপায় উপ স্থিত হইয়া অর্জুনকে কহিলেন। বিধাতা ত্রিভুকন সৃষ্টিকরিলে প্রাণী প্ৰম পৃতিধীতে পরিপূর্ণ হইল। পুণাবলে কোন প্রাণীই পতন হযেন লা তদ্ধেতৃক পূথী অসহ্যভাৱে দোলায়মান হইতে লাগিল ভেদকলোকনে নারাথ্য সচিন্তার **স্মুদ্ধার শব্দ করত এক অ**তি দীর্ঘ নিসাস স্পরিভ্যাগ कहिटलन ए। हार्ड शहम व्यक्तिमायात नामा शब हरेड अक मूर्प हे याँमें · प्रिमिमेनी कमा छेरलाख बहेबा मखात्रमाम हहेन आबू छै।हारक दहि লেন বে : মৃণ্যুক্তপা মৃত্তিতে চতুর্দ্দাপুরে পরিজ্ঞান্যমাণ হওত কাল · <mark>প্রাপ্ত জন্যক সংহার কর_স ভদর্ষি এই অ</mark>নিভা সংখারে কা**লস**হকারে आनी मरशांत स्ट्रेटल्टल अडबर कश्रांत महीत एक हुन्य अंहुक অভিমন্ত্র নিমিত্ত কেন আচুবা ছংখ সম্ভাবিত শোক খোহে মুখ্ হই एक । वाप्त विमाध इटेक सूधि केत बख्नेविनिर्गक ममल वार्खा ऋषि দিত হইয়া কল্ফুর্ন দ্যারণে গ্রেডিকা করিবেন থে স্বয়ন্ত্রথ ব্যুহ্যার वक्र कतात्वरे ममभूष निधन इनेताहरू अउ मन कता उँहि एक वध की করিয়া পুনরাগমন করিব ন। যদাপিও বিন, বিনালে সুর্যান্তগত হয়েন ভবে প্রাঞ্জলিত হ্বলন মধ্যে জীয়াজদল্প করাইল। এই কটিন গানে কৃষ্ সমূহোৎক্ষতিত ছইয়া অর্দ্ধকোৰসানে সংখ্যাপনে *নঞ্চনতে ভালে* लहेद्रा टेकनाम निथरत इत्रभाकं जीव मधियात छेभी दे उद्देश वहारिय স্তুতি মিন্তি করিলেন হে ব্যবাহন শটে। তথ বিভূতি দক্ষা সংক্রহ প্রকারে পূখী বিস্তারিত শুইতেছে জম্মধ বধার্থে দূরতর পণ নাধনার্থে সম্পুতি যে বাঞা হুইতেছি ভাষার নিদ্ধায়ণতি প্রদান ইইলেই কল কার্যান্ট নহাদের স্তুতি পরতন্ত্রতার সম্ভোষ্ঠ ম্ইয়া কৃষ্ণ কুর্নার নার প্রানান করিলেন যে অতি শীবু জয়ন্ত্রথ বধ করিয়া কুরুঞ্চ কর করিবা ভাহাতে কোন সংশব্ন নাই; অধিকন্ত অনুনিধে কাই জন ভোষায় সাহায্যাৰ্থে কুৰুগণের সহিত স্বয়ং যুদ্ধও করিব : পরিদ্রন ধনবাজে

' ক্ষুক্তার স্থান্ত গছাই ব্যাহজাগ বাঞ্চনর আবেও কৃষ্ণ ধনগ্রর স্থান্ত্র বিজে অধা হইতে বিশাস হইরা সর্বজনের অগোচরে স্থায়। জিনিলেপ্রসাস্তি করত সুখে প্রদান করিলেন।

ক্তপুর্যবান্ত প্রতিকোলে পাশুবেরা সূচারু যুদ্ধ পরিছের পরিধান पूर्वक कृष्ण मम्बिनाहारत तर्द्राम छणदिङ इदेशम । शत्रशत्क महा ৰীৰ জেৰিচাৰ্য সৰ্দ্ধ সেনা পতি গ্ৰহ পুৰ্বক ৰাদশ জোশ ব্যাপিয়া যুদ্ধ ক্ষেত্র স্থাবিপুণ সর্বাস্ত্রনার-দিবান্ত্ত পূাত রচনা করত: ভদভাররে इरकी।धन्मर कां जावशास्त्र क्यात्रशाक हका क्रांतुक्ततः कार्जुनव्यक्तितः ममाया नितीकः। कत्रक काकत इहेटल वार्शितकिन एयन कृषा मधारवारव केलि कतिराम रामि निक्रमन्तर निधनार्थ अनमर्ग १७ ७८४ कामा चामर **সুক্ষ করি**রা ক্রুবংশ ধুং স করিব ডক্ষনা কোন সন্দেদ করিহ না ইডুই कांबस्त नाक्रःकत व्यञ्जि व्यातम कतिराम रथ ''मार्क् ध्युत्रोनिनर् मयत्रथे সুদ্বিভাত এরিয়া রাথ আমার শাস্তাধূনি প্রাবণ মালেই যুক্তলে র্থ आहेब्रा काहेबा, क्षीकरूष देखि मंश्कित जात পूर्तिक अखिरवल व्यान वर्ष সঞ্চালন কঃডা নিগৃদ বৃাহৰারে উপস্থিত শ্ইলেন, স্বাব্যক্ষক ছোগা চার্যাপ্রবন্ধ করাতে কেয়ৎকাল সেই বন্ধ অন্ধে যুদ্ধ কণিয়াও মহা নীৰ্যাৰম্ভ অঞ্জন বিজ্ঞান ডোন কাৰ্চ্ আজাত বিধাৰে পেতে পানতে इहेराज्य कावत्रक कामार विभागानामा कारणांत्र प्रचन्त्रातः अमस् भूकीरु दञ्ज देशका विभाग कक्षण एतालक भण्डार द्वय हालाईका व्राहण्डम পুৰুষ্ধার ভন্মখ্যে প্রথমি ছইলেন ভানিত্রীক্তর করত ক্রোব ক্রোপ সালচর্চা काहुन आगन्छ। भूकंक करिएनन "भार्य ममात्य कथेन भनावन कत्रिका बरहे किन्न हम्या यांजिन कडमृत भमन द्विटाउ माला ह । क्यू म জীত চইছা জন্মডিছে নমুভাবে প্রথাম পুরংসর উজ করিলেন গুরে৷ ্ক্লিম্ব সমক্ষে লক্ষ্য করণোপজুক্ত প্রাণক্তি কাহার আছে অভএৰ সমদোধ ষাঁজীক ক্ষম। পাৰের ইত্যাত ব্যক্তিত বোপদরাদান পূর্মক সহাদ্যে क्षमंगार्थ को स्थानन कतिया अब ध्यमान पश्चित, भनक्षत्र इर्साय खुलाग्रकार्ष्य धर्मुनीव यात्रम कत्रल खाकर्न मञ्जान शृहन श्रूरीक वस रेमना विकास । कार्यथामा जार करीक श्रेमध्र मृद्धिक कवित्रा कि

নাহনে নির্ভন্ন করত হয় ক্রোদ পর্যান্ত মূছেক্তরে প্রবিক্ত হইলেম :পৰি মংখ্য মহাহ : ৰাজু গৰকে অচেডন করিয়া কোটিং নেনচিত কর করিছে কুরুদলে ছাছাকার রব ধুনিত ছইতে সালিল নৈরেরর কুত্ গর্ভকুত मिनिल (बना विकीस अध्यक्षत्र मगरत द्राव एक निष्ठा भनादन कविना । ব্যাস অর্কুনিকে কহেন এই সমধে পূর্ব্বাস্পীকার প্রাদেশতানার্থে শঙ্কর मनत ऋक खेननीं इंदेश कोत्रव नकोत्र बत्तक रेमना जिन्नाचारण নিপাভ কৰিলেন ভাছাতে ভাৰৎ যোদ্ধাৰীয়গৰ বিশ্বথান্তিভ হইয়া বিশ্ব ম্বরের অনুষ্ঠ মুর্জি মর্লন করত প্রবাহন করিতে পাণিল। তৎকালে **শ্রীকৃষ্ণ ধনপ্রবাদ্ধ কহিলেন এর "কি কংকাল ভূমি সিভত্ট যা যুদ্ধ কর**ে যেছেতুক বাৰাছাতে ব্যবিত অশ্বৰণকে তৃণক্ষা ভ্ৰমণ করাইয়া সমূরে উর সাল্লধানে উপজিত হইব, পার্থ নিভান্ত সংশয়াকুল হইয়া **থেদ** সং কারে উক্ত ক্রিলেন হে প্রপন্ন ভব ডঞ্জন হরে এক্লে 🐃 👑 डित कोन महाबनी नाड़े, अखबर बूबि बर भश्यक्ति कामगामित्क ছলন। বারা পরিভাগে করিছে মানস করিয়াছেন, হে দ্যাময় সমুস্থন। তৰ দৰ্শন হেতুক অন্তদ্ম ভূদয় উদয় হয় এডক্ৰেপ জনাৰ ধানী বে जाननि मन्त्रु डि रहत नमृष्ट प्रमाथ निमन्न कन्नारे विने । देखां कि जायत পৃথানৰ ৰোধে কৃষ্ণ উজ করিয়েন, গর্মজুন জোনরা পঞ্চপ্রাভা 😻 সাজ দেনী ভক্তি করণক আমাকে ক্রিয় করিয়া বাধা রাধিয়াছ অভএব ভক্তি कवा बूंग्य मृब्ध्य रक्षत कि उपन गुरु बहेशा धक्षमध निमित्त स्थानास्त्र তিভিতে পারি অবর্ধক হৃষ্ণ জানত করুণাক্লিম বচন পুরোগে পুরো জনাভাব এক্ষণে স্থিরচিত্ত হও। অনপ্তর অনপ্তের বেচ্ছাম্ব এক অপুর্ম नुष्क्रमभौज महाबद्ध इष्टेन छोशास्त्र करूनानिश्राम क्षा उपाच कर्या শোণিতাদি ধৌত করও কচন্দ্র দুরীভূত ও উক্ত নাজিগণকে বারিপান করাইরা গুরার সমর ভূমিতে আগত চইয়া দেখিলেন একাকী অঞ্ নের অতি অভিপক্ষ পক্ষীয় যোদ্ধা নকলেই আনপানে শিপুলান্ত একে পঁণ করিতেছে তথন অবভরণ শীল অর্ক্রাফে রথারোছণ স্রাইলের 🕫 রাজা যুগি ঠির ছই প্রহর বেলা পর্যাক্ত অজুনৈর কোন বার্ডা প্রাঞ্ विधारम जाननाकृतिकाखाकत्वतः विक्रिक्षेत्रियानम क्षेत्रजन एक अर्क

अस्त्र अपूर्वित विकास कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास क्रकार्वे निष्ठ रहेत्रन हेजानि विकास विकित रहेना सविकनीर ফিছানুষ্ট্রন্থ্রৰ পূর্যক ভক্তমন্ত্রানার্থে লাভাকী বীরকে প্রেরণ করি क्ष्मित्र करकालिन गांखाको दक्षांबाहार्यात मरुद्धात । त्राकारक । त्रका । कत ৰাৰ্থ ডং নামিষ্ট নিযুক্ত ভিনেত্ৰ তিনি মূপাদেনিত মাজে, পাৰ্থের करवना निकिश्वमा नगरत तुषि कित गरमण क्षीतिनि व्यक्तिनात्व **ছালন**্দরভঃকটিনসূহে খারে ^রউপহিত হইকেন। কৌরব পকীয় আছারীরণৰ অর্থ শিব্য সাভাকী সক্তর পুর্বার সমিলিত হইয়া এক্লা অসংখ্যান্ত্র বিকেপণ করিলে তিনি তাববিদিশু উচ্ছস করিয়া স্মীয়াল্লে হংশাসৰ শসুত্ৰি প্রভৃতিকে অভেডন করিলেন, তাঁহার। অন্দিরচিত্তে সধর পরিভ্যাগ করিতে লাগিলেন সাভ্যকীর অভি বিচ্ছুর নারখী সমীরণ সদৃশ সংহণে রখ প্রচালন করিয়া মুকুর্ডিক কালাভ্যয়ে **११४८कांस উद्धी** १ देशः **अब्**त्वत्र ठकिषुक नितीकाल महानमार्गर ন্ত্রইলের এবং ধনুস্থান্ সাভাকী শাণিতশর বর্ষণে লক্ষ্ ক্রেরব थुक्किनी विनाषक्रकेति । जानिस्किन । जनस्त्र स्तिआवा उरमह तत्वावर्ड ৰাম ছইৱা দহাকোধে সাভাকীকে বাণাঘাতে দৃদ্ধিত করিয়া তাঁহার বক্ষপ্রে উপবেশন পুরাক চিক্রাকর্ষণ করত থড় গ প্রহার বারা বিনা শোঘাত হইলে 🕮 কৃষ্ণ তদর্শনে অর্জ্জুনের প্রতি ঈঙ্গিত করিবামাত্রেই চতুর চূড়ামনি পার্থ সমর্থ প্রকাশ পুরংসর স্বার্থ সন্পাদনার্থ সোমদন্ত অপতা ভূরিআবার হত্তদর ভংকণাৎ ছেগন করিলেন ইতান্ত্ত যুদ্ধ দর্শলে বোদ্ধ সদবার চমংকৃত জানে বিস্তৃত্ব হইয়া ভূরিপ্রবার অভুল্য श्राक्राक धनार अन्ना धामाम ७ अनु त्नत अनाव नमत वदाकाशी ব্যবহারে হাত্যকালসক করিতে লাগিলেন কিন্তু তৎকালে নামান্য ভূরি ঞ্গারস্থ বিত্তাহ সাভাকীর ঈদ্পীদুর্গতি প্রাথিও মুদ্ধে পরাভূত হওৱা অক্সান্দর্য রোখছর কারণ এই বে পূর্বে বস্তুলেবের পিতৃ প্রাক্ষালে তৎপিতৃতা নিনি গছ সোমদত ত্ৰুপতির বাক্কলছ ছেতুক সহায়ুছে চাপুটাখাতে নোমদতের দভোপমদত তথা হইলে তিনি ক্রচিতে নহা বিষয়, তপ্স। করিয়েত্র রছদিন্য, পর্যাব্রিছ হইলে শিব প্রশাদাৎ বর

প্রতি হুইলেন যে তব প্রদ্র নিনিত্রতহে পরাক্তর করিবেন।ভাষেত্রক উক্ত যুদ্ধেনাভাকী ভ. কর্ত্ত পরাজিত হইলেম। ভুরি শ্রবা রণগুলে অভি চুঃবেপতিত হইয়া বিষদৃষ্টি প্ৰৰ্শ্বক অৰ্জ নকে কহিলেন বিভৰ লমরে কুলাস্থার স্পানার সন্তচ্ছেদন করিলা কিন্ত এই মহাকিব্যিক অব শাই ভোষার নির্ম নিল্মে গ্রমন করিতে হইতেক : প্তয়ালু দাত্যকী ৫৬ন প্রাপ্ত হইয়া ভূরিশ্রহার ফেশক্রিন ম্বাদক বড় গছার। তচ্ছরীর খন্ত বিশ্বন্ত করিলেন। কৌরবস্থামন্তা কৌপিত হইন্য সাজ্যান্ত প্রতিক্র বাম বিকেশ করিলেভিনি ক্ষণেৎ বিভ্ৰপওপ্ৰটেডনা ছইটডলাগিলেন, বিশ্বংকাণ গতে পুন শেচভন প্রাপ্ত হুইয়া দুচু সাহসে উপান করিয়া : বিপক্ষপক্ষীয় গুলমান শক্ষরত বিশাল পরসম্ভান পুর্বক সপত্র মণকে প্রচেতন ও অর্জারিক করিলেন। তৃতীয়প্রচর বেলাবদান হইলে সাতা কীর অনাগমনে যধিষ্ঠির মহোৎ কণ্ডিভছ্টশা রাগ্রটিয়ের তৎপর্যোষণার্যে ভীমকে প্রেরণ করিলেন: মহা ছর্ম্বর্ষ বৃক্ষোদর বীরবর সহর্বে ক্রামা জ্ঞিত হইয়া বিচক্ষণ নিশোক সর্বোষ্টাকে আ**হ্বা**ন করিলে তিনি হুত্র ত্তাব্রত রথ আনয়ন করিবা মাত্রেই অশান্ত দুর্দান্ত ভীমধর বৈয়া গ্র সংঘাতুনার্থ স্থেনী শেমুখী স্থত খাস্তসঞ্চালন পুরঃসর অরগতি ক্রতঃ ভদারোখনে নানাবিধান্ত পরিগ্রহণ প্রবাক সমীয় বিজিতবং সভুর ্বনে ব্যহমধ্যে প্রবিষ্টানম্বর রণগত্ত প্রসত কেশরী সম উদ্মত্ত হট্যা আবদ্ধ বর্তম বাক্সন্তে মুক্তপ্পত মনস্কারে জক্ষ ২ বিপ্রদেশক পদ্ধনা -্কটাব্দপাতে, হতাহত করিলেভীয় ভয়োপক্রত সৈনচেয় হভাশায় নির: **শিত হইতে লাগিল। ইতিমধ্যে ভদ্বীক্ষ**ো দ্রোবী**র মরো**রে ভাস্তচ্চ রোধ করিলে ভীম ভবিষ্যতে অধারাধ ভীতি মন্নামানে খন ২ ঘনাত্ত ঘনধুনি সমূস গভীর ভাষে ওর সকাশে তুর্গমার্ড বর্ডন অভিজ সূক্র নিমিত্ত উপরোধ করাতে অঞ্চিত গুরুগুরুমর্কে মার্ক্সন করিয়া উটি লেন। এই চিত্ৰ কাৰ্য্য আচাৰ্য্য সমীপে ভীক্তা খভাব প্ৰস্লিক্ষাণ পুর্বিক প্রভীবাহিভ'লৌক্ষত্ প্রকাশ নাক্ষিতে সাহসের হাসভা হয়-

अमिग्रहरे अधिहारंग विष् विष् अभारता क्षांत्र वात् क्षांत्रिक कुम्बिम् छन बाब्दवरन भगन कुनिरल कुम्द्रेयुनागन ह्याद्रभवारच कौरम इक्षांत्र जाना विश्वज्ञात्व अदिहै वरेरव छीत आदर्शजाहरा কুষারে উপস্থিত হইলেন। মহা ২ যোগা নিবহ তাঁহার অক্লান্তিগতি **अधि**रेहाथी हरेष्ठ श्राह्मिण ना । इत्कानत श्राप्तिस्था कर्नक तृष्ठ क्रिया ७ व्यक्त द्वत পণ পালনার্থে পরিতাগ করিলেন। উক্ত দিবস একেশর खीन महीयुमी भक्कावलची हहेबा विशक्कात क्यूतलाईकी सन्। एथा **ছুর্ব্যোধনের জন্তুনবতি সহোদরকে নিপাত** করিলেন। নাত্রকী সহ অর্জন পরস্পার একারনগত হইয়া চতুরক্ষোহিনী কুরুসৈন্যগণকে যুক্ত লুয়ে দিলেন। রাজা ছর্ব্যোধনের হৃদয়ে আক্রাদির বিশাল শোক খ্রাপ **খুল বিষ্ক হেডুক অসম বেদনা**র ধুলাবত ঠিত ও মোহিত হ**ই**লেন 🍇 বুরু নত্র সলিলে কলখে।ভক্তির সমাক নিস্পুর্ভ হইল। চতু क ্ৰাৰ্থিত সৈন্যামাতা সংস্লোহ বিচিকিৎসাযুক্ত হই বা রাভার উদ্শীদশা : কুনি কুনুকু হাছাকারখনি করিতে লাগিলেন। অভিপ্রের কর্ণ রাজার হৃত প্রায় কায় প্রতি চক্ষ,বিকেপ করত বিপুলাক্ষেপাণ্ডৰ নিমগ্র হট্যা मुम् सर्कर्ण श्र्वाकन्यन याच सनार्थन कहिरणन अवर क्रमनः वस्त्र र পরাজিত ও দর্জিভ_্ন্**ইলেও চুঃসা**হসে ভর করত নিঃসাধ্যেস ভীমকে ্ৰিবৃদ্ধ ক্রিলেন তথাপি তিনি রণস্থলে পতিত গ্র্ত হন্দ্রী আমাদি শ্ব জ্যোম ও রখ রখানাদি প্রহারে বিরাম করেন নাই, অভিতীয় কর্ণবীর ও তৎসমুখায় ছেদন করিয়া স্থীয় শক্তি প্রকাশ পুরঃসর প্রচণ্ড ২ বান প্রক্রেপন করত ভীমের অখণ্ড প্রভাপ চূর্ব করেনও তাঁহার শরীর হিয় ভিত্তইয়া নর্কালে এধিরবর্ষণ হইতেলাগিল অবশেষেতাঁহাকে সমর। স্মুকুর করিয়া অভিশীক্ষ হস্তদ্য গৃন্ধ করত বিবিধাপ্যান স্থাক क्षेत्र विनुद्धत गाँछ। कुछोरमवीत दहन (आगात शक राज्यक बहै ক্রিনা)শত্রপু ছুইলে ভীষকে প্রিভাগ করিলেন। তৎকালে এক্ত বিকে কহিলেন দেখ খান্য বুকোদর কর্ণ কর্ত্ত ক আভিগায়কণে ভির ে কত ও তাহার উপহালে সংশ্রাপন্ন ও মর্মপীড়িত হইয়াছেন,

অৰ্জ্জুন ও ভীনের ছয়বস্থা বিল্যানে বীকণ ক্রভ বিশা বদৰে ভূষে প্রতাবিক্ত বাক্যোক্তি করিতে লানিনেন। ভীম সুয়মানে স্পাদ্রান্ত্র রথারোছৰ করিলে পর পার্প সহাক্রোধে স্কৃতীব্রিটার বিক্লেপে কৌর্রয দিনের অসংখ্য হয়, গঞ্জ রগ পদাতি শশুংকরত চতুন ও বেলাইশিষ্ট পাকিতে সমস্ত বিন্যস্ত সৈন্যা ভাস্তরে একাদশ জোশোজীর্ণ ইইলেন कित्रकृत इंदेए भाभाशिष कर्मा भार्यत तथ रिक्स सी मंत्रीकन कत्रिया मध्रे छत्र मक् निष्ठ रहेत्रा मिस्तुत्क शनायन कत्रिल। नांत्राहरू ভিটিলোকন করিয়া অভিশয় ভারানামুক্ষিত হইলেন ৷প্রিটেইট্র ভগ বান পাঞ্কুল রক্ষাথ স্থদর্শন মহাচক্রবারা স্থ্যাক্র্যিন ক্রিটে আক श्चिक जनी अशुन्य इरेल। उपन पूर्व्यथन अञ्चल मानत्म अश्र धनि कत्रज शास्त्र महिदिएक छेन्द्र इष्टेशन। जर्ज्य त्मत्र अधिकास्मिदि খনং খ্রীহারী বিবিধ সৌগন্ধি কাঠ শ্রেণী পুর্বাক সংস্থাপন কর্মত প্রাক্তি প্রদান করিলেন ভাষাতে গ্রাণ ভর্গবয়ুত হুড়াশন স্ফুলিক কদম্পাণ মার্গে উড্ভীয়মান্ হইডে লাগিল, প্রবল প্রেবাহিত শ্বন সহকারে र्धार निर्देशास প্রচন্দ্র भारत श्री कालिक एक एक प्रमास का निर्देश দেনে এংজার সন্ধিহিত হইয়া শর চাপ করাকর্যণ স্থর্বক ধারণ করিয়া সপ্তবার শোচিকেশ দেইন করত প্রদন্ধ হরিমুখ নিরীক্ষণ ও কিৰ্দিৎ কাল স্থিতি করিলে চুর্বোধন সাহাস্তবদনে কহিলেন "পাবক প্রবৈশে বিলম্ব হৰ্টলে শেষে প্ৰাপঞ্জিক মায়ায় বৃদ্ধি ছাইবেক আতএক চক্ষুদ্ধ জিত করিয়া শাস্ত্র ঝশ্য প্রদান কর , ত্রুজ্জন ভূর্বের্যনের উষ্টীর্বাক্ত প্রবণে উক্তকরিলেন,রাজন্। তুমি জয়দ্রথ লইরা গৃহে গর্মন কর,ভানি এখনই অগ্নিতে আছু সমর্পন করিব, অনন্তর আর্ক্সন সরিধানে खेंच अर्थरक हुई क्रियो कुछ मछिट शहेना कुछ अतिहै मटे कहानाय अपनाने क्लामन पूजि कतिरंग कामाल्या जास्कितवज्ञान शतियाल हरेन रेजाफर्ग गानात पर्नत्न आदुनामात्रा बाखता रक्ष रहेता गति चरर कोत्रतपण मध्यामयुक्त धर्वः कमर्ठ शृक्ष्यः कंद्रतात इत्कत् मचे कशक অষ্টিক করিতে, অক্ষা হইয়া শেহ অঞ্জিকাঁটা বিদয় লক্ষ্টে ক্ষিক

-

हुई, रहेद्राम । भेरे रूपकारम ककावित रूफ कहिरमय अदय अच्छा म अपि ক্ষুত্রকাবস্থিত ভাচে ভাতএৰ আমু কেন জন্মত্বৰ ববে বিশ্বৰ করি 🗯 🖈 পালিবের মৃগুছেদ করিয়াভূমিতলে পতিত না হর এতজ্ঞপে দাৰে হ কামাবনে উহার পিতা নিজু নৃপতির কুজান্তরে প্রকেপণ क्रिंडिंग हका भारता * शाथ अवस्र कार्राटन क्यांतिश कार्या नक्शामान করিলে সন্ধার সময়ে গুণসিন্ধু সিন্ধুরাজার সন্ধোপাসনার হস্তবন্ধ অলাঞ্চলি মধ্যে হও মুগু পতিত হইবা মাত্রেই তিনি সত্তালে তমুগু ভুনতলে বিচক্ষণ করিলেন ভাহাতে সিন্ধুর খীর্মনিস্তক ছিল হইয়া ভূমিড**লে পতিডও জীবনের শেব জলাঞ্চলি দত্ত হইল। অর্জ্জন অবি** লঘে সাজকী ভীৰ সহিজ প্ৰদৰেশ্যে বুছে বহিৰ্মন্ত হইয়া নৃপ চুৰীপে उभनीक श्रेरतान । यथिष्ठित अकास श्रेष्ट्रीरिस्त आनिक्रम अनाम ভূৰ্ত্তক উপাবেশন বোলা দিবালিন দিলে কুপানিধান ভগবান ভগ মে**থের সূত্য বিষয়ণ আ**ৰণ করাইলেন। বিপক্ষ পক্ষে বৰকান্ত না চইয়া ভূর্যোধনা**ন্তায় লব্ধ**২ উলুকা প্রজালিত করিয়া রজন্যদয়ে সমীকন্থলে স্থাপত হুই**ৰেন তৎ ন্**ষ্মীক করত বাহিনী সাহিত্যে পাশুব্যাণ্ড ্ঞালোকাভাবে শভ ২ উলুকা জালিয়। মহারশোণগাহী হইলেন। বাৰা ব্যক্তিরকে ধৃত করণাশয়ে দ্যোণাচাগ্য অতুলা পরাক্রমে অনীক সম্পন্ন করাতে ভীম পরাস্ত হইলেন ডংপবে সুমরাহরাগী অভিস্কী জ্বোৰ অকাৰ্য্য সাধনাৰ্থ মহাবদ প্ৰকাশ প্ৰক্ৰি রাজাকে গুভ করণোগড হুট্যা নূপতির <mark>শ্</mark>রহীর নীরাঘাতে ছি<mark>য়ভিয় ও মৃ**চ্চা পন্ন করিলে**ন স্</mark>ধি ্টিন্ন রখজ্ঞান করত ভ্রমোপবেশন পূর্বক শোকাবিষ্ট ছইয়া উপায় ক্লিক্ৰাকাৰতে ২ ঘটোৎকচ মহাবীরকে দেবিয়া মুক্ত কলগাথ দুঢাহুক্তঃ দান কবিলেনা হিডিমানন্দন জোঠডাডাজায় নিনেবকালাভাজুরে ব্যহ ्यन क्रब्र देनना निदास्त्राहाताल अदिहे स्टेस्त क्रम्युमद्रवर्करम स्वीय

^{*} স্বর্গর স্থান্তবলে এই বর দিয়াছিলেন, যে ব্যক্তি ভোগার ছিন্ত-শিক্ত ভূমিতনে নিজেপ কুরিবে ভাছারও তৎক্ষণাৎ মৃতছেদ হইবে বিজ্ঞান ভগ্রান্ত্রী দেই প্রতি উভাদেশ করিবেন

প্রত্তি ভাষণ মহাবোদা কুরুবৈন্যারগাচারী হইয়া স্থানী প্রকার প্রান্ত্র দহাসারারস্ক করিলেন ৷ ঘটোৎকচনীর উৎকট প্রভাপে ভূঃশারীর পুদ্র লোবণকে সংহত করিয়া ভজনেকের কর্মচাচদ পুরুগ্রর বজেটিটা করিলে খনদর দরীরে প্রবেশ ছেতুক মোহিত ছইলেন, ভর্নাথবাস্ অতি কোপে উগ্রামন্তি করিও নামিতি স্থাবে উপত্তিতি নামেই ভীষণভীমভনৱের অসহায়াল পীড়িত ও মগাঘাতী হইয়া রৰে ভঙ্গ দিলেন তদুষ্টে ভাৰদ্বাহিনী সেনানীসহ প্ৰায়ন করিল। ভীমনদ্দন श्रीय निक्राय क्ष्मुश्रमा धातम पूर्वाक अनश्श ताकन वक्षियाँ । काकी र কৌরব দৈনা সংস্থার করত শেষে অলম্ব ব ওতদাভমক্স অলায়ুখকে ্বিষমায়ুধ প্রহার করপুক নিপাত করিলেন : শ্রেনন্তর পাশুকে নিধন करी यु खन्न हरेट बामन याजनान्नद्ध निटक्त करित विभक्तीय যোদ্ধাগণ একাগ্রাচিত্তে একদা,বিবিধান্ত বর্ষণ করিতে লামিল,ঘটোৎ কচের শরীরে শত ২ প্রক্ষেপিত বাব পূলবছিল হইয়া অজস্রক্রক্রব ধারা ধারাধ্য বন্ধরণী পতিতা হইতে লাগিন, তাঁহার কায় লোচিত্র বর্ণে প্রাত্তঃ এভাকর প্রায় প্রদীপ্ত হইল, তাঁহার শিং হধ্বনিবদ্ধের। গভীর গভর্ম ব্যোসাস্থান্লম্বী হইতে লাগিল ভক্ত কৰে অর্মতি সমূ হের অবন শক্তি রহিত লইল িনি রাগৰূপ সাগর তরক্ষোত্মস্থিত হুইবা স্থান বাহুপাল্ডন প্ৰধান বিপেদ বিদ্যোগিত অখিলাছ নিৱাৰৰ করত কোটি ২ সৈনী সেমাপত্তি হতাহত ও ভাবদ যোগাকে পরাভূত করিলেন। রাজা **তুদ**োধন ভদশ**লোক**নে প্রাস্থাহ ব্যাহ পরিগত কইয়া শোকাকৃষে তাঁহার হৃদর শুদ্ধ ও চিন্তাল্লরে কৃশ্দিক কলেবরে অস হাতিভাগে বিসম গাতালি প্ৰজ্ঞানিত হলতে লাগিল। এমভকালে कर्न त्यांनीत जनदर्शास शक्यों क्यांन यसान श्रीक चरहे। १कटाई बरका ভেদ করিবেন জিনি ঘোরতর তিমিরাবৃতা ভাসসী দ্বিতীয় প্রহর সময়ে भःशङ्ख वरेद्रान्। **छाँदात दांतन वाकन विद्धीर्ग नीर्य कल्या**त समहस्रद्रान প্রভিত হটুলে কৌরুর প্রকের বহুপত্তী হক্ষি ছটুল ভরিরীক্ষণে উভয়

^{*} वर्ग रेखन इ अवशाजी चक्क वर्क्यून निर्मार्थ ए ४ जाविशाहिरणन ।

क्षारे संहरकात्विद्धार क्षान्य कतिएक निश्चित । ब्रेख किया रहेक দুনৰ ব্ৰহমান্ত্ৰক অভুন আৰম্ভ পোৰু প্ৰনঃ ২ আৰাহিত হইরা। লোগন ব্রুক্তের ক্ষেত্র হইলেন। পরকরে লোকাভিয়ত ভীম রিপুতৃক বিমা लाप द्राप्त अस्तरण नीश्चिमान उदेश समय क्षणारम चीत्र रास আছের গর। । প্রতিষ্ঠ প্রবিক সমস্ত রজনী রা সাধন করিলেন। ভাঁহার গৰামাতে প্ৰতিপক্ষীয় ৰাহিনীগণ ও মুখীচনু সমস্ত বিভাৰরী জাগনণ হেতুৰ হৰ কভিয়ে ও কুণা তৃকায় ভাঁহাদের অংলোঠ গুলু হইতে নারির। তাঁহার। বহুতর কণ্ঠ শীকার করিয়া ও এমারে নিভার করভ ক্রেশঃ নষ্ট হইতে লাগিলেন, ছুর্দ্ধর্য দুর্গোধন ভূপভরে কন্দিত कार प्रमुक् इत्रपृष्टे उद्योग तथ यात्रवाममध्यक्षिराजन, महस्यांनीक्र' ধনস্কুর সর্বান্ধন করেওবৃদ্ধ নিবৃত্তি করিলে অশেষ ক্লেশ শ্রীপ্ত সমস্ত্র সময়নী ও রাজাগণ অগণনীয় ধন্যবাদ ভাষণে তাঁহাকে বিজয়া শীৰ্ক্মাৰ প্ৰদান কৰিয়া নিজাবিল নয়নে জচেতনে শৰাকায়বং প্ৰতিভ হইলৈন ভশ্বের কেহ ২ স্থুনিতে কেহ ২ প্রাদির চুর্গদ্ধামোদিও স্থানে **ক্ষেত্র প্রোপরে অঘোর নিক্রিড হইলেন, পার্থ সমূহ খেদ সহকারে** ছুর্ব্যোহনকে শভাধিক থিক্কার পূর্বকে স্বীয় দলবল সাহিত্যে শিবিরে আজারত হইলেম। পঞ্চাদিবদ প্রত্যুবে কৃষার্জ্জন বৈর প্রভীকারথে **मध्यक्षकान समीरम गमन क**दिलन । अमिरक क्रमान खोकांगरेनक ৰক্তে গ্ৰহণ্যৰ পকীৰ আত্তায় পরাজয় হিইডে লাগিল. বীরভোঠ ভাষৰত অসম নাহনে ভীমনহ মহাসংগ্রাম ও বহুল পাণ্ডব বাহিনী নিপান্ত ক্রমিলেন শেষে ভীমের প্রতি আন্তরণাদি স্থসর্জনাবৃত মদোৎ কট্ট স্থানাথ প্রচালন করাইয়া সহার্য্যানে স্বতীক্ষ্য দশ বাধ প্রক্ষেপণ পুৰ্বাহ জীয়ার গ্ৰহা ছিম করিবলন জীব অভি কোপে জলদন্তি সাহত বারিক বুটুলে ভাষতভার উপতি হস্তীবর চীংকার খনি করত ভাতো विक केंद्रिया केंद्रियक लहेनाथ ज अवर्की रहेन, जीन ७ मजनाकर छत প্ৰভাৱ প্ৰবন্ধ দ্বুত সময়ৰংবোগে তৎক্ষৰাৎ ধানৰ প্ৰস্লাভোৱে আকৰ্মৰ করিবেনারিম কুরি ও মধীলানখোদপদাকর্বন করিতেলা নিল্যালনার

ভীমকে বিপাকে পভিত নেরিয়া বোদার্গণ সহিত বুধিতির অভাত ব্যগ্রচিত্তে হাছাকার ধনি করত উপস্থিতামন্তর ভাঁছাকে উদ্বার করি त्वन, जिनि कियुश्कान विलाम श्रवःनत महावन वीराध्यकारन कृति कृष्ट স্থলে দারুণ মৃষ্টি প্রহার করাতেই কুঞ্চরবর অসহাবাতী গ্রহাজীত হইয়া গগণ ব্যাপ্ত চীৎকার শব্দ করত তথা হইতে প্রস্থান করিল। নারায়ণ ত্রিত গতিক্রমে রথ চালাইয়া তগদত্তের সম্মুখবতী হাইকে जिनि **अहर्क** नरक मिथशा स्मरण गाँदि दर्शलंद बाांस विभिन्न दर्शन कंद्रकः मिरे विकिश्व विद्यन्तर्शास्त्रं झालाहेता बिदलन, मस्तिवर्ते वागुरवहण तत्था -পরে পতিত হওনোল্লুখ সময়ে গ্রীকৃষ্ণ অদ্বির হইয়া একপার্ছে সা**ন্দ্র** স্থাপন করি*লে*জিপরে পাথের নারাচাঘাতে ক্রেকুস্ত বিদীর্থ रहेदा शैक्षिक रहेल। ज्यानक जल्कनार तथादाहन श्रूकंक निरम्भाई কালে অর্জ্জনের প্রক্রিপ্ত ভাবদান বানে ২ তৃণবচ্চেদন করিয়া দৃষ্ বিক্রমে অসন্তানল সকাশ বৈশ্বান্ত প্রয়োগ করিলে পাণ নিষিত্ত 🖐 চিন্তান্থিত হইয়া তাঁহাকে পশ্চান্তামে রাবিয়া ব**ক্ষঃস্থলে জন্ত্র গ্রহণক্রি** लन, जनसत रेक्कारबाद एक विकृष्डरे निश्च रहेल भाग जमूर्ताई চন্দ্র পৃষৎক বিনিযোগ করিলে কিপ্তবাণ দারা ভগদত্তের শরীর দিশশু হইরা রথোপরে পতিভূহইল। মহদ্রিশ্ব নিখন হেতৃক পাশুবেরা মহা নন্দিত হইলেন কিন্ত চুর্ব্যোধন ভাষদত্তের মৃত্যুতে নিভান্ত শোর্কোশ ক্রান্ত হইয়া চিত্তাদৈধ্যিতায় ক্রমশঃ হতাশ হইতে লাগিবেনণা তুর্বার वीका जानाहांका रकावमध्य बरनामाछ हरेया शाखबरमन मही २ वाका भगरक शहास ७ वर्ग रेममा महे कतिया पार्टी नत्र क्षेष्ठात्वा श्राह्म ामानक कशिलन " अमा कामात अथवाना जीम शक्क निवम स्हें য়াছে,, দ্রোণ ইহা প্রবণ সূর্বকে অভিসর বিশিত ক্ষয়া উক্ত ক্ষিণেন অসরবর প্রাপ্ত পুদ্রানিধন হওয়া অন্তানন্তব, কিছা-ব্যবিদ্যান কহিলেই সভ্য প্রভাগ্ত হয় মেহেতুক জোণের ইহা হুচ প্রক্রীক হিল্পাবে ধর্ময়াক क्लाक वृत्राच्यां कृष्टित्व त्वांभा कृष्टेत्व सा क्रुक्शां किम व्यनुक বাক্যোক্তি করিতে স্বাক্তম হয়তা তীক্ষতি রোগে জাণকে করিক

ध्यक्षत्र नामेसीमा निष्ठप्रदे एक एर्ट्साट्ड व्यक्ति वर्षार्थ व्यक्ति वर्षार्थ व्यक्ति নৌৰ অক্সানিক হইয়া ও নিঞ্চিত নীরবন্ধিব্যার অস্থারিত্ব প্রয় ক্ ग्रेंस्नुरेंस विराम सर्भ अञाब मा कतिया छ सं कतिलार, प्रधानूम कवि ্ষেই সভাজ্ঞান-করি। অনন্তর নারায়ন অভ্যন্ত কোপিত হইয়া পুন वृधिकित् करिरंकन यमि जमछ। क्यान नद्रक भगत्मद्र जामक। क्र জ্ঞতে প্রকারাজ্ঞরে দ্রোধের প্রজায়ার্থ অর্থধারা হস্ত কৃষ্টিয়া ইতিমঞ্জ লঘুস্বরে উক্ত কণিলেই সভা হইবেক, যেহেতুক ভীম কর্ত্ত, চুর্বোধ सद्र अयथामा नामक इन्ही ७ यथार्थ इन्छ हरैशारह । 🗠 नछत्र युविष्टित প্ৰমঃ২ কুক ৰাজ্যাল্ডকৰে ভীড় 🕻 ও বিহাদিও 📸 য়া ছলতাৰুক্ত সভ্য : क्षेत्र ७ विश्वत्र अवस्थानारम मधूर विभएर शिक्तिरहेश। स्नाः रामुनीत প্রামে " অখনামা হড ইতিগজ লগুখরে, কহিলে প্রদ্রের স্ত্রী গভা অন্তারে মহাপাকে চক্ষু ফলিলে শরীর সিক্তানন্তর উচ্চৈঃম্বরে ক্রমন ব্রুট্ট বামকরে ধনুধারণ পূর্বক হল তলে স্থাপন করিলে ধনুপ্রতি অঞ্পতন হইতে লাগিল, কুফের বাক্যে পার্থ ও দুঢ়শর সন্ধান পূর্বাক क्रामानर्भ क्यांत्र राष्ट्रश्च क्रामन कतिता छार्।तकर्रं छन उत्तर्थ रस्विति হইরা যোর যাতনার সায়াচনি সময়ে রখোপরে পতিতহটলে গুইডুাসু শস্থ্যে ৰঞ্জা লইয়া ভাঁহার দিরশ্ছেদ করাতে ছূর্বোধন সহচ্ছোকাভি शास्त्राच्या रहे का अरबाधरन कहिरलन এই महाविशास कानकान कि প্রকৃত্রে ইষ্টার্বোদ যুক্ত ছইবেন। কর্ণ কহিলেন আমি পাওবগনকৈ অনায়ানে বুক্ত করিব। ইদুশকালে অথথানা আগত হইয়া পিতৃ ं मृष्टुः नंश्योप खेराने विमान मिर्क श्रीष्टिक्या क्रिकान व पृष्टे शृश्चादक मिर्फ मा कतिया जान पर्दा दन कतिय मा। यर्क पियम ताजा प्रदर्श শ্বন্ শকুনির পরামর্শে সহাবীর কর্ণকে সেনাপতিছে প্রাতিষিক্ত করি ক্ষেত্ৰ জন্মবান কৰ্ণ দিবা কবচ পারিধান প্রবাক চতুদ্ধি কে রণ ক্ষেত্র बिह्नीक्षेत्र कहुक विश्वहरक्का वह धनि जूना गळीत चटा हरनार मारी दरे লেন আহাতে খোলাগৰ চনৎকারে গডিহীন ছিত্রনেত্র স্ববিদ্যা পাৰব बाहिमी खात वर्ग मध्यून एक ममाभ्य क्रेसा युख्य ध्वर्क माज्य ह

ভাষদের কুলুত দেশের নৃপতি কেমধূর্তিকে গদায়াতে হত করাছে হর্ मह्माद्य वक्कतात्रारम वक्क नक भाखवरमभा मध्युत्र श्रृक्क न क्नास्क पूक করিয়াও কুন্তীর বুচুন স্মরণ হইলে তাঁহাকে শরিতাগ করিলেন। স্ক্রীন দিবলে কর্ণবীর অ্বারাজাকে সারখী প্রদে নিযুক্ত করিলেন এবং দাবানত্ত তুল্য অত্যুক্ত প্রতাপশালী কর্ণের শানিত শর একেপনে প্রতিপুঞ্জীয় **मिनावभी कांच**नामान बनदा अबि **एक पृत श**िष्ठ ने अप समत्रभारी হইতে লাগিল, ইছা সমব্লোকন পুৰ্বক বুধিভির নগতি ৰূপ নহ রুণোলাত হইয়া শেষে অসহনীয় শরে কর্জারুছ ও মুচ্ছি 🖰 এবং প্রা बिछ इहेडी निदिरुत् शिर्वात । तदन लक्ष वेद्धिनाती वर्ष्क व मेवीरक्षणवाशक ্হইয়া ভূপতির মুর্দশা জ্ঞাত করাতে তিনি ভাডচিতে শংসপ্তক্ষণ সম্যুদ্ধ বারণ করিয়া কৃষ্ণ সাহিতো যুধিমির সমিণি উপস্থিত। **হইলেন**। রাজ। ভাঁহার বাচনিক কর্বের অক্ষাব্ধ। এবংগ মহা জ্জ হইয়া **डीहाक विविध उदम्मा क्रांड कहिला, भिक् भिक् अर्छन उ**पन গাওীর সমূহশর ও জ্রীকৃষ্ণ নিয়ন্ত। এবং জুবন সংহারক হরদন্ত দিব্যান্ত্র সত্ত্বেও কণ ভয়ে পলায়ন করাই বিচিত্র কার্যা চ্ইরাছে। শৃণুরে বর্ষর ভূমি গাঙীবের যোগ্য ধর্মর নহ। ইদানীং অপোণে কুফকে গাঙীব দেও। মধুনগন সুবারি মহারথী হউন, তুলি সার্থী হও: ইত্যাদি আবোধঃ ছকাণী এৰণ পূৰ্বক ছকাৰ পাৰ্থ মহাক্ৰোৰে উপজ্বধৰং প্ৰায়ন্ত্ৰকত ছইয়। तांकारक अंध चंश करावार्य भूतः भूतः चंड्र महेशा वंश अनम् छेशिक्छ করিলেন : দয়ালু কৃষ্ণ অভ্নতে নিন্দা করত কৃষ্টিলেন, সথে ! ক্ষান্ত ত্ও, कना ४ छङ्ग्रक्रमाक वद्य कञ्चता मार्कः। धनश्चा क्रिक्ट्रिमा, एव वाक्ति व्यापादक গাঙীৰ পরিত্যাগ কারতে কহিবে তিনি মহাগুক হইকেও নিতান্ত হাঁগার বধ্য ছইবেন, ইছা নিশ্চঃ প্রতিক্তা আছে এবং যে অন্দোষ অন্বগত অথচ অপমানিত বাকা প্রযোগ করে, শাস্ত্রান্ত্রার ভাহার মর্নই বিধেয়। যদাপি পৰ লজ্জন ও গুৰু ছেম্বন উজ্জোভয় কর্মেই স্ছানরকে भगन कतिरुष्ठ रुप्त एरव रक्त निर्देश करतन । अतरगरम महाकृष्यक्रिक्यास হস্তম্ভাস আত্ম গলদেশে প্রদান করিতে প্রবর্ত ছাইলে কৃষ্ণ নংশ্রাপন

বান্দেঁ ক্রীইরি অনি এইণ করিলেন, অক্সুন কহিলেন, ছে স্বয়াময় (अहिंक) छक्तमिकाक्रण धर्मविशीम कर्य किन कविनाम? खाणा**छ**डः আমিঘাতী ইওরাই উচিত প্রায়শিচত বিধি। কৃষ্ণ হাসাবদনে উক্ত করি-র্জের, ইতার উপায়ান্তর জাছে, শাস্ত্রসমত আত্মপ্রশংসা করাই মরণ তুলা ক্রি, তক্ষেত্ক বার্যার স্বীয় গুণামুবাদে তব প্রতিজ্ঞায় উদ্ধার হওয়াই উচিড, অর্থাৎ গুরু গর্হণ ও ভদ্ধোদাত এবং শ্রুভিজ্ঞা লজন জন্য দোষের প্রায়শ্চিত সীবিভবান ব্যক্তিকেই বর্ত্তে, মতব্যক্তির প্রতি কোন প্রায়-**क्षिक निर्धात नारे। ेक्स्ने शार्च चकीय अनश्मा कतिएक नाशिस्त्रना** हेर नरशांद्र यम जूना ,शननिधि ও ध्रष्टर्धद्र शेद्र विक्रीय नाहे, दनना অপিত বাছবলে সমরে চতুর্দিক করী ছইয়াছি। ইত্যাদি খ্লাখনীয় াক্যোক্তি করাত চলজ্ঞায় ধর্মপুর্জের চরণে পতিত হইসা পুনঃ পুনী স্থাপরার ক্ষমা প্রার্থনা কবিতে লাগিলেন, রাজন্! আমি কলুস কবলিভ কাম আপু হইয়া মহাপাপযুক্ত বিশহিতকর্ম করিয়াছি, অধুনা কৃত কল্বান্তান্ত্রী সার্জনা করিতে : আজা ২উক। ধর্মনূপতি কৃষ্ণের প্রবোধে অর্জুনের প্রতি প্রসম হইয়া প্রীতি বচন প্রোক্ত করিলে তিনি স্লোচির भन्न में भूर्वक कर्व दशार्ष श्रीष्ठका क्रिया प्रत्यान छेलाइछ इटेरनम । মধনত্ত পজ সম বীরাব্দোদর ফুংশাসন [শিরে গদাখাত ও তাঁহাব রথাখ तर्ह्न कवित्रा कवनान अहात पांचा वटका दिनीन कवल अनाष्ट्रमादि कर् কৌরব বিদ্যাদনে রাক্ষ্যমূর্ত্তিতে ভাহার শোণিত পান করিলেন। কর্ণ ক্রেখনৰে ভীমাদির প্রতি দৃঢ় স্থতিয় শর প্রয়োগে বছ পাওবানীকিনী নংহত ও অঞ্চনকে লক্ষ্য করিয়া বাণ সন্থান করিলেন। দাবেদির তক্ষর विश्वतानमर्व शार्थरक ब्रकार्थ मरकांतिङ्खारच ब्रथाचानि ख्रीमण्ड कदि-र्लन। अकाराज्यात व्यक्तित सीविष्ट कीलिए छ एम इटेग्रा धत्नीज्या শতিত হইল। অনতর 🗨 হুক ভূবি হইতে রখোদ্ধার করিলেন, পার্বের ্ক্রাফিজ রক্তবাৰ ধারা করের রপচক পৃথীগতা হইলে তিনি অব্জুন নমীক্রিবুর্ত্তাল নিমিত্ত যুদ্ধ কনা প্রার্থনা করিলেন; ধনকর ভাঁছার मुझे वार्वेहींद्र केंद्रान भूकेंक क्लिएंक श्रेत्रा मचार्किएंग ल्लाहिएवर्ग शर्छ-লাক্ত সমজ্ল গটু স্কাশ ঘোর মেখাবলী প্রণ্মগুলে শোভমান হইলে-

বিনাপ্তরোধে স্থতীক মহাশ্র ক্ষেত্র জনকে স্কুক্তি ভ করিবের এবং ব্যব ৰাণে তাঁহ ৰ সৰ্কাঙ্গ সমূত হইয়া প্ৰসহ্য বাঙনাক পুৰিত ও পুৰিশাসী इंस्तित। सर्द अवस्त्र मन्त्रीवनीतं हत्वाहासः वर्दाको सर्दा पृज्ञार इर्ब्याधन नियम शाकश्रदन श्रांडिड ও हा करी हा करी। हेल्यका उन्नविध निवाशिक वादका व्यविधा इहेरनमा हा कर्ग! त्रमहरू मखग्रहात बाल অক্দে প্রবিচরণ করত অরাতি পকীর প্রতুর দৈন্য সংক্ষম করিছা আশৎ मध्या बंदरवादा विष्टम शतिष्टम धात्रव शूर्वक चर्म विवास अग्नान कति-ना, मन्त्रुि चामि वर्काखाखाद उद्योगाय व्हेगाय*। अधिव विवत নৃশংস অভাবুশালী হুৰ্যোধন মন্ত্ৰাধিপতি শলপ্তক দেনাপতি পদে নি হুত্ব করিয়া সমরন্থলে উপস্থিত ছইলেন। প্রভাতে পাওবেরাও খোদ্ধাব্যহ সহ রণে প্রবর্ত্ত শংলার ডিগ্নান্ত ব্যথিত হইরা যুদ্ধানদর্শ প্রযুক্ত জীতুক আংছেশে নিতা হাই জীমাদি ঘৌদ্ধাগণ সমৰেত হইয়া অপ্রিদীদ প্রা-क्राय महा ग्रहा यान प्रमान श्रृक्षक भवादक निष्णी एन करिएनन, नातामन মুধি গ্রিকে কহিলেন, এই সদয়ে উহাকে ঝটিভি নই কর ে রাজা বিশ-দিত হইয়া ভাবিলেন, যে বাবে পীড়িত ও বিকারিত ভাবাঁপর সাতুলকে खनाहम देव कहा कमाठ कर्डवा मरह, किन्नु मंचे ना कदिराव प्रथ करें वादर कुक्ष अकृत्वेद्धाल म्मुकेर क्रिके हरेरवन. व्यक्तकारन विस्व रहेक्क কুষ্ণের পুনঃ পুনঃ প্রভাদেশে শেষে প্রশারতর কর নিকর পরিবৃত উদা-দারণ প্রচণ্ড প্রভাকরোদীপ্ত মধ্যাহুকালে রাজা যুখিছির শক্তি শেক: ঘাতে শন্যকে নিপাত করিলেন। কুরুরাজা এডাদুশ অন্যায় সমরে একে-বাবে দুচ্রতে জীবনাশা ভ্যাগ করত শোকসলিলাক্র' নয়নে নিডাস্ক निर्मित्र रहेरबन । भकुनि नद महरमत्त्र महातत् उष्टाग्रहे खेळाग्रत गरन জর্জনিত শরীর হইয়া পতিত ও ফুছিতি হইলেন, কিঞ্ছিকালাভায়ে সহদেব সন্ধিত পাপ্ত হটয়া শক্নির কেশার্যর পূর্মক পশু সর্শ ধ্র করিলেন, তথন ভিনি হতজান, কম্পিত কার, একার অমূপায় হইয়া

^{*} ধৃতরাই সক্ষম প্রাস্থাৎ গুনিলেন সুর্যোধন পক্ষে একাদশ কোটি রপ ও তিন কোটি হস্তী ও দিপল অস ও ডিস কোটি পফা কিন্দু নাগওব পক্ষে এক সহজ্ঞ হস্তী, লক্ষ্ পদাতিক বর্ত্তমান আচে টি

ক**ৰ্টিকভনৈত্তে চতুৰ্দ্দিপৰটোভন** পুরংগর ক্তক্সপ্রায় রবিচলন। সহলেও जीराहि जक्तिको ७ मॅर्काजूक कुर्मनामि शूर्यकरीत हाउत द्वार नमूट वार व्यक्त वर्षीय में मित्र मरणीशनाकार विधानी एउपराव अभूनावधि वार्य्य भरीत धेर पर पूर्वक भगाकितामान कतिया श्राविका पूर्व कतित्वन, তিনি সূত্যশ্বাায় শায়িত রুটাকেন প্রত্তর সময়প্রাপ্ত ছইলে ধর্মাধন্ম व्यक्त चर्मा कनायां वावगारे रहा। चनश्चत शाधावत्रा तान एक कृत কৈৰীপাৰের প্ৰশাসনকালে যে বধায় হাহাকে সম্মুখে **প্রাপ্ত হইলেন** ভাঙা-কেই নিপাত করিচা জয় জয় শক্তে সময়জন্মী হইজেন ৷ যেমন শুজারতা मध्या मानामा अञ्चलित इहेगा तम मध करत अरगमा गरहामधि आधान কর্ম শোষণ ধ্বরে, তদ্রপ সিংহ সম স্বভাব কোপন তেজস্বী কৌরবের দল वर्ती भारत कर्क्क स्माविक उद्देश । इएसीधन बहे अमुलीय विश्वयकत বালি: বিলোকন করত উৎকান্তঃকরণে অব হউতে অককাৎ ভূমাবতরণ भूर्भक विविक्ततात्रा भागवात्क भागायम कतिराममः। अधियाशा भक्षय मह ठ निक्नु गुंशिक देववार मोकार इंडेटन मोनी कवनामसूत छोड़ाटक विष्ठांत्र বিয়োগভাজন মুর্য্যোধন কৃত কুনীদ সক্ষাদির প্রতি বিয়াগ প্রকাশ পূর্বাক অপার সমুদ্রের বিষম তরকোলান্ডিত কেলিল অল্লসলিলে শভিত ছইয়া বিজ্ঞানিকে देवशायन कुमाश्वरत भग श्राहाद स्माविमातन ৰরভ প্রবেশ করিলেন : রাজবিশার সঞ্চ বিমুখ্য হইয়া পরাবৃত্তিকালে कुल द्वीनी कुउनका मह माकार इटेल ममन नाई। नाक कतितान, ভাঁছারা ঐ দছে উপস্থিত হইরা কেরিবাদর্শনে উচ্চৈয়ন্থরে বিলাপ করিতে লাগিলেন, ভূপাল ভদ্চনে পলকান্তর ত্বর্ণে কালিনা প্রাপ্ত লানসুৰো-্রেলেন পূর্বাফ উাহারদের অমুখাৎ রণ শেষ বার্ডা প্রবণ করিলেন: সাল্য হস্তিনায় উপনীত হইয়া মৃত্যুক্তি সমীপে মুর্ফোখনের পদীরন ও ্ৰাষ্ট্ৰাপক্তেত বাৰ্ত্তা জ্ঞাপন নাব্ৰৰে একদা সৰ্বা হৃতথোপত্তিত ছেতৃক সঞ্চয়-द्धं कृष्टित्यम, द्वामम शक्तरीम शकी ए बनारीम मीम, शूग्रहीन प्राप्त, कन दीन कृष्ण, তদ্ৰপ প্ৰাণহীন সম দেছ পত্ৰন প্ৰায় হইল। হায়! হায়! श्कृतक्ष्यान्त्रभवीतः अख्यान वहरकाके विकतः शक्षाकानः अकानः इत्र नाः এ कि লটিন রায়াখারে হইয়াছিল। হা প্রঞাণ! গোঁকানল সভাপেনী

অবোধনী কানিনী বধুগণ জনাবিনী হইয়া কি প্রকারেই বা প্রাণ্যারণ করিবেন? হে সময় ! আর বে জনিবার্যা শোক সহা হয় না, ক্ষয়ালিরে কি বিষমায়িই প্রজ্বাত হইতেছে এবং অন্তত্ত হয় জাবার প্রহার্ত্ত প্রক্রান্ত্র প্রহার্ত প্রথাংশু বজ্ঞাংশু তনর কর্ত্ত প্রক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র ক্রান্ত্র করেক ক্রান্ত্র মংগকে প্রেয়ক্তর হইল। জন্তরাক্রের বিলপিত বাক্য প্রবণাত্তর সময় কহিলেন " মুর্যোধন দুইক্রান্ত্র ক্রান্তেই তাবমন্ত হইল।" ইতি শারাবল্যাং ভৃতীয়র্গরিক্রেন

পাওবেরা সংগ্রাম সমাস্ত পূর্বক রণগুত মহীপালের উদ্দেশার্থ ছাত্তিলা প্রভৃতি নালা স্থানে দূত প্রেরণ করিলেন। চরচয় দুরাদুর প্রন পুরংসর স্ক্রাম্মক্সুরূপে ইতন্তভোম্সন্ধানেও কৃতকার্য্য ছইল না, ভীমের ভোষণ হেতুক নৃগরার্থে শ্রেরিত ব্যাধগণের প্রান্তবাৎ কুরুক্ষেকের পূর্বাংশে বৈপায়ন হুদে ছুর্ফোধনের অবছিতি বার্ডা এবণোত্তর পাও বের। সলৈন্যে তথায় উপন্থিত হইলেন। ইতিপূর্ফে জৌণী রূপ কৃতবর্ম। কৌরব নৃপ নেদিউ ছইয়া কীদৃত্মতে পুনমুদ্ধ সাধন করিবেন জন্মপ্রণ-विक ছिलान, छाहात! मृत इहारू कठेरकत लीयन निनाम । अ विविध वारणाणम कुनिया अन्तान कतिरुक्त, इर्स्यायन वार्यावास्त्रत अस्वन করাতে ধর্মাত্মক ভূপাল কৃষ্ণাদেশে তৎপ্রতি কটুবাণী প্রয়োগ ক্সিড লাগিলেন। তৎক্রত্বা স্বধর্মত্যাগা কৌরব উপরত স্পৃহ হইয়াও ধর্মের দর্গিত বাক্ষ্যে দর্শবাঞ্চ পাইছা পৃথিবী নিশ্পাঞ্চবা করণাশয়ে হেম্নিরি দদৃশ দীপাদান শরীরে স্থবর্ণ থচিত জৌহ গঠিত ফঠিন গদা থারণ পূর্বক ভুক্তবলে জল বিদারণ কর্ড দৈনাক পর্বতোপদ নীরাতার হইতে উত্থান করিলোটাহার কর শোভাকর এদীও এতাকর বন্মহামুদার দৃষ্টি পুরা-नत भी श्रद्धा अठास गमक इहेरलम्। अभर्याश्च दल दक्षिण कीत्रद রাজেজ ভীম সহ গদাযুক্ষ পণ করত মহাক্রোখে এক শৃক্ষ পর্বতোপম দণ্ডায়মান হইলেন। ভীমও অতি কাহলে বছকণ মুদ্ধ বরুতে পূর্বোধন ভীম মস্তক সংচূর্ কর্ণানয়ে খুন্যোপরি লক্ষ্ পুদান পূর্বক উলিভ

्डेनामार्ट्या जीने केन्स्रकात है जिल्लानरमा कीतरवत खेळामण बक् নম পদা প্রহার করিলে তিনি গুরুতরাঘাতী হইয়া ভূমি পভিত হইলেন। শাস্ত্র নিবিদ্ধ নাভির অধঃস্থলে গদা প্রেহার হেড়ক নানা ভীর্থপর্যাটক ৰসনেত জীমের প্রতি জীতিকোপিত হইলে ক্ষেত্র প্রত্যোধে জোধ সহরণ अर्थक छथा १६७७ अञ्चान कवित्तन। जीम कुक्रवात्कत महत्वांभाद बाम পদ অহার করতে শিরোমণি ভগ্ন ও ভূমাৎপ্লুত হইতে লাগিলেন। ভিদ্যুট পৃথিতির জীমকে বহু ভিরক্ষার করত জাতু বধতাপে রোগন করিতে कृति, क द्वणांबनातम चौरममा ब्र**ष्टी समर्वाद सदल वर्षेत्रा निविद्धः शास्त्रम**ः অমন্ত্র কুপ, কন্দ্রামা, কুতবর্দ্ধা যোৱাঞ্চার নিশাসালে ছুগোধন সহ সন্মিলিত ১ইয়া নুপতির উত্তভঙ্গ দুটি পূর্বক শোচিত ইইলেন! দ্রেণী পান্তৰ মাশাৰ্থ প্ৰতিজ্ঞাত হট্যল কোত্ৰ ভীহাকে গৈনচাপতো দিযুক্ত কবি-জেল। প্রশ্নক্ত ভিন বীর সেই খোরা বজনীতেই পাঞ্চদ শিবির বহিনারে के श्रीकृत क्षेत्रक कुश्रीकार्या, ज्यागिरानक स्मिनीरक कहिरानन, श्रांखव श्रकीय দেন্দানকালি মুল পরিজ্ঞায় স্থানিজাবস্থায় আছে, একাৰে ভাছাদিশাক बक्त कहा कर्छवा नहा, पार्थ प्रांशीधन प्रार्थित वन्ता हरेशा फारश्याण পদার্পন গৃল্পক বিলক্ষণারূপে তৎপ্রতিফল পাইয়াছেন, অতএব সৎপত্থা-বলগ্ৰী হটগা বৈপরীতা স্পাহাতে উপরতি হও। প্রেণী ভাহার প্রতি-্বাধিত বাকাৰজা করত ছার-রক্ষক মহাদেবের স্থাপে প্রতিমিন্তি পূর্বক ধারমুক্ত প্রার্থনা করাতে তিলি অস্থাকৃত হইলে তৎপ্রতি বায়ব্যা-জ্ঞাদি বর্ষণ করিতে কবিতে ভূণশূনা হইল. তথাচ ভরভয় জীত পরস্রাতা ভগৰন্ভ্ডেশ ভীভিষ্জ হইলেন না, স্তর্গ ছোণ স্থত সবিশায়ে ভাঁহার পরিচয় জিজাদা করাতে লিব স্থারগঙঃ বাংকাজ করিলেন, ক্রেণী শঙ্কর প্রজা পুর্বাক শিবের হস্তত্ত্ব অসি ও হারমুক্তি পাইবে প্রশ্নিব-द्रोख्ड अः म क्रिया जामी अकेहान्नरक वथ, अन्तर शाक्षव बरव स्त्री-পদীর পঞ্পুক্রের শিরশিদ্ধ করত অন্যান্য তাব্ৎ বোদ্ধা ও বৈনাগ্রহ রিপাত পুরংসর গুংষ্ঠাধন সমীপে আগত ইইয়া ঐ পঞ্চ শিশুর শির

^ক রব সমাতে ক্ক সাতাকী সহ পাণ্ডবেরা রাজিগোণে হাতিমার গমন ক্ষিত্তিক।

ममर्भन कविरामन, ब्रांका महाहर्स खोशहीत विजीय शुरकत जीगांकृष्टि नूख জীন জ্ঞানে করচাপে ভিলবৎ চূর্ণ করিয়া ভাবিলেন, এ কথন গুকোদরের মুও নছে, অপর চতুর্মন্তক জনায়াদে ভগ্ন করত শবিষ্ঠার কলিলেন. হে ক্রেনি! পঞ্চ পাওনের এই মুগু কখন নহে; ঠাহারা জীবিত আছেন, হাঃ পাঞ্ধ সন্তান্তিগকে নক করিয়া কি অকার্যাই করিলা, হাং গ্রন্ত : কুলে জল পিও দিতে কি একজনকেও গাণিল। নাং কুরু পাওঁৰ উত্তর कुलरे निर्दर्श हहेता। हे कुछि कहत वर्ष विभारत आर्थण हहेग्रा हर्स বিষালে নশ্বর শরীর পরিভাগে করিলেন ৷ পর্যদিন প্রান্থায় অখপায়া কূপ कृष्ठतम् वीत्रज्ञ आभग्राम् स्वताचिम्रयः अमन स्वित्तनः । व्यास्वर्णने । भूके ब्राप्त नामा मात्रकी चामिनीटक व्यक्तित दिवम ११३ दिकादक गव महत्त्व। জ্ঞায়িত ছিলেন, তিনিও প্রাভাকালে হাজ্নাম উপস্থিত হইয়া যুখিছি-রাদির মনীপে বুদ্ধবার্স্ত। বিজ্ঞাপন কারলে জ্ঞাপতি শাতাকী লাহিন্ডো পান্ডবেরা সনিবিয়ে আগত হইয়া মৃত পুজাদি তথা ধৃষ্টল্লাম বিরাট নূপতীত্যাদির গতিও কায় দৃষ্টানন্তর মহ। বিষাদে ক্রন্দন করিতে লাগি-क्षत्र । भुक्तानित स्पारक नेत्रवाहीना ध्योशमीत वाटका वक्ष शहेगा जीवाकन অশ্বধানার মুকুট ছেদনার্থে প্রতিক্তা পূর্বাক যুগিকিরের আনেশে নকুক্তকে সার্থি করিয়। যুক্ষাত্র। করিলেন, প্রাচাৎ জ্রাছার সহ রাজা সলৈন্য वारणाञ्चरम भूगत शृक्षक भूभाषिक दक्षेत्रीरक मादशार्थ केषुषुक होरू जन : দ্রোগায়ত সভার ভীনের প্রতি <mark>ইষিকান্ত্র পরিভাগি করিলে ক্ষে</mark>ব উপ ংশে পার্থও ঐ প্রজ্যান্স প্রণ্য বাদ বার্থ কর্নার্থ স্বটিভি সম্বর্নান্ত্র প্রামার করিবিন। উভয়ের মহাক্ষে নাবদ বাংগ অভিটান প্রকি যুক कांद्रि कहन अञ्चमित मितन देवकानिक अर्क्न कीशोध बोहर केरिएम । লৌণী কলিবেন, আমার জনিবার্যান্ত্র পাগুরনাশ ব্যক্তীত প্রকাশক্তন उद्देश्वक को, अछदाव यम तरिब छेरुबाब शर्मश भूख क**रे** इंडेक । रमध्य ग्राहम्य **উপদে**শ **अक्ष्मा**मा अम्बन्धक मनि छ्वम श्रूरीक कार्यक দিলে নিজীকৃত প্রাধে ধানক্ষীবন শিরাপীড়ায় নড় কত পাইয়া অস্থির চিত্তে অমণ করিতে লাগিলেন এবং তাঁহার স্থামনাপ্ত ট্রাভার সংল क्षरदेश पूर्वक बलुद्रांत्रका नकी इंडेटन आकृष्ट जगत्तर के महास १४ छ।

भूमग्र् कीविङ काँद्रासन । अहे अकादत खेनविश्मक विनाम यम सम **क्रमक ए**टाणन निवृद्धियः चान्न वर्षन मासि एदेन। क क्षीकृष नह नाकानत चिनित्त शनन कतित्व ताकानत स्त्रीतित শিরোমণি জৌপদীকে দিলে ওাঁছার পরিতাপ দূর ছইল। অফাদশ দিবস প্ৰান্ত কুলক্ষেত্ৰয় বুদ্ধে ছৰ্যোধন হত হইলে সঞ্চয় আগতে সমন্ত বৃত্তাত ধৃতরাকু নদীলে বাজ করিলে। পুজের মৃত্যুতে শোকে অস্থির ছইলেন। অন্তর পান্ধারী অভৃতি অন্তংপুরবানিনী ভাৰমারী দহ ধৃতরাইা কুর-ক্ষেত্রীর যুদ্ধর্শে গমন করিলেন। রাজযহিলাপণ ব স্থ পতি পুজাদির मृत्रामच प्रमित्न (माटक घटेठलता) क्षेट्रामन अवः जीकात्राहर व्यक्तमानि विश्वविश्वास प्रदेख नाशिन, नेतृमकादन लाकप्रवसः वाकाती वर्षातः বৃত্তভন্নত্ব সমন্ত্ৰল দৃষ্টানন্তর ৰশ্লালক্ষপোপেত প্ৰৰোধনের মৃত্ৰায় বি-লোকমে রোদ্য করত কহিলেন, দেখ কৃষ্ণ ! ঐ রাজা ছার্যাধন সম্রশায়ি হইয়াছেন, বিনি স্নিশিত অত্যত হেৰপৰ্যাকোপরি মূপী প্রভৃতি পুস্প বিহারিও হুছকেও বিভাগাণার শরন করিতেন, অল নেই তত্ত ধুলার ধুষরিত ও শোণিত শোণিত হাইল। আফাং মরি মরি। মহা প্রাম্থ পুত্র বিষয়ার সূত্তি ত্যাগ ত্রত ভাষ সহ পুদ্ধ কর, তেখির সেই স্বন্ধর শ্যেরানন দৃষ্টি করি। আনওর জীকৃষ্ণ তাঁহাকে সামুনা করও বিস্তর প্রে-বোধ দিলেন, লেবে গাঞ্চারী ভাঁষার পাক্ষিকভা ও চতুরভা প্রতিপর করিয়া অতি বেদে অতিশক্ষাত দিলেন "বে প্রকার আমার অভুর্নাহ জইন্ডেছে ভক্রপ ভোমারও স্থ্যবন্ধ! হাইবে, এর্থাৎ জ্ঞাতি কর্ত্ত ক বছ্রংশ নিপাত হটবে' শ্ৰীহরি অলজা সচীর বাকো খেদিত ও নিভাত খ্রীড়াব-लझी इहेजा बिका माग्न इंता श्रीकातीत (शांक स्थापन श्रंतक व्यक्तवाकात **ক্রেটি, বুল্কে হন্ত প্রতি**ত ব্যক্তিগনের দাখারির উপনেশ দিলে তিনি তৎ কার্য্য নাগনার্থ নুধিন্ডিরকে অন্তর্মতি করিলেন। ধর্মপুক্র উভয় পক্ষেত্র ষ্ত **খন্ধন কুটু**ন নিমক্সিত ভূপতি প্রভৃতি ও গৈন্য সেনঃপতি তাবজনের শরীর সংকার করত অভ্যেতিকিয়াদি সম্পন্ন করিয়া জীকৃষ্ণ ২ছ রথারো-रन अर्थक एड्कर्ट केखिनार शुर्तम कडिलान । यक्ताको यूधिकेत ताक-পালীতে ক্লিক্তিনস আবহিতি পুলক কুলকেতীর মহা সং**ঞানে লর**শবদ

वर्भारतीयन भवत्।

গত ভীক্ষ শাস্ত बबबीत मधीरण भयन क्रिया मनाइश्रम ऋष्ट्रित अर्थे তিনি পৌলাদির মুখাবলোকনে মহানদিত হইয়া নানা আছার কৌ कथन श्रुद्रः गत श्रुक्ष निर्वक्ष गहकारत माधीय निर्देशित भीरंग भानत्वास्त्र नव জলধর কচি জ্ঞীমন্নারায়ণ নিরীক্ষণ করত খীয়া শরীর পরিভাগে পুরুষ षिवात्र**ः प्रशंभू**रत श्रेष्ठांन कतिस्मन, ज्मीकान यूपिछिता पि कक्न क्रांद्र ব্যাসন্দেৰ ভাঁছারদিগকে সাজুন। করিলেন। রাজা সুধিভির ভীংগুর শরীর ভস্ম করিয়া সংহাদর ও জ্ঞাতি প্রভৃতির বধ প্রায়শ্চিত্তারে ক্ষম্ নেধ মহাযক্ত সম্পন্ন করত জভেগন সহ সমাগরা পূর্ণীপানন ও একাধি-পভা-রূপে ৩৬ বর্ষ রাজত্ব করিয়া অন্তানের পৌত্র পারীক্ষিত্তে তাছি-নায় রাজ্যভারী দিলেন এবং জ্রিক্তফের প্রেণৌজ্র মছবংশের শেষ অনিরুদ্ধ ভনয় বৃষ্ণিবংশধর বজু'নামক এক ব্যক্তিকে মধুরাপুরী হইতে সকরে আনাইয়া কুম্থের উপকার খারণ পূর্ব্বক স্বীয় কৃত ইন্দ্রপ্রস্থানগরে ভাঁছাকে রাজ্যতার দিয়া অতুল বিভবাদির প্রতি বীতরাগ প্রকা**শ করত পঞ্চজাভা** মৌগদী সহ বিদালায়ের শিলামর গ্রেকিটা হট্স শিশারপ্রায় বেগে वसम कतिएक किंग्स अक्षां। द्यालंडाचे द्वासूक खेर्च इटेटा, व्यापी দ্রৌপদী পরে মহদেব, নরুল, অজ্বুনি ধরাওলে গতিত ও হড় ইইলেন গ অনন্তর সোমেশ্র পর্যাতাভাতরে রেবানদীর উত্তরে রভুদর স্থাদর গিরি দর্শন ও সোনেশ্বর শিবাচ্চনা পূর্কক উদ্ধার্থনন কভিতে করিতে জাশীতল মহাহিমানিতে ভিন্যান হইয়া ভীম অধঃপতিত ও য়ত হুইলেন : তঞ্-खदारमा भोगकी नक्षमामन श्रेकाल अकाकी धर्मद्रोक नयन श्रु क अश्रुक्त মরকতময় মহেশ-লিঞ্চ পুজা করিয়া কিম্নদূরে কিন্নরপুরী ও তদ্বভরে ১৪ সহজ্র শিব্লিক হাপিত লিফালয় গিরিতে বৈতর্ণী সরিমীর পার হইয়া বৃক্ষমুলে উপবেশন ও বিশ্রেষ করত স্বর্গ দ্বার দর্শন বুরিলেন, ভথা হই-তে এক যোকনান্তর স্বৰ্গপুর অবশিক রহিল। সুধিষ্ঠির স্বৰ্গ খানে সমন করিলে দারিমূথাৎ সংবাদ পাইয়া ইন্দ্র বিপ্ররূপে ও ধর্ম কুন্র মুর্ভিঞ্চে ছলনা করিয়া ভাঁহার ধর্মা ও দয়ালুতা ব্যবহার দুক্টে তুফ হুইলেন : ভং পরে রাজা ইন্সালয়ে গমনোর্ডর দিবা পুল্পক রখারোহণ করিলে মাতুলী যুগিছির তথায় ষদ্ধরে রথ চালাইয়া বৈকুঠধানে উপনীত হইলেন।

শাবিকার, ক্রিন্দিপুরী, বিক্থান দর্শনানন্তর অন্ধকরেনয় যমাধিকত বিক্তাপে গ্রমন পুর্ণনা কিছুই দেখিতে না পাইয়া হতজানী হইলেন।
ব্যাক ভীয়ানি উহিকে সম্ভাবন করিতে লানিলেন। তথন ধর্মরাজ লয়ক লগনের করেন কিছিলিনে জীক্ষণ উর্থা করিলেন যে "প্রোণ ব্যাকি অনিম্নাকে প্রেণ্ড করাতেই গুরুব্ধ পাতকে স্থালয় দর্শন-করিলা' (কিন্তু জনমেজ্যের প্রথা করাতেই গ্রুব্ধ পাতকে স্থালয় দর্শন-করিলা' (কিন্তু জনমেজ্যের প্রথার ইল করাতেই গ্রুব্ধ শক্ত যে "অসম্বামা হত, ইতি গল," লগুরুত্ব উল্ল করাতেই গ্রম শক্ত ভৌগের কর্নগোচর না জইয়া কিয় প্রথার মুদ্ধান্তিন মহাম্যোক রবে প্রোণ্ড করেন। মেই মিথারাক, কলম প্রেপ্তার ইছিল করাতে গ্রাকি দর্শন হইলা) পরে ধর্মিনাক্র ক্রোজান্ত গরি চারত হইলে অনাক্রিক জনাতর তথা হইছে নারাম্ব দর্শন উপনিত হইলে অনাক্রিকে ক্রিক্তার যে ক্রিক্তার প্রাক্তি হন্ত্র ক্রিক্ত অপারামন্দ্র বিভা ক্রিক্ত অপারামন্দ্র নিতা ক্রিক্ত ক্রিক্ত অপারামন্দ্র নিতা ক্রিক্তি হইলেন।

মহারাজা হুর্ফেল্ন বৃত্ত প্রতিজ্ঞা পূর্পক প্রতিমন্ত্রী শক্তির কুমন্ত্রণায় বংসামালা বিষয় প্রদানে অস্থাকৃত হই য়া পাওব সহ ব্যাতহার সংপ্রাম করণ বিষয়ক অবিলেচনীয় সম্বল্প থাবজ্ঞীবনপর্যান্ত ভ্যাপ না করিয়া ষেমন অবেধে পভঙ্গ দাপ-শিখার নিকটে সাইতে উদ্যোগ করে এবং সমাপুপে তাড়িত হইলেও যাবজ্ঞিয়া পতিত হই য়া বিনই না হয় তাবৎ কাল পুনঃ পুনঃ পতনোমুখ হইতে তেই। করে, তরুপ তিনি আসমন্তালে বিপরীতমুদ্ধিতে অজ্ঞান পতক্রবৎ আত্ম পতনার্থ উদ্যোগ পূর্পক মুদ্ধ করিয়া ভূরি ভূরি ক্রিয় প্রাম্বকুল সহ একেবারে নিপাত হইলেন। যেমন তেজরান্ধ মলোদ্ধান ছাতি ধারণ পুরংগর চর্মক্র্যাভ্রমত হইলে দর্শেদ্য মানিনী ঘাছ তামিপ্রাক্রম হয়, তন্ত্রপ ছর্যোধন বিহীনে হন্তিনাপুরী অস্ক্রারময়ী ও পতিহীন। কামিন্যাবৃতা হইল।

কলৈতে প্রচলিত সক্ষ রোক যুদ্ধ মহাভারতের লিখনাছসারে বোধ হল্প দাপরযুগের শেষকালেই যুখিছির স্বর্গপুবে গমন করেন, তৎপরে প্রীক্ষিত অবধি ক্ষেকপর্যাক্ত ২৮ জন পাঞ্বংশ্যের রাজত্বে কলির ১৮১২ বর্ষ গত হয়, তৎপরে মন্দবংশীয় বিশারদ খবধি ১৪ পুরুষে পঞ मा के क्षे छ शो उमवदर्भ देश विद्या अविध आदि जाने भी प्राप्त करें বর্ষীয় রাজত্ব শেষ হয় : কলির ২৬১৬ বর্ষে গোতন 👔 😘 ৬১খন কলেন, 🧓 ওন্নৰ্দ্ম এই যে "প্ৰান্ত ভালাহিছি উপনিতি শান্ত্ৰপ্ৰ টিডুইন প্ৰয়োগৰী वर्षायम् शत्रव्यक्तीम वनक्रीकार अथा थे तक्य विगरनं विशेष्ट्रका-उक नडामहिक्यु मार्थिक भेड ध्वेमिक" आफ्नी पूर्वाधक नेशतांनी छ, স্বভারতঃ হাণ্দ্রি সৃষ্টি এলণ হাইতেছে, তাইবাকরণ, অন্তর্ধান, পৃথিবা-দির উৎপাদক একসাতি ঈশ্বর অবশাই আছেন, তিনি এই পথতের ক্ষা কর্ত্ত্বা ও চতুর্দ্ধশা ভুবনের সৃত্ত্বনকর্ত্ত্বা এবং ১৪৯ বটা উ,হাতে অধিবাস বারে ও প্রজ্যাবস্থাতে জীবনিকায় আঁহু ডে অধিগ্রন করিবেই : প্রাক্তি भार । ज प्रमिश्न कि का " कि ने के कामी बर को ने जा का कि कि মক্সালর প্রকাশীক, ভীগায়র জান শিক কেন্সে নাই, সাক্ষিত্র প্রথমিনারীক লয়ে কাৰিবন্ধাপে আছেল। স্বাগতস্থাৰ্যেশ্বৰৰ সাধ্য হটতে এই িশ্ব कार्र्योत क्रम 'ग्राप तहमा हा, र्फ़्का क्षा हो स कार्र्या ५० दिव अक्ष व स्त ा, अञ्चान, कि अवर्ष्ट्रको का कन्न इंस्कृत घरेनित मा अर्थाद स्मन ঘটাদি জন্য পদার্থ, ১৩ত্রপ শিভিও কর্ত্ত জন্য ভিত্র জন্মদাদির নাহাতে লোল কৰি মূলত নাই, এই হেতুক ভংকল চুত্ৰ সৰত নিষ্ঠি श्हेण: भृत्यव^{्रभ}ेत प्रकृत व्यवस्थ तास्य श्लाभिष्ठ के बान ७५० वर्ष ভংগরে থ কার্টার শক্ষাদিতা ১৪ বর্গ দিলীতে সাম্যাক্ষ্য করেন 🔧 কলির সারস্তঃবাধ ৩০৪৪ বর্ষে যুপিটি,রর শক্ষের নিচুত্তি সইন্

ইতি সারাসভাগে প্রেশম যতে চতুর্থ পরিসেত

স্পর্যপরায়ণ গণিগণ সমীপে করপুটে নিবেদন এই যে স্থানি মহায়া, জান এজিয়ট, ডিগ্লপ্রাটি গোপুন সাহেব স্বদেশীয় প্রাটিনে তিহাসালো নিট্র পালকগণের মনে তেওঁ পালকগণের মনে তেওঁ পালি করেন তর্মসারে মহাজার ভালি এই বালসন পূর্লক এই সারাবলি প্রস্কার্থে প্রবৃত্ত হই । ক্রিটারি জিলাও স্থানিক করেন প্রকৃত করি । ক্রিটারি জিলাও স্থানিক করেন প্রত্যালি জিলাও স্থানিক করেন প্রত্যালি জিলাও স্থানিক করেন প্রত্যালি জিলাও প্রকৃত করেন সাহেব ও বারু গোবিক্রক বস্তু ও সমুজলাক গুপ্ত ও ক্রেটার এবং জন্যান্য মহাত্মাগণের স্থানিকালি ও বিশেষ অর্থ সাহাল্যে এই পুত্রক মুল্রিভার্থে চিল্রিকা মন্ত্রালান পাটান স্থান, পরিশাসে স্থানির প্রতিত্যান্য করেন মন্ত্রালান প্রত্যান্য করির প্রত্যান্য করির। প্রত্যান্য করির প্রসাদাৎ তৎকার্য সম্পন্ন হইল ক্রিটার শান্ত্রানিক করির। পাঠ করিলেই সমুহোপকত ইই।

निर्देशक अनुदीन् हेक वरमाशुक्षां मा नार विजयिता

X-24-25-30-2	377	401	
JAVA	्रश्रुष्ठा ।	निघले ।	्र्र १
मान्द्रामाणित इंडाए		जक्त हलना वंश क्र	টাধনে 🗘 📗
পুররাষ্ট্র পান্ড বিজ্যার জন্ম		যুকুট ও জীপোর পঞ্	হাকাছি 🛊
शिक्षित्राणिक क्या तथन .		বাৰ প্ৰাপ্ত হন	·), "
क्षाभिनीत अध्या		শ্রীক্ষের প্রতিজ্ঞ ভঙ্গ	3)
পুৰিতির হুডো ,ধনেক রাজ্য		অন্ত্রধং? ৭	j
ও রাজস্বর বজ বিশ্রন	{ a	ভীগা প্রেব সমাপে স্থ	igi x
ভুষ্যেখনের অপ্যান	b	পায় কংহন	
যুধি(৬০রব পার্ষিকীড়		- नम हिन्दतीय हु [*] कुछ	্রেয়ার 🕽
		শ্রশ্ব্যা ০)
্যুমিষ্ঠির নির বিরাটে উপনী	\$\$	জৌণাচন্ট্য দেন ি কৈ চ	ar
्रहर्गाधन मनीत्म राटः श्री	क्षा । ५७	वेजीव जिपमोद्यम् ऋश	ন্তে ব্র ক্ষেত্রন
ু সঞ্জ স্থীংপ ধৃতর েট্র ব	₹ ₹ ···· 58	७: ७२ग्राइ मह ्क देवा	मय पृक्ष 👀
সঞ্জা মহ পাওবাদির এপন	sa	गन ारपुरक् क लिम्बू। र	ાય જેવાના હ
बीक्रफद कूक गडाग्र नमन	ن	্যাসদের এক্ষেত্রক প্রবে	
्र श्रीहरू नमीर्य स्मापनी इस	ध् ष ३ ५:	- ४ कुर्य ब रमात्र केहन्द्रश्च वर	दिश्यक्त त्र
্ঞীক্ষা বিষ র পূচে ভোছন	हरदन २०	স.একী থায়া ভূরিপ্রবা	বধ নকে
। अक्रम नमील ध्राराधन ।	11:)	কৰ্মই ক্ৰীয় শ্লাহি	
্ওকক রাজা প্রদানে অসীব	4	अर्क्त्व के हैं, के कर प्रश	
्रैं इ न	•)	ভীগ পুজ্ৰ ঘটে, ফেচ বয	
कृष विश्व है नगरत अठा	গ্ <i>ত</i> হ'ল ২ ৮	হস্তী সহ যুক্তে ভীম পর	छ ः
্থিতির কুরুকেতে ব্রুষার		পঞ্ম দিনের যুক্তে ভগদ	
क्षांधन नित्र वे वे		(ज़ानां हार्य) देश	• • •
ें के पुष्ट, रहोत करवां भकः		কা, যুদ্ধিভিরকে পরায়	
कि विकास कर मिरित		মুধিষ্ঠির অজ্জুনের বিং	
वार्का है। श्री अन्तर्व		केर्न तथ अभना दर्य	
44.473	ે {` છક	শকুনি বধ, পাওবপক্ষে	
দশ বিশ্বনীকর ভীলের যুদ্ধ	প্ৰিক্ষাএন	ध्छत्रारकेत स्थम	
		जीम कर्जु क इत्यापित	
प्रशास के किया मुख्यात	To be	क्षं विवारित शर्माधानत	
त्याप्राम्	·	-জৌণীর শিরোমণি ছেদ	
BECOR FOR BY MEN	ری. ب	् अर्थादबार्व अर्थ	
क्रके विजयमध्यक्षित्व हुन्।	বিবয়ণ ৪০	क्षामञ्चल ।	•